किशोर ग्रन्थमाला ६०

श्रीमदिन्द्रजित्प्रणीतः

क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजः

भाषाटीकासहितः

अजय कुमार उत्तम

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
वाराणसी-२२१००१

कृष्णदास आयुर्वेद सीरीज
७७

रक्तचाप
(ब्लडप्रेशर)

लेखक
डा० इन्द्रदेव त्रिपाठी

सम्पादक
डा० यशवन्त चौहान

कृष्णदास अकादमी
वाराणसी

कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

किशोर ग्रन्थमाला
६०

+++

।।श्रीः।।

श्रीमदिन्द्रजित्प्रणीतः

क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजः

भाषाटीकासहितः

टीकाकारः सम्पादकश्च
अजय कुमार उत्तम

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक : चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : प्रथम, विक्रम संवत् २०६०, सन् २००३

ISBN : 81-218-0150-8

पोस्ट बाक्स नं - ११६८
के. ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
निकट गोलघर (मैदागिन)
वाराणसी - २२१००१ (भारत)
फोन : २३३५०२०

अपरञ्च प्राप्तिस्थानम्
चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो.बा.नं. १००८, वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन- आफिस : (०५४२) २३३३४५८
आवास : २३३४०३२ एवं २३३५०२०
E-mail : cssoffice@satyam.net.in.

विषयानुक्रमणिका

◆◆◆◆◆

सम्पादकीय

क्रियोड्डीशमहातन्त्रराज तन्त्रशास्त्र का अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में किसी प्रकार के सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं किया गया है। इसमें विशुद्ध रूप से तन्त्र के क्रियात्मक पक्ष का वर्णन हुआ है। मन्त्रमहोदधि, मन्त्रमहार्णव आदि की अपेक्षा यह ग्रन्थ अत्यन्त ही लघु है। फिर भी जिस प्रकार की क्रियाओं का वर्णन इस ग्रन्थ में हुआ है, वैसा मन्त्रमहोदधि तथा अन्य विशाल ग्रन्थों में भी इन क्रियाओं का वर्णन या विवरण प्राप्त नहीं होता है। शुक्रोपासित सञ्जीवनी विद्या का वर्णन बहुत ही कम ग्रन्थों में प्राप्त होता है; किन्तु इस ग्रन्थ में उसका स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। भूतिनी-साधन इस ग्रन्थ की अन्य विशेषता है। भूतिनी साधना का वर्णन फेत्कारिणी तन्त्र में भी प्राप्त होता है और उसकी विधियाँ इस ग्रन्थ की विधियों से पर्याप्त साम्य भी रखती है। इन सभी प्रकार की साधनाओं का मैंने अपने ग्रन्थ 'दिव्याङ्गनातन्त्र' में विस्तार से उल्लेख किया है। शिवपूजन एवं शाक्ताभिषेक का वर्णन भी इस ग्रन्थ में किया गया है। दैनिक जीवन में उपयोगी बहुत-सी अन्य क्रियाओं का वर्णन भी इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। इसमें सर्वरोगमुक्तिकवच का वर्णन भी प्राप्त होता है; जो अत्यत्र दुर्लभ है। इस कवच का प्रयोग करने पर अवश्य ही रोग का शमन होता है। इन सभी क्रियाओं के अनुष्ठान एवं ज्ञान की दृष्टिसे यह ग्रन्थ सर्वसाधारण के लिये भी अतीव उपयोगी है।

इस ग्रन्थ का अनुवाद सरल भाषा में किया गया है। कहीं पर भी किसी बात को अस्पष्ट नहीं रहने दिया गया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन चौखम्बा

प्रकाशक : चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : प्रथम, विक्रम संवत् २०६०, सन् २००३

ISBN : 81-218-0150-8

पोस्ट बाक्स नं - ११९८
के. ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
निकट गोलघर (मैदागिन)
वाराणसी - २२१००१ (भारत)
फोन : २३३५०२०

अपरञ्च प्राप्तिस्थानम्
चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो.बा.नं. १००८, वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन- आफिस : (०५४२) २३३३४५८
आवास : २३३४०३२ एवं २३३५०२०
E-mail : cssoffice@satyam.net.in.

विषयानुक्रमणिका

◆◆◆◆◆

पटलः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१२.	वशीकरणम्, वशीकरणमन्त्रः, राजवशीकरणम्, वशीकरणम् ।	३२ - ३५
१३.	विद्वेषणम्, महाभैरवमन्त्रः, उच्चाटनम्, स्तम्भनम्, शान्तिः, मारणम्, महाकृत्याप्रयोगः, बटुकभैरवप्रयोगः, प्रणवाद्यं ध्यानम्, ऋष्यादिन्यासः, देहन्यासः, कराङ्गन्यासः, वशीकरणम्, स्तम्भनम्, यन्त्रे पूजाक्रमः, अघोरेण सन्निरोधनम्, तत्पुरूषेण योनिमुद्राप्रदर्शनम्	३५ - ४७
१४.	षट्कर्मणां कवचं, शत्रुमर्दनम्, मोहनकवचम्	४७ - ५२
१५.	सर्वरक्षाकरं कवचम्	५३ - ५५
१६.	त्र्यम्बकमृत्युञ्जयमन्त्रः, मृतसञ्जीवनी विद्या, भूतिनीसाधनम्, आद्याविभूषिणीसाधनम्, पराकुण्डलिनीसाधनम्, सिन्दूरहारिणीसाधनम्, सिंहिनीसाधनम्, हंसिनीसाधनम्, नटीसाधनम्, चेटीसाधनम्, कामेश्वरीसाधनम्, कुमारीसाधनम्, सुन्दरीसाधनम्, यक्षसाधनम्, भीमवक्त्रध्यानम्, महावक्त्रध्यानम्, सिंहवक्त्रध्यानम्, हयाननध्यानम्, महावीरध्यानम्	५६ - ७३
१७.	मृत्युञ्जयविधानम्, शिवयन्त्रम्, मृत्युञ्जययन्त्रम्, यन्त्रपूजाविधानम्, प्राणप्रतिष्ठा	७३ - ८०
१८.	शिवयन्त्रम्, मृत्युञ्जयन्त्रम्, रोगशान्त्यर्थत्रयम्बक-मृतसञ्जीवनीविधानम्	८१ - ८२
१९.	मृत्युरक्षाकरं कवचम् ।	८२ - ८४
२०.	वन्ध्यायन्त्रम्, रक्षायन्त्रम्, पुत्रजननयन्त्रम्, वशीकरणम्, बन्धमुक्तियन्त्रम्, डाकिन्यादिभयविनाशनयन्त्रं, जीववत्सायन्त्रं, विजयानुपानम् ।	८५ - ९०

सम्पादकीय

क्रियोड्डीशमहातन्त्रराज तन्त्रशास्त्र का अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में किसी प्रकार के सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं किया गया है। इसमें विशुद्ध रूप से तन्त्र के क्रियात्मक पक्ष का वर्णन हुआ है। मन्त्रमहोदधि, मन्त्रमहार्णव आदि की अपेक्षा यह ग्रन्थ अत्यन्त ही लघु है। फिर भी जिस प्रकार की क्रियाओं का वर्णन इस ग्रन्थ में हुआ है, वैसा मन्त्रमहोदधि तथा अन्य विशाल ग्रन्थों में भी इन क्रियाओं का वर्णन या विवरण प्राप्त नहीं होता है। शुक्रोपासित सञ्जीवनी विद्या का वर्णन बहुत ही कम ग्रन्थों में प्राप्त होता है; किन्तु इस ग्रन्थ में उसका स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। भूतिनी-साधन इस ग्रन्थ की अन्य विशेषता है। भूतिनी साधना का वर्णन फेत्कारिणी तन्त्र में भी प्राप्त होता है और उसकी विधियाँ इस ग्रन्थ की विधियों से पर्याप्त साम्य भी रखती है। इन सभी प्रकार की साधनाओं का मैंने अपने ग्रन्थ 'दिव्याङ्गनातन्त्र' में विस्तार से उल्लेख किया है। शिवपूजन एवं शाक्ताभिषेक का वर्णन भी इस ग्रन्थ में किया गया है। दैनिक जीवन में उपयोगी बहुत-सी अन्य क्रियाओं का वर्णन भी इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। इसमें सर्वरोगमुक्तिकवच का वर्णन भी प्राप्त होता है; जो अत्यत्र दुर्लभ है। इस कवच का प्रयोग करने पर अवश्य ही रोग का शमन होता है। इन सभी क्रियाओं के अनुष्ठान एवं ज्ञान की दृष्टिसे यह ग्रन्थ सर्वसाधारण के लिये भी अतीव उपयोगी है।

इस ग्रन्थ का अनुवाद सरल भाषा में किया गया है। कहीं पर भी किसी बात को अस्पष्ट नहीं रहने दिया गया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन चौखम्बा

कृष्णदास अकादमी, वाराणसी से किया गया है। ग्रन्थ सुन्दर रूप में प्रकाशित हुआ है, इसके लिए प्रकाशक सर्वविध बधाई के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि तन्त्रप्रेमियों को यह ग्रन्थ पसन्द आएगा।

शुभाकांक्षी—

अजय कुमार उत्तम

।। श्रीः ।।

श्रीमदिन्द्रजित्प्रणीतः

क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजः

भाषाटीकासहितः

•••••

प्रथमः पटलः

आनन्दशिखरारूढं पार्वत्या सह शङ्करम् ।
पप्रच्छ गिरिजा कान्ता पुनर्नत्वा वृषध्वजम् ।।१।।

आनन्दशिखर पर श्रीपार्वतीसहित स्थित भगवान् श्री शिव को नमस्कार कर भगवती गिरिजा ने श्रीशंकर जी से पूछा ।।१।।

श्रीपार्वत्युवाच

भगवन्सर्वदेवेश! सर्वज्ञानमय! प्रभो! ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि क्रियोड्डीशं विभो वद ।।२।।

श्रीपार्वती जी ने कहा– हे भगवन्! हे सर्वदेवेश! हे सर्वज्ञानमय! हे प्रभो! इस समय मेरी क्रियोड्डीश तन्त्र को सुनने की महती इच्छा है; अतएव कृपा कर आप उसका वर्णन करें ।।२।।

श्रीश्वर उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि उड्डीशं तन्त्रमुत्तमम् ।
गोपितव्यं प्रयत्नेन मम स्वप्राणवल्लभे ।।३।।

श्री ईश्वर ने कहा– हे देवि! श्रवण करो। तन्त्रों में उत्तम उड्डीश (क्रियोड्डीश) तन्त्र को मैं कहता हूँ। हे प्राणवल्लभे! यह क्रियोड्डीश तन्त्र सभी प्रकार से प्रयत्नपूर्वक गोपनीय है ।।३।।

शान्त्यादिषट्कर्माणि तेषां लक्षणं च

स्वदेवतादिक्कालादि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ।
शीतांशुसलिलक्षोणीव्योमवायुहविर्भुजः ।।४।।

एतेषाम्बीजयोगेन ग्रथनादिक्रमेण कर्म साधयेत्-ठं वं लं हं यं वं ।

शान्ति आदि षट्कर्म तथा उनके लक्षण– स्वदेवता, दिशा, काल आदि को जानकर कर्मसाधना करनी चाहिए। चन्द्र, जल, पृथिवी, आकाश, वायु एवं अग्नि। इन छः बीजों के योग से ग्रथनादि क्रमपूर्वक साधना करनी चाहिए। ठं, वं, लं, हं, यं, वं— यह छः उपर्युक्त छहों देवताओं के बीजमन्त्र हैं ॥४॥

तत्तद्देवताः

रतिर्वाणी रमा ज्येष्ठा मातङ्गी कुलकामिनी ।
दुर्गा चैव भद्रकाली कर्मादौ ताः प्रपूजयेत् ।।५।।

वसन्ताद्यृतुकालनियमः।

इति क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे प्रथमः पटलः।।१।।

रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, मातंगी, कुलकामिनी, दुर्गा और भद्रकाली— इन देवियों का प्रारम्भ में पूजन करना चाहिये। वसन्त आदि ऋतु कालनियम में ग्रहण किये जाते हैं ॥५॥

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
प्रथम पटल पूर्ण हुआ ।।१।।

अथ द्वितीयः पटलः

सर्वरोगमुक्तिकवचम्

श्रीदेव्युवाच

देवदेव! महादेव! सुरासुरनमस्कृत ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि रोगमुक्तः कथं प्रभो!।।१।।

श्रीदेवी ने कहा– हे देवदेव! हे महादेव! हे सुर-असुर से नमस्कृत! हे प्रभो! रोगमुक्ति किस प्रकार से होती है— इसे मैं इस समय सुनना चाहता हूँ; अतः इसे आप कहिये ॥१॥

नास्ति त्राता च जगतां त्वां विना परमेश्वर ।
ज्वरादिवारणं शीघ्र कृपया परया वद ।।२।।

हे परमेश्वर! आपके अतिरिक्त संसार का रक्षक अन्य कोई नहीं है। अतएव हे प्रभो! कृपा करके ज्वरादि रोगों के निवारण का उपाय कहिये ॥२॥

ईश्वर उवाच

कथयामि तव स्नेहात्कवचं वारणं महत्।।३।।

ईश्वर ने कहा– हे देवि! तुम्हारे प्रति स्नेहवश मैं ज्वरादि रोगनाशक कवच का वर्णन करता हूँ ॥३॥

ॐ नमो भगवति वज्रशृंखले हनतु भक्षतु खादतु अहो रक्तं पिब-पिब नरवक्षास्थिरक्तपटे भस्माङ्गिभस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रप्राकारानिचिते पूर्वां दिशं मुञ्चतु, दक्षिणां दिशं मुञ्चतु, पश्चिमां दिशं मुञ्चतु, उत्तरां दिशं मुञ्चतु, नागार्थं धनग्रहपतिं बन्धतु, नागपीठं बन्धतु, यक्षराक्षसपिशाचान् बन्धतु, प्रेतभूतगन्धर्वादयो ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्षतु, ऊर्ध्वं रक्षतु, अधो रक्षतु, श्येनिकां मुञ्चतु, ज्वल महाबले एह्येहि तु मोटि-मोटि सटावलि वज्राग्नि वज्रप्राकारे ऐं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् ह्रं हं फुं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यः ह्रीं अशेषेभ्यो मा रक्षतु ।।

इतीदं कवचं देवि सुरासुरसुदुर्लभम् ।
ग्रहज्वरादिभूतेषु सर्वकर्मसु योजयेत् ।।४।।

हे देवि! सुर एवं असुर के लिये भी दुर्लभ इस कवच के पाठमात्र से ग्रह-ज्वरादि सब दूर हो जाते हैं, अतः सभी कर्मों में इसका प्रयोग करना चाहिए ॥४॥

न देयं यस्य कस्यापि कवचं मन्मुखाच्च्युतम् ।
तद्दत्ते सिद्धिहानिः स्याद्योगिनीनां भवेत्पशुः ।।५।।

मेरे मुख से कहे हुये इस कवच को जिस किसी को नहीं बताना चाहिये; क्योंकि किसी को भी कह देने से सिद्धि की हानि होती है तथा देने वाला योगिनियों का पशु बनता है॥५॥

दद्याच्छान्ताय वीराय सत्कुलीनाय योगिने ।
सदाचाररतो यश्च निर्जिताशेष एव हि ।।६।।

यह कवच शान्त प्रकृति, वीर, सत्कुलीन, योगी, सदाचारपरायण एवं जितेन्द्रिय को ही देना चाहिये ॥६॥

ऐकाहिको द्व्याहिकश्च त्र्याहिकश्चातुराहिकः ।
सर्वे ज्वरा विनश्यन्ति कवचं धारयेद्यदि ।।७।।

इस कवच को धारण करने से प्रतिदिन आने वाला ज्वर, प्रत्येक दूसरे दिन आने वाला ज्वर, प्रत्येक तीसरे दिन आने वाला ज्वर, प्रत्येक चौथे दिन आने वाला ज्वर एवं सभी प्रकार के ज्वर सहसा नष्ट हो जाते हैं।।७।।

स्त्रिया वामकरे धार्यं पुंसा च दक्षिणे करे ।
अवश्यमेव सिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं वरानने ।।८।।

इति क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे द्वितीयः पटलः।।२।।

इस कवच को स्त्रियाँ बाँयी भुजा में तथा पुरुष दाहिनी भुजा में धारण करे। हे वरानने! इस कवच को धारण करने से अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है।।८।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
द्वितीय पटल पूर्ण हुआ ।।२।।

अथ तृतीयः पटलः

सर्वरोगविनाशाय पार्थिवशिवलिङ्गपूजनप्रकरणम्

अतः परं महेशानि पूजनं पार्थिवं शिवम् ।
विशेषतः सर्वरोगे त्र्यम्बकस्य प्रपूजनम् ।।१।।

हे महेशानि! अब पार्थिव शिवपूजन की विधि कहता हूँ। विशेष रूप से सभी रोगों में त्र्यम्बक (भगवान् शिव) का पूजन करना चाहिये।।१।।

यत्कृत्वा सर्वतः शान्तिर्भवेद्देवि न संशयः ।
ततः प्रयोगं सर्वेषां वश्यादीनां च कारयेत् ।।२।।

हे देवि! पार्थिव शिवपूजन करने से सभी रोगों की शान्ति होती है, इसमें संशय नहीं है। इस प्रयोग में समस्त वश्यादिकों का प्रयोग करना चाहिए।।२।।

विधानं तत्र वक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।।३।।

हे कमलानने! अब मैं पार्थिवपूजन का विधान कहता हूँ; श्रवण करो।।३।।

शिवपूजाविधानम्

मृदा लिङ्गं विनिर्माय शततोलकमानया ।
तत्रानीय मृतं मुण्डं स्थापयित्वा ममार्चनम् ।।४।।

सौ तोले का मिट्टी का शिवलिङ्ग निर्मित कर एवं मृत पुरुष के कपाल में स्थापना कर मेरी पूजा करनी चाहिये।।४।।

पूर्वमग्निं च संस्थाप्य यज्ञस्थानं चतुर्विधम् ।
उत्तरे दक्षिणे वापि पूर्वे च पश्चिमे तथा ।।५।।

पूर्व में अग्नि की स्थापना कर यज्ञस्थानीय चारो दिशाओं में हवन करे। पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण दिशा में हवन करे।।५।।

सर्वकामेषु होतव्यमन्यथा निष्फलं भवेत् ।

घटं संस्थाप्य मम पूजां यथाशक्ति कुर्यात्। ततो वह्निस्थापनम्। मुण्डस्थापनम्। नरमहिषमार्जारमुण्डत्रयम्। अथवा नृमुण्डत्रयम्। एकमुण्डं वा तदुपरि मां सम्पूज्य गन्धोदकैः स्नापयित्वा वितस्तिमितधरातले पोथयित्वा तस्योपरि वेदीं कल्पयेत्। तत्रैव भूतनाथादीन् चतुर्दिक्षु समर्चयेत्। पूर्वे ॐ भूतनाथाय नमः इति पाद्यादिभिः पूजयित्वा बलिं दद्यात्। एवं दक्षिणे श्मशानाधिपाय। पश्चिमे कालभैरवाय। उत्तरे च ईशानाय। वेदीमध्ये 'ह्रौं' प्रेतबीजं विलिख्य तत्रैव भारतीं पूजयेत्।

सभी प्रकार की कामनाओं में पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण— इन चारो दिशाओं में हवन करना चाहिये। इन दिशाओं में हवन न करने से समस्त कर्म विफल हो जाते हैं। सर्वप्रथम घट-स्थापन कर यथाशक्ति मेरा पूजन करने के पश्चात् अग्निपूजन करे। तत्पश्चात् मुण्डस्थापन करे। नर, महिष, मार्जार इन तीनों के मुण्ड को स्थापित करे अथवा इनमें से एक के भी न मिलने पर नरमुण्ड को स्थापित करे। उस मुण्ड के ऊपर पार्थिव शिवजी का पूजन कर गन्धोदक आदि से उन्हें स्नान कराये। वितस्ति (बित्ता) परिमाण में भूमि को खोदकर उसमें उस पार्थिव प्रतिमा को गाड़ कर वहीं पर वेदी का निर्माण करे तथा भूतनाथादिकों का चारो दिशाओं में विधिवत् पूजन करे। **ॐ भूतनाथाय नमः** इस मन्त्र से पाद्यादि प्रदान कर पूर्व दिशा में पूजन करे। **ॐ नमः श्मशानाधिपाय** इस नाममन्त्र से पूर्व विधानपूर्वक दक्षिण दिशा में पूजन कर बलि प्रदान करे। **ईशानाय नमः** इस मन्त्र से उत्तर दिशा में बलि प्रदान करे तथा **कालभैरवाय नमः** इस मन्त्र से पश्चिम

दिशा में बलि प्रदान करे। वेदी के मध्य में **हौं** इस प्रेत बीज को लिखकर वहीं पर सरस्वती का पूजन करे।

पुष्पाञ्जलिः

रे वीर शव देवेश मुण्डरूप जगत्पते ।
दयां कुरु महाभाग सिद्धिदो भव मज्जपे ।।६।।

इति पुष्पाञ्जलित्रयंभव मदत्त्वा आग्ने य्यां ह्रीं नमः नैर्ऋत्यां ह्रीं चण्डिकायै नमः। वायव्यां ह्रीं भद्रकाल्यै नमः। ईशाने ह्रीं दयामय्यै नमः।

श्मशानवासिनो ये ये देवादेवाश्च भैरवाः ।
दयां कुर्वन्तु ते सर्वे सिद्धिदाश्च भवन्तु मे ।।७।।
अनेन प्रणवाद्येन पुष्पाञ्जलित्रयं क्षिपेत् ।
ततः स्थानं तु संस्पृश्य वश्यो भव वदेदिति ।।८।।

रे वीर शव! देवेश! मुण्डरूप! जगत्पते! महाभाग! दया करो एवं मेरे इस जपविधान में सिद्धि प्रदान करो— इस प्रकार कह कर तीन पुष्पांजलि प्रदान करे तथा इन बीजमन्त्रों का उच्चारण करे। **आग्नेय्यां ह्रीं नमः। नैर्ऋत्यां ह्रीं चण्डिकायै नमः। वायव्यां ह्रीं भद्रकाल्यै नमः। ईशाने ह्रीं दयामय्यै नमः।** जो-जो श्मशानवासी देव अथवा अदेव भैरव हैं वे सब मेरे ऊपर कृपा करके मुझे सिद्धि प्रदान करें। इस प्रकार प्रणवादि से तीन पुष्पांजलि प्रदान करे तथा स्थान को स्पर्श कर कहे कि **वश्यो भव** अर्थात् मेरे वश में हो जाओ।।६-८।।

ततः स्नानं तत्र लिङ्गं संस्थाप्य परमेश्वरि ।
स्नानं तु पञ्चगव्येन दधिदुग्धादिकं तथा ।।९।।
अथवा परमेशानि शर्करामधुना युतम् ।
पञ्चामृतैस्ततः स्नानं कारयेत्परमेश्वरि ।।१०।।
ईशानाय प्रथमं स्नानं वामदेवाय द्वितीयकम् ।
तृतीये सद्योजाताय चतुर्थे च पिनाकधृक् ।।११।।
पञ्चमं देवदेवेशं पूजयेत्पार्थिवं शिवम् ।
अधुना मूलमन्त्रेण शर्करया गायत्रिकंपरम् ।
ततो जीवन्यासं कृत्वा न्यासादिकं ततः परम् ।।१२।।

हे परमेश्वरि! इसके पश्चात् लिङ्ग को स्थापित कर दही, दुग्ध आदि पञ्चगव्य

से स्नान कराये। हे परमेशानि! अथवा मधु (शहद) मिश्रित शर्करा से ही स्नान कराये। हे परमेश्वरि! तत्पश्चात् पञ्चामृत से स्नान कराये। 'ईशानाय' इस मन्त्र से प्रथम स्नान, वामदेवाय' इस मन्त्र से दूसरा स्नान, सद्योजाताय' इस मन्त्र से तीसरा स्नान, 'पिनाकधृक्' इस मन्त्र से चौथा स्नान और 'देवदेवेश' इस मन्त्र से पाँचवाँ स्नान कराये। पार्थिव श्रीशिव जी का पूजन करे। तत्पश्चात् मूलमन्त्र अथवा गायत्री मन्त्र द्वारा शर्करा से स्नान कराये। तदुपरान्त जीवन्यास-करन्यासादि करे ॥९-१२॥

ध्यानं शृणु महादेव! स्नेहेन कथितं मया ।।१३।।
हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् ।
अङ्के न्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ।।१४।।
पुनर्ध्यात्वा तु सम्पूज्य अङ्गन्यासं ततः परम् ।

हे देवि! अब मैं तुम्हारे स्नेहवश ध्यान को कहता हूँ, सुनो। दोनों हाथों से दो अमृत के कलशों से अमृतरस को अपने सिर पर छिड़कते हुये एवं दोनों हाथों में अमृतकलश को धारण किये हुये, मृगाक्षवलय को धारण हुये दोनों हस्तकमल के मणिबन्ध में अमृतकलश में रखा हैं, जिनके मुकुट में नवीन चन्द्र शोभित है, ऐसे कैलाशपति भगवान् शिवजी त्रिनेत्रधारी का हम भजन करते हैं। इसके पश्चात् ध्यान-पूजन कर अंगन्यास करे॥१३-१४॥

अङ्गन्यासः

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं हृदयाय नमः। त्रयम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्द्धनं शिरसे स्वाहा। भर्गोदेवस्य धीमहि शिखायै वषट्। उर्वारुकमिव बन्धानात् कवचाय हुम्। धियो यो नः प्रयोदयात् नेत्रत्रयाय वौषट्। मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् अस्त्राय फट्।। एवं करन्यासः।।

इसी प्रकार से करन्यास भी करे॥

ततः षोडशोपचारैः पूजा

जपापराजिता कृष्णबिल्वपत्रं च पिप्पलम् ।।१५।।
करवीरमपामार्गं प्रत्येकं जुहुयाच्छिवे ।
अष्टाधिकशतेनैव पूजयेत् ।।१६।।

हे शिवे! जपा, अपराजिता, कृष्णबिल्वपत्र पीपल, करवीर (कनेर) और अपामार्ग— प्रत्येक से १०८ आहुतियाँ देकर पूजन करे ॥१५-१६॥

अतः परं महेशानि! मधु देयं विशेषतः।
गुडार्द्रकरसेनैव सुरास्तु ब्राह्मणस्य तु ॥१७॥
नारिकेलोदकं चैव कांस्ये तु क्षत्रियस्य च।
शूद्रस्य ताम्रपात्रे तु मधुयुक्तं निवेदयेत् ॥१८॥
अथवा सार्षपं तैलमाज्येन होमयेद्द्विजः।
जुहुयात्सर्वकर्माणि कथितानि महेश्वरि! ॥१९॥

हे महेशानि! इसके पश्चात् विशेष रूप से मधु प्रदान करे। गुड़ एवं अदरख के रस में मिश्रित करके सुरा ब्राह्मण को, नारियल का जल कांस्यपात्र में क्षत्रिय को, कांस्यपात्र में मधु वैश्य को तथा शूद्र को ताम्रपत्र में मधु प्रदान करे। अथवा ब्राह्मण सरसों के तेल एवं घृत से समस्त हवनकार्यों को सम्पन्न करे। हे महेश्वरि! यह परम गोपनीय विषय तुम्हारे प्रेमवश ही मैंने कहा है ॥१७-१९॥

मन्त्रः

मन्त्रं शृणु महादेवि! कथितं तव श्रद्धया ॥२०॥

मन्त्र— हे महादेवि! मन्त्र का श्रवण करो। मैं तुम्हारी श्रद्धा के कारण ही इसे कहता हूँ ॥२०॥

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं भर्गो देवस्य धीमहि उर्वारुकमिव बन्धनाद् धियो यो नः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

स्थानभेदकम्

शून्यागारे नदीतीरे पर्वते वा चतुष्पथे।
बिल्वमूले श्मशाने वा निर्जने च प्रपूजयेत् ॥२१॥
अणिमाद्यष्टशक्तिं च वन्ध्या वा
मृतवत्सा वा बद्धो वा राजशत्रुके।
सर्वशान्तिकरं देवि पूजनं त्र्यंबके शिवे।
अत एव कथितं मे च सत्यं सत्यं वरानने ॥२२॥

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे तृतीयः पटलः ॥३॥

जनशून्यस्थान, नदीतट, पर्वत, चौराहा, बेलवृक्ष की जड़, श्मशान अथवा निर्जन स्थान में अणिमादि आठ शक्तियों की पूजा करे। वंध्या, मृतवत्सा का इस पूजन से दोषनिवारण होता है तथा राजभय व शत्रुभय दूर होता है। हे शिवे! हे देवि! शिव का यह पूजन समस्त प्रकार की शान्ति को देने वाला है। हे वरानने! मैंने यह निश्चय ही सत्य कहा है॥२१-२२॥

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
तृतीय पटल पूर्ण हुआ ।।३।।

अथ चतुर्थः पटलः

सर्वव्याधिमोचनम्

श्रृणु वक्ष्यामि चार्वङ्गि सर्वव्याधिविमोचनम् ।
एकादश पूजयेद्रुद्रान्दशांशं गुग्गुलैर्घृतैः ।
चत्वारः कुम्भाः संस्थाप्याः पञ्चपल्लवसंयुताः ।।१।।

उक्तमन्त्रेण रौप्याष्टदलपद्ममध्ये लिङ्गं पूजयेत् ।

प्रतिवासरं सप्तलिङ्गं पूजयेत् लक्षं जप्त्वा ।
पलाशसमिधा होमम् उक्तमन्त्रेण तत्क्रमात् ।।२।।

अत्र पीठे यजमानमभिषेचयेत्। दक्षिणां दद्याद्गोभूहेमतिलाञ्जलीन् ब्राह्मणेभ्यः किञ्चिद्देया आचार्याय दद्यात् ।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे चतुर्थः पटलः।।४।।

हे चार्वङ्गि! (श्रेष्ठ अङ्गों वाली) अब समस्त व्याधियों से मुक्ति का उपाय कहता हूँ। एकादश रुद्रों की पूजा दशांश गुग्गुल एवं घृत से करनी चाहिये। प्रथमतः पांच पल्लवयुक्त पांच कुम्भ स्थापित करे, फिर तीसरे पटल में कथित मन्त्र से चांदी के आठ दल वाले पद्म में लिङ्ग को स्थापित कर पूजन करे। एक लाख जप करके पलाश की समिधा द्वारा कहे गये मन्त्र से क्रमानुसार होम करे। तत्पश्चात् यजमान का अभिषेक करे। गाय, पृथिवी, स्वर्ण (हेम) एवं तिलांजलि दक्षिणा में दे। इस दक्षिणा में से सामान्य ब्राह्मणों को थोड़ा देकर शेष आचार्य को

समर्पित कर दें॥१-२॥

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
चतुर्थ पटल पूर्ण हुआ ।।४।।

अथ पञ्चमः पटलः

क्रियोपदेशः

वशीकरणादिकर्माणि वारतिथिनक्षत्रमण्डलविशेषे कर्त्तव्यानि। स्फाटिकी माला सर्वसिद्धिदा। मणिसंख्या–

पञ्चविंशतिभिर्मोक्षं पुष्टौ तु सप्तविंशतिः ।
त्रिंशद्भिर्धनसिद्धिस्तु पञ्चाशन्मन्त्रसिद्धये ।।१।।

अष्टोत्तरशतैः सर्वसिद्धिः।

क्रियोपदेश का वर्णन– वशीकरण आदि षट्कर्म वार, तिथि, नक्षत्र एवं मण्डलविशेष में ही करना चाहिए। स्फटिक की माला से जप करने से सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। पच्चीस दाने की माला से जप करने पर मोक्ष प्राप्त होता है। पौष्टिक कर्म में सत्ताइस दानों की माला प्रयुक्त करनी चाहिए तथा धनसिद्धि के लिए तीस दानों की माला प्रयुक्त करनी चाहिए। मन्त्रसिद्धि हेतु ५० दानों की माला आवश्यक है। सभी प्रकार की सिद्धियों के लिए सामान्यत: १०८ दानों की माला प्रयुक्त करनी चाहिए॥१॥

शिवमन्त्रसमायुक्तमौषधं सफलम्भवेत् ।

मूलिकोत्पाटनच्छेदनविधिः पूर्वतन्त्रे कथितः। वन्ध्यादिदोषनिवारणम्। स्त्रीणां बाधकमोचनम्। रक्तमाद्र्यादि चतुर्विधबाधकदोषनिवारणम्। तत्र यन्त्रम्–

त्रिकोणमथ षट्कोणं नवकोणं मण्डलाकृतिः ।
यन्त्राण्येतानि संलिख्य वाहयेन्मन्त्रपूर्वकम् ।।२।।

तन्त्रपूजनात् औषधादि भक्षणाद्दोषशान्तिः।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे पञ्चमः पटलः।।५।।

शिवमन्त्र का जप करते हुये यदि औषधि- उत्पादन की जाय तो सफल होती है। जड़ के उखाड़ने की विधि कामरत्न आदि अन्य तन्त्रों में कही गयी है। वंध्यादि दोष-निवारण के लिये तथा स्त्रियों के बाधानाश के लिये इस मूलिका का प्रयोग करना चाहिए। इससे रक्तमाद्र्यादि चार प्रकार के दोषों का यथार्थ निवारण होता है। यन्त्र को मण्डलाकार, त्रिकोण, षट्कोण एवं नवकोण मन्त्रसहित लिखकर पूजन करने एवं औषधि-भक्षण से समस्त प्रकार के रोग शान्त हो जाते हैं।।२।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
पंचम पटल पूर्ण हुआ ।।५।।

+++

अथ षष्ठः पटलः

मृतवत्सादिशान्तिकवचम्

मृतवत्सामृतगर्भापुत्रहीनानां शान्तिः कवचधारणात् । कवचं प्रथमम्। ॐ नमो नरसिंहाय नमो महाविपन्नाशाय दिव्यरूपाय नरसिंहाय नमः। स्थौं सौं क्षौं रामाय नमः। रां रामाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं फणं हुं हां फेत्कारशब्देन सर्वबालकस्य सर्वभयोपद्रवनाशाय इमां विद्यां पठति धारयति यदि तदा नरसिंहो रक्षति सदा हुँ फट् स्वाहा।

मृतवत्सादि शान्तिकवच– जिन स्त्रियों के गर्भ में ही पुत्रादि मर जाते हैं, उन्हें मृतवत्सा कहते हैं। इन स्त्रियों को उपरोक्त '**ॐ नमो...........फट् स्वाहा**' तक के कवच को धारण करने से लाभ होता है।

प्रकारान्तरेण द्वितीयकवचम्

ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपोर्वक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलनाशाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हर हर विष विष पच पच मथ मथ हन हन फट् हुँ फट् ठः ठः एहि रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा।

ॐ क्षौं नमो भगवते नरसिंहाय ज्वालामालिने दीप्तदंष्ट्राय अग्निनेत्राय सर्वरक्षोघ्नाय सर्वभूतविनाशाय सर्वज्वरविनाशाय दह दह पच पच रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा।

गोरोचनया भूर्जे विलिख्य स्वर्णथा गुटिका स्त्रिया वामकरे पुरुषेण दक्षिणे

करे धार्या कदापि न दोषः।

**इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे षष्ठः पटलः।।६।।**

दूसरा कवच है– ॐ नमो..........हुँ फट् स्वाहा। इस कवच क भोजपत्र के ऊपर लिखकर सोने के ताबीज में बन्द कर स्त्रियों को बायीं एवं पुरु को दाहिनीं भुजा में धारण करना चाहिए। किसी भी स्थिति में यह दूषित नहीं होता

**क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
षष्ठ पटल पूर्ण हुआ ।।६।।**

+++

अथ सप्तमः पटलः

श्रीदेव्युवाच

**श्रुतं कवचचरितमपूर्वं देववाञ्छितम् ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि यन्त्रं कथय मे प्रभो ।।१।।**

श्री देवी जी ने कहा– हे देव! वांछित फल को प्रदान करने वाले अपू कवच को मैंने सुना। हे प्रभु! अब मेरी इच्छा यन्त्र को सुनने की है। कृपया आ उसे कहिये ।।१।।

यन्त्रम्

ईश्वर उवाच

**मात्राहीनं रकारं तु पार्श्वे शीर्षं तथा पुनः ।
मायात्मकं तेन भवेत् षट्कोणं यन्त्रमुत्तमम् ।।२।।**

मायाबीज ह्रीं गर्भम् ।

षट्कोण यन्त्र को लिखकर ह्रीं बीज को उसके मध्य में लिखना चाहिये शेष विधि सुगम है।।२।।

स्त्रिया वामहस्ते धारणाद्वन्ध्या पुत्रवती भवेत्। बालाया बालकस्यापि कण सन्धार्य सुखी भवेत्। भूर्जे गोरोचनया विलिख्य स्वर्णस्थं धारयेत्। षोडशीचक्रस गोरोचनया भूर्जे विलिख्य धारणात् स्त्रीणां सौभाग्यवृद्धिः। चतुष्कोणचक्रं संलिख ह्रीं गर्भबाही धारणात् नारी जीवत्पुत्रिका अथवा चतुष्कोणे प्रणवादि क्षं पुन

मीनचक्रं संलिख्य धारणात् वन्ध्या जीवत्पुत्रिका भवति।

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर यदि स्त्री अपने बायें हाथ में बांधे तो वन्ध्या स्त्री के भी पुत्र उत्पन्न होते हैं। गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर स्वर्ण के ताबीज में बन्द कर इसे बालिका अथवा बालक के कण्ठ में यदि पहनाया जाय तो उसे अत्यन्त सुख होता है। षोड़शी चक्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर धारण करने से स्त्रियों को सौभाग्य की प्राप्ति होती है। चतुष्कोण चक्र के मध्य में 'ह्रीं' बीज लिखकर भुजा में धारण करने से नारी जीवित्पुत्रिका होती है। मीन चक्र के चारो कोणों में प्रणवादि 'क्षं' बीज लिखकर धारण करने से वन्ध्या स्त्री भी सन्तानसुख को प्राप्त करती है।

अतः परम् अष्टदलकर्णिकामध्ये माया। ततः परं दलमध्ये द्वे द्वे मायाबीजे पुनः पुनः। इतः परं नवदलं मायाबीजं विलिखया बाहौ धारणात् मृतवत्सा जीवद्वत्सा।। गोरोचनाकुङ्कुमेन संलिख्य रक्तसूत्रेण संवेष्ट्य गुटिकां पञ्चामृतैः पञ्चगव्यैः स्नापयित्वा। प्रणवेनतु सम्मन्त्र्य स्नापयेद्गन्धद्रव्यकैः। प्राणान् प्रतिष्ठाप्य देवतारूपां गुटिकां सम्पूज्य धारयेत्।।

तदुपरान्त अष्टदल कर्णिकामध्य में मायाबीज लिखे तथा दल के मध्य में दो-दो मायाबीज लिखे एवं नवदल में मायाबीज लिखकर एवं लाल धागा लपेटकर गुटिका को पञ्चामृत तथा पञ्चगव्य से स्नान कराकर प्रणव से अभिमन्त्रित कर पुनः गन्ध द्रव्यों से स्नान कराये एवं प्राणप्रतिष्ठा करके देवतारूप गुटिका को पूजन कर धारण करे।

शिवस्नानम्

घृतेन मधुना वापि स्नापयेद्वश्यकर्मणि ।
दुग्धादिना तथा देवि शान्तौ मृत्युञ्जयेऽपि च ।।३।।
आकर्षणे तु मधुना भस्मना क्रूरकर्मणि ।

शिवस्नान– वश्य कर्म में घृत एवं मृधु से शिव को स्नान कराये। शान्ति कर्म में तथा मृत्युञ्जय जपकर्म में दुग्धादि से स्नान कराये, आकर्षण कर्म में मधु से स्नान कराये और क्रूर कर्म में भस्म से स्नान कराये।।३।।

अस्य परिमाणम्

शततोलकमानेन द्रव्यमेतत्प्रकीर्तितम् ।।४।।

तन्मानं संविदाचूर्णं नैवेद्यं च सुरेश्वरि ।
बिल्वपत्रं तथा पुष्पं दद्यादष्टोत्तरं शतम् ।।५।।
शान्तिकादौ द्रोणपुष्पं बर्बरा चाभिचारके ।
स्तम्भने मोहने चैव धत्तूरं कनकाह्वयम् ।।६।।
विद्वेषोच्चाटने देवि विजयाप्यपराजिता ।
चतुर्दश्यां समारभ्य यावदन्या चतुर्दशी ।।७।।
एकैकं क्रमशो लिङ्गं पूजयेद्भक्तिभावतः ।
अष्टाधिकसहस्रं तु जपं कुर्याद्दिने दिने ।।८।।
सप्ताहे सप्त लिङ्गानि पञ्चाहे वाथ पञ्चकम् ।
चण्डोग्रेण विधानेन जपपूजादिकं स्मृतम् ।।९।।
वटुकेन तु मन्त्रेण मञ्जुघोषेण वा प्रिये ।
त्रैयम्बकेण देवेशि! शान्तिके जपपूजनम् ।।१०।।
तत्तत्कल्पविधानेन जपं पूजां समाचरेत् ।
जातिध्वंसे कुलोच्छेदे ज्वरादौ रोगसङ्कटे ।।११।।
महाभये समुत्पन्ने सर्वाभिचारसम्भवे ।
यत्नेन पूजयेद्देवि लिङ्गमष्टोत्तरं शतम् ।।१२।।
अतिरुद्रयोगादौ रुद्राध्यायेन वा पुनः ।
नीलकण्ठेन वा देवि स्तवेन तोषयेच्छिवम् ।।१३।।

स्वानद्रव्यतोलपरिमाण– सौ तोले के परिमाण का स्नानद्रव्य एवं इतना ही नैवेद्य होना चाहिये तथा उतना ही संविदा-(भांग)-चूर्ण होना चाहिये। सुरेश्वरि! बिल्वपत्र पुष्ट एवं १०८ होने चाहिये। शान्ति आदि कर्म में द्रोणपुष्प अभिचार प्रयोग में बर्बरापुष्प तथा स्तम्भन एवं मोहन कर्म में धतूरे के पुष्प हो चाहिये। विद्वेषण एवं उच्चाटन में विजया एवं अपराजिता का पुष्प प्रयोग कर चाहिये। प्रयोग की प्रक्रिया एक चतुर्दशी से प्रारम्भ करके दूसरी चतुर्दशी पर्य करनी चाहिए। एक-एक लिङ्ग का भक्तिभावपूर्वक पूजन करना चाहिए। प्रतिदि १००८ मन्त्र का जप एवं सप्ताह में सात तथा पञ्चाह में पांच लिंगों का पूज करना चाहिए। चण्डोग्रविधानपूर्वक जप व पूजन करना चाहिये। हे प्रिये! शुद्ध ए स्पष्ट उच्चारण किये हुये बटुकमन्त्र, मञ्जुघोषमन्त्र अथवा त्र्यम्बकमन्त्र से

शान्तिकर्म में जप व पूजन करना चाहिए। तत्तत् कल्प के अनुसार पूजा व जप करना चाहिये। जातिध्वंस, कुलोच्छेद, महाज्वर, रोग, संकट, महाभय की प्राप्ति और सभी प्रकार के अभिचार आदि प्रयोगों में यत्नपूर्वक १०८ लिङ्गों का पूजन करना चाहिए। हे देवि! अतिरुद्रयोग, रुद्राध्याय अथवा नीलकण्ठ- स्तवन द्वारा भगवान् शिव को प्रसन्न करना चाहिए।।५-१३।।

स्तवः

सर्वज्ञज्ञानविज्ञानप्रदानैकमहात्मने ।
नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहिते रत ।।१४।।
अनन्तकान्तिसम्पन्न अनन्तासनसंस्थित ।
अनन्तकान्तिसम्भोग परमेश नमोऽस्तु ते ।।१५।।
परापरपरातीत उत्पत्तिस्थितिकारक ।
सर्वार्थसाधनोपाय विश्वेश्वर नमोऽस्तु ते ।।१६।।
सर्वार्थनिर्मलाभोग सर्वव्याधिविनाशन ।
योगियोगी महायोगी योगीश्वर नमोऽस्तु ते ।।१७।।
कृत्वा लिङ्गप्रतिष्ठाञ्च ध्यात्वा देवं सदाशिवम् ।
पूजयित्वा विधानेन स्तवपाठमुदीरयेत् ।।१८।।
लिङ्गस्तवं महापुण्यं यः श्रृणोति सदा नरः ।
नोत्पद्यते च संसारे स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् ।।१९।।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रृणुयाच्च सुसंस्तवम् ।
पापकर्ता कलेर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ।।२०।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे सप्तमः पटलः।।७।।

हे सर्वज्ञ! हे सर्वदेवदेवेश! हे सर्वभूतहिते रत! ज्ञान-विज्ञान प्रदान करने वाले! आपको नमस्कार है। हे अनन्तकान्तिसम्पन्न! हे अनन्तासनसंस्थित! हे परातीत! हे उत्पत्तिस्थितिकारक! हे सर्वार्थ साधनों के उपाय! हे विश्वेश्वर! आपको नमस्कार है। हे सर्वार्थ निर्मला-भोग! हे समस्त व्याधियों के विनाशक! योगियों के भी योगी हे महायोगी! हे योगीश्वर! आपको नमस्कार है। इस प्रकार लिङ्ग की प्रतिष्ठा एवं सदाशिव का ध्यान कर विधिविधान से पूजन कर स्तव का पाठ करना चाहिये। यह लिङ्गस्तव महापुण्य-प्रदायक है। जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर इस

स्तव का पाठ करते हैं, उनको इस संसार के दु:ख नहीं भोगने पड़ते और वे शाश्वत स्थान को प्राप्त होते हैं। इसलिये सभी प्रकार से प्रयत्न करके इस स्तव का पाठ व श्रवण करना चाहिए। इसके पाठ-मात्र से ही महापापी व्यक्ति भी सम्पूर्ण दु:खों से मुक्त होकर परम पद को प्राप्त कर लेता है॥१४-२०॥

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
सातवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।७।।

+++

अथाष्टमः पटलः

रुद्रकवचम्

भैरव उवाच

वक्ष्यामि देवि! कवचं मङ्गलं प्राणरक्षकम् ।
अहोरात्रं महादेवरक्षार्थं देवमण्डितम् ।।१।।

अस्य श्रीमहादेवकवचस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्द सौः बीजं रुद्रा देवता सर्वार्थसाधने विनियोगः।

भैरव ने कहा– हे देवि! मंगलप्रद प्राणरक्षक रुद्रकवच को अब मैं कहता हूँ। यह कवच दिन-रात रक्षा करने में समर्थ है। यह श्री महादेव की रक्षा हेतु देववृन्द से मण्डित है। इस कवच के ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, बीज: सौ: एवं देवता रुद्र हैं ॥१॥

रुद्रो मामग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शङ्करः ।
कपर्दी दक्षिणे पातु वामपार्श्वे तथा हरः ।।२।।
शिवः शिरसि मां पातु ललाटे नीललोहितः ।
नेत्रं मे त्र्यम्बकः पातु बाहुयुग्मं महेश्वरः ।।३।।
हृदये च महादेव ईश्वरश्च तथोदरे ।
नाभौ कुक्षौ कटिस्थाने पादौ पातु महेश्वरः ।।४।।
सर्वं रक्षतु भूतेशः सर्वगात्राणि मे हरः ।
पाशं शूलञ्च दिव्यास्त्रं खड्गं वज्रं तथैव च ।।५।।

नमस्करोमि भूतेश रक्ष मां जगदीश्वर ।
पापेभ्यो नरकेभ्यश्च त्राहि मां भक्तवत्सल ॥६॥
जन्ममृत्युजराव्याधिकामक्रोधादपि प्रभो ।
लोभमोहान्महादेव रक्ष मां त्रिदशेश्वर ॥७॥
त्वं गतिस्त्वं मतिश्चैव त्वं भूमिस्त्वं परायणः ।
कायेन मनसा वाचा त्वयि भक्तिर्दृढ़ास्तु मे ॥८॥

मेरे अग्रभाग में रुद्रदेव रक्षा करें। पृष्ठ भाग में श्रीशंकर, दक्षिण भाग में कपर्दी, वामभाग में हर, शिव मेरे शिर की, नीललोहित ललाट की एवं नेत्रों की त्र्यम्बक रक्षा करें। महेश्वर दोनों भुजाओं की, हृदय की महादेव, उदर की ईश्वर तथा नाभि-कुक्षि-कटि एवं पैर की रक्षा महेश्वर करें। सभी प्रकार से मेरे शरीर की रक्षा भूतेश एवं हर करें। हे भूतेश! आपको नमस्कार है। हे जगदीश्वर! आप मेरी रक्षा करें। हे भक्तवत्सल! पाप एवं नरक से मेरी सदा रक्षा करें। हे प्रभो! हे त्रिदशेश्वर महादेव! जन्म-मृत्यु, बुढ़ापा, रोग, काम, क्रोध, लोह एवं मोह से आप मेरी रक्षा करें। आप ही मेरी गति हैं; अत: हे प्रभो! शरीर-मन एवं वचन द्वारा आपमें मेरी भक्ति दृढ़ हो ॥२-८॥

फलश्रुतिः

इत्येतद्रुद्रकवचं पाठनात्पापनाशनम् ।
महादेवप्रसादेन भैरवेन च कीर्तितम् ॥९॥
न तस्य पापं देहेषु न भयं तस्य विद्यते ।
प्राप्नोति सुखमारोग्यं पुत्रमायुः प्रवर्द्धनम् ॥१०॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी मोक्षमेव च ॥११॥
व्याधितो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
ब्रह्महत्यादि पापं च पठनादेव नश्यति ॥१२॥

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे अष्टमः पटलः ॥८॥

कवचफल- इस रुद्रकवच का पाठ करने से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। महादेव की प्रसन्नता के लिये यह कवच भैरव ने कहा है। इसके पाठ से शरीर पापरहित हो जाता है, सुख एवं आरोग्यता प्राप्त होती है तथा पुत्र की आयु बढ़ती

है। इसके पाठ से पुत्रार्थी को पुत्र, धनार्थी को धन, विद्यार्थी को विद्या एवं मोक्षार्थी को मोक्ष प्राप्त होता है। रोगी को रोग से एवं बन्धक को बन्धन से मुक्ति मिल जाती है। इस कवच के पाठ से ब्रह्महत्यादि पाप भी नष्ट हो जाते हैं ॥९-१२॥

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
आठवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।८।।

+++

अथ नवमः पटलः

आसनम्

एकं सिद्धासनं प्रोक्तं द्वितीयं कमलासनम् ।
व्याघ्राजिने सर्वसिद्धिर्ज्ञानसिद्धिर्मृगाजिने ।।१।।
वस्त्रासनं रोगहरं वेत्रजं प्रीतिवर्द्धनम् ।
कौशेयं पुष्टिदं प्रोक्तं कम्बलं सर्वसिद्धिदम् ।।२।।
शुक्लं वा यदि वा कृष्णं विशेषाद्रक्तकम्बलम् ।
मेषासनं तु वश्यार्थमाकृष्टौ व्याघ्रचर्म च ।।३।।
शान्तौ मृगाजिनं शस्तं मोक्षार्थं व्याघ्रचर्म च ।
गोचर्म स्तम्भने देवि! वाजिं चोच्चाटने तथा ।।४।।

विद्वेषे श्वानचर्म च

मारणे माहिषं चर्म कर्मोद्दिष्टं समाचरेत्।
सर्वकामार्थदं देवि! पट्टवस्त्रासनं तथा ।।५।।
कुशासनं कम्बलं वा सर्वकर्मसु पूजितम् ।
दुःखदारिद्र्यनाशं तु काष्ठपाषाणजासनम् ।।६।।

आसन– प्रथम आसन सिद्धासन एवं द्वितीय कमलासन है। व्याघ्रचर्म के आसन पर जप करने से सर्वसिद्धि, मृगचर्म के आसन पर ज्ञानसिद्धि एवं वेंत के आसन पर जप करने से प्रीतिवृद्धि होती है। कुश के आसन पर जप करने पर पुष्टि एवं कम्बल के आसन पर जप करने से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। शुक्ल अथवा कृष्ण— इन दोनों प्रकारों से लाल कम्बल श्रेष्ठ है। वशीकरण कर्म में मेष का आसन, आकर्षण कर्म में व्याघ्रचर्म का आसन, स्तम्भन में गोचर्म का आसन,

उच्चाटन कर्म में अश्वचर्म का आसन, विद्वेषण में श्वानचर्म का आसन एवं मारण कर्म में भैंसे के चर्म का आसन प्रयोग करना चाहिए। हे देवि! रेशमी वस्त्र का आसन समस्त कामनाओं को प्रदान करने वाला होता है। कुशासन अथवा कम्बलासन समस्त कर्मों में पूजनीय होता है। काठ एवं पाषाण का आसन दुःख एवं दारिद्र्यनाशक होता है ॥१-६॥

होमघटादिस्थापनम्

नित्यं नैमित्तिकं कार्यं स्थण्डिले वा समाचरेत् ।
हस्तमात्रेण तत्कुर्याद्वालुकाभिः सुशोभनम् ॥७॥
तोयपूर्णान्घटान्पञ्च स्थापयेत्परमेश्वरि ।
एकेन मन्त्रयुग्मेन स्थापिताः स्युः सपल्लवैः॥८॥
अशक्तौ च महादेवि एकैकेन च वाससा ।
कदाचिदपि चैकेन सर्वान्नाच्छादयेच्छिवे ॥९॥
अनाच्छादिततोयानि स्थापयित्वा व्रजत्यधः ।

होमघटादिस्थापन– हे परमेश्वरि! नित्य एवं नैमित्तिक कर्म समाप्त कर बालुका से सुशोभित एक हाथ के परिमाण का स्थण्डिल बनाकर उसके ऊपर जल से भरे पाँच कलश (कुम्भ) स्थापित करे। एक या दो मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर पाँचों कलशों को पाँच पल्लव से सुशोभित करे। हे महादेवि! यदि भिन्न-भिन्न कलश को आच्छादित करने के लिये वस्त्र सम्भव न हो तो एक ही वस्त्र से पाँचों कलशों को लपेट दे; क्योंकि स्थापित जल को आच्छादित न करने से स्थापनकर्त्ता की अधोगति होती है॥६-९॥

ततः स्थां स्थीं इति श्रीमिति मन्त्रेण घटं स्थिरीकृत्य। क्लीं इति घटप्रोक्षणम्। क्रामिति घटाभिमन्त्रणम्। ह्रीं इत्यारोपणम्। ह्रीं जलेन पूरणम्। ततः कृताञ्जलिः पठेत्।

तत्पश्चात् **स्थां स्थीं** इन बीजमन्त्रों से तथा **श्रीं** इस मन्त्र से घट को स्थिर कर **क्लीं** इस बीजमन्त्र से घट को साफ करे। **क्रां** इस बीजमन्त्र से अभिमन्त्रित कर **ह्रीं** इस बीजमन्त्र से घट को स्थापित करे। **ह्रीं** मन्त्र से उनमें जल भर कर फिर अञ्जलि बनाकर प्रार्थनामन्त्र पढ़े।

गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च ॥१०॥
सर्वे समुद्राः सरितः सरांसि जलदा नदाः ।

ह्रदाः प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्गपातालभूगताः ।
सर्वतीर्थानि पुण्यानि घटे कुर्वन्तु सन्निधिम् ।।११।।

ततः श्रीमिति पल्लवम्, हुमिति फलम्, रमिति सिन्दूरम्, बमिति पुष्पम्, मूलेन दूर्वाम्, ओं ओं ओं इत्यभ्युक्षणम्, ॐ फट् स्वाहा इति कुशेन ताडनम्। शान्त्यर्थं स्नापयेत्कुम्भम्।

पुण्याहं वाचयित्वा कर्म कुर्यात् दिग्बन्धनादि गणेशग्रहदिक्पालादीन्प्रतिकुण्डे पूजयेत्। स्थण्डिले पूजयेल्लिङ्गं सर्वापत्तिविनाशनम्। कुम्भे चापि पूजयेत्। ततः अग्निमानीय संस्कृत्य होमं कुर्यात्।

हे घट! गंगा आदि नदियाँ, सभी समुद्र, सरोवर, शेष समुद्र क्षीरसागर आदि, सरितायें लघु सरितायें, नाले, पक्के सरोवर, झरने, स्वर्ग, पाताल एवं मृत्युलोक के समस्त बावड़ी आदि जलस्थान, समस्त काशी आदि पुण्यक्षेत्र तुझमें आकर वास करें।

तत्पश्चात् **श्रीं** बीज से पञ्चपल्लव स्थापित करे। **हुं** इस बीज मन्त्र से घट के भीतर फल स्थापित करे, **रं** बीजमंत्र से घट के ऊपर सिन्दूर चढ़ाये, **बं** बीजमन्त्र उच्चारण कर पुष्प चढ़ाये। मूल मन्त्र से दूर्वा चढ़ाये। ॐ ॐ ॐ— इन तीन प्रणवों का उच्चारण कर अभ्युक्षण करे। **ॐ फट्** इस बीजमन्त्र को पढ़कर कुशा से घट का ताड़न करे। शान्ति के लिये कुम्भ को स्नान कराये। पुण्याहवाचन कर दिग्बन्धनादि कर्म करे। गणेश, ग्रह, दिक्पालादिकों की प्रीति के लिये कुण्ड में पूजन करे। स्थण्डिल में लिंग का पूजन करने से समस्त प्रकार की आपत्तियाँ दूर होती हैं। कुम्भ में भी पूजन करे। तत्पश्चात् अग्नि को लाकर संस्कार करके हवन करे।।१०-११।।

महाविपत्तौ जुहुयात् जवां कृष्णपराजिताम् ।
द्रोणं वा करवीरं वा मनोभीष्टफलं लभेत् ।।१२।।
करवीरैः श्वेतरक्तै रक्तचन्दनमिश्रितैः ।
द्रोणैश्च केतकीपुष्पैर्होमो रोगं विमोचयेत् ।।१३।।
चम्पकैः श्वेतपद्मैश्च कोकनदश्च बन्धुकम् ।
बिल्वपत्रं कुरुवकं मुनिपुष्पं च केसरम् ।।१४।।
हुत्वा यदि महादेवि अवश्यं पुत्रवान्भवेत् ।

रक्तोत्पलं बिल्वपत्रं काञ्चनं रक्तवर्णकम् ।।१५।।
शान्तिमन्त्रत्रिकं चापि शतसंख्याक्रमेण तु ।
जुहुयात्तु महेशानि सर्वसिद्धिर्भवेत्तदा ।।१६।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे नवमः पटलः।।९।।

महाविपत्ति के समय में जवाकुसुम (अड़हुल) तथा कृष्ण अपराजिता के पुष्प से हवन करे। मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिये द्रोणपुष्प व कनेर के पुष्पों से हवन करे। कनेर के पुष्प तथा श्वेत एवं रक्तचन्दन के मिश्रण से, द्रोणपुष्प व केतकीपुष्प से रोगशान्ति के लिये हवन करे। हे महादेवि! यदि चम्पक (चम्पा) पुष्प, श्वेत कमल, कोकनद, बन्धूक पुष्प, बिल्वपत्र, कुरुबक, अगस्त्यपुष्प व केशर से हवन किया जाय तो अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है। हे महेशानि! लाल कमल, बेलपत्र, रक्तवर्ण काञ्चन तथा शान्ति मन्त्र से १०८ बार हवन करने पर सर्वसिद्धि होती है।।१२-१६।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
नौवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।९।।

अथ दशमः पटलः

शाक्ताभिषेकः

शाक्ताभिषेको वन्ध्यामृतवत्सारोगिणीनां शान्तिकरः। धनकीर्त्यायुर्वृद्धिः सौभाग्यजननः सर्वाशापूर्णो मन्त्रदोषनिवारणोऽभिचारहरो ग्रहदोषनाशनः सर्वसिद्धिप्रदोऽभिषेकः।।

शाक्ताभिषेक– यह वन्ध्या, मृतवत्सा, रोगिणी स्त्रियों के लिये शान्तिकर है। धन-कीर्ति और आयु का वृद्धिकारक, सौभाग्यजनक, सभी प्रकार की आशाओं को पूर्ण करने वाला, मन्त्रदोषनिवारक, अभिचार, ग्रहदोषनिवारक एवं समस्त प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला यह अभिषेक है।

नयनरञ्जनम्

दीपं कृत्वा ताम्रपात्रे कज्जलं पातयेदथ ।

गवां घृतेन चालोड्य चक्षुषी अथ रञ्जयेत् ।
पूर्वे च यादृशं दृष्टं तादृशं च प्रपश्यति ।।१।।

दीपक प्रज्ज्वलित कर ताम्रपात्र में काजल बनाकर उसे घी में मथकर नेत्र में लगाने से व्यक्ति पूर्व की ही भाँति देख सकता है।।१।।

प्रकारान्तरे

रक्तचन्दनसंयोगान्मधुना सहरौदुके ।
कियद्दृष्टमञ्जनञ्च तिमिरं हन्ति सुन्दरि ।।२।।

अन्य विधि– रक्तचन्दन व मधु को मिश्रित कर धूप में सुखाकर नेत्रों में लगाने पर रतौंधी दूर होती है।।२।।

अथान्यः

पुनर्नवाघृतं सद्यश्चक्षुस्तेजःकरं भवेत् ।।३।।

पुनर्नवा में सिद्ध किया हुआ घी शीघ्र ही नेत्रकान्ति को बढ़ाता है।।३।।

ज्वरहरणम्

अपामार्गस्य मूलं च कन्यकासूत्रबन्धने ।
स्वात्यां तथा वैष्णवे च ज्वरं हन्ति सुदारुणम् ।।४।।

ज्वरहरण– अपामार्ग की जड़ को कुमारी कन्या के हाथ से काते गये सूत में बांधकर स्वाति अथवा विष्णु नक्षत्र में धारण किया जाय तो ज्वर दूर होता है।।४।।

सर्वज्वरनिवारणम्

रक्तवाट्या मूलमर्कवारे कदलीसूत्रैः शय्यायां दापयेत्सर्वज्वरं तापज्वरं हरेत्।

सर्वज्वरनिवारण– लाल बाडी की जड़ को रविवार के दिन केले के सूत्र में लपेट कर यदि शय्या के एक पाये में बांधा जाय तो ताप आदि सभी प्रकार के ज्वर शान्त हो जाते हैं।

उदररोगप्रशम्

नागेश्वरमूलं मधुना सह पानादुदररोगशान्तिः।

उदररोग शान्ति– नागेश्वर की जड़ को मधु के साथ सेवन करने से उदर रोग शान्त हो जाते हैं।

तृष्णानाशः

रक्तचन्दनं वर्षयित्वा तोलकं जलसम्मिश्रं वामहस्ते गृहीत्वा मनुमष्टोत्तरशतं

सञ्जप्य पिबेत् । सप्ताहात्तस्य तृष्णानाशो भवति।

तृष्णानाश– लाल चन्दन को जल में घिस कर तथा एक तोला पानी मिलाकर बाँये हाथ में लेकर १०८ बार आगे कहे जा रहे मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित कर पान करने से एक सप्ताह में तृष्णा की शान्ति हो जाती है।

मन्त्रः

शब्दबीजद्वयं भद्रे! नाशय द्वितयं वदेत् ।
तृष्णेति पदमुच्चार्य ततः स्वाहा मनुर्मतः ।
अनेन मनुना देवि! तृष्णानाशो भविष्यति ।।५।।

हे भद्रे! दो शब्द बीज (हुं हुं), **नाशय** पद दो बार और **तृष्णा** का उच्चारण करे। इसके पश्चात् **स्वाहा** पद का उच्चारण करने से **हुं हुं नाशय नाशय तृष्णा स्वाहा** मन्त्र का निर्माण होता है। हे देवि! इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल का पान करने से तृष्णा नष्ट होती है।।५।।

सर्वापच्छान्तिकरं महास्वस्त्ययनम्

अथ वक्ष्ये महेशानि महास्वस्त्ययनं शृणु ।
सर्वसिद्धिकरं पुण्यं सर्वपापविनाशनम् ।।६।।
सर्वोपद्रवशमनं सर्वारिष्टविनाशनम् ।
महाव्याधिप्रशमनमपस्मारविनाशनम् ।।७।।
योगिनीभूतवेतालाः प्रेतकूष्माण्डपन्नगाः ।
तत्र स्थाने न तिष्ठन्ति डाकिन्याद्या विशेषतः ।।८।।

हे महेशानि! अब मैं महास्वस्त्ययन कह रहा हूँ; श्रवण करो। यह सर्वसिद्धिकर पवित्र एवं सभी प्रकार के पाप, उपद्रव एवं अरिष्ट का नाश करने वाला है। इसके पाठ से महाव्याधि, अपस्मार आदि का नाश होता है। योगिनी, भूत-वेताल, प्रेत-कूष्माण्ड, पन्नग आदि उस स्थान पर निवास नहीं करते; जहाँ पर इस महास्वस्त्ययन का पाठ होता रहता है।।६-८।।

कृत्यामभ्यर्च्चयेद्देवि! यथाविधि पुरःसरम् ।
षोडषारं लिखेत्पद्मं योनियुग्मं सबिन्दुकम् ।।९।।
तन्मध्येऽष्टदलं लिख्य यकारादीन्न्यसेत्क्रमात् ।
तन्मध्ये चैव षट्कोणं लिखेन्मूलमनुस्मरन् ।।१०।।

चन्द्रविम्बं लिखेन्मध्ये असाध्ये पार्थिवं शिवम् ।
तस्य मध्ये न्यसेत् कुम्भं गले स्रग्दामभूषितम् ।।११।।
तस्य मध्ये न्यसेत् कृत्यां सर्वलक्षणसंयुताम् ।
पूजयेच्च यथान्यासं पायसन्तु निवेदयेत् ।।१२।।
परितोष्य घटे न्यस्य असिताङ्गादिभैरवान् ।
गन्धपुष्पादिनाभ्यर्च्य तद्बाह्ये क्षेत्रपालकान् ।।१३।।
लोकपालं यजेद्देवि! तदग्रे होममाचरेत् ।
जुहुयादाज्यापामार्गेण रक्षतां भिदमर्षणौ ।।१४।।
दूर्वाग्रखदिराश्वत्थं प्रत्येकन्तु शतादिकम् ।
कुण्डे व स्थण्डिले वापि होमकर्म समाचरेत् ।।१५।।
तस्य दक्षिणपार्श्वे तु लक्ष्मीं ध्यायेद्यथाविधि ।
कुण्डमध्ये न्यसेद्देवीं दक्षिणे च श्रियं स्मरेत् ।।१६।।
वामपार्श्वे स्मरेद्देवीं हृल्लेखां परमेश्वरीम् ।
तस्यैव वामपार्श्वे तु पूजयेद्दश नायकम् ।।१७।।
अयुतं मूलमन्त्रञ्च जपेन्मृत्युविनाशनम् ।
अयुतं भ्रूणहत्यायां जपेत् परिमाणं विदुः ।।१८।।
महाव्याधिप्रशमनं तावज्जप्त्वाभिषेकतः ।
एवं यः कुरुते मर्त्यः पुण्यां गतिमवाप्नुयात् ।।१९।।
तस्यावश्यं न विद्येत व्याधिभ्योऽपि भयं नहि ।।२०।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे दशमः पटलः।।१०।।

हे देवि! यथाविधि कृत्या देवी का पूजन करे। षोडश कमलदल लिखकर बिन्दुयुक्त योनियुग्म लिखे। उस योनियुग्म के मध्य में अष्टल कमल लिखकर क्रमानुसार यकारादि लिखे और उसके मध्य में षट्कोण यन्त्र लिखकर मूलमन्त्र का ध्यान करे। मध्य में चन्द्रविम्ब लिखे। अक्षम (सामर्थ्यहीन) होने पर पार्थिव शिवलिङ्ग स्थापित करे। उसके मध्य में कुम्भ स्थापित कर उसके कण्ठदेश को पुष्पमाला से भूषित करे। कलश के ऊपर सर्वलक्षणसम्पन्न कृत्या देवी को स्थापित करे। यथा— विधि न्यास-पूजन कर खीर प्रदान करे। कुम्भ के ऊपर न्यास कर असिताङ्ग भैरव का ध्यान कर गन्ध-पुष्पादि प्रदान करे तथा बाह्य प्रदेश में क्षेत्रपाल

का पूजन करे। अग्रभाग में लोकपालों का पूजन कर हवन करे। घी एवं अपामार्ग से हवन करते हुये दूर्वाग्र, खदिर तथा अश्वत्थ— प्रत्येक को सौ-सौ की मात्रा में लेकर कुण्ड या स्थण्डिल में होमकर्म करे। उसके दक्षिण भाग में भगवती लक्ष्मी का यथाविधि ध्यान करे। कुण्डमध्य में देवी का न्यास कर दक्षिण में 'श्री' का स्मरण करे। वाम पार्श्व में स्थित हृदय में देवीजी का ध्यान करे। उनके वाम भाग में दस नायकों का पूजन करे। मृत्युनिवारण के लिये मूल मन्त्र का दस हजार जप करे। भ्रूणहत्या-दोषनिवृत्ति के लिये भी दस हजार जप करे। महाव्याधि की शान्ति हेतु दस हजार की संख्या में जप कर अभिषेक करे। यदि साधक ऐसा करता है तो उसे श्रेष्ठ गति प्राप्त होती है। जप करने वाले को किसी प्रकार की भी व्याधि से भय नहीं प्राप्त होता।।९-२०।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
दसवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१०।।

+++

अथैकादशः पटलः

कुमार्यावेशनम्

श्रीश्वर उवाच

अथ वक्ष्यामि संक्षेपात् कुमार्यावेशनं शृणु ।
सुगुप्ते विजने देशे गोमयेनोपलेपिते ।।१।।
आचार्यः प्रयतो भूत्वा सुस्नातो विजितेन्द्रियः ।
नवकुम्भान् समादाय शुद्धकुम्भेन पूरयेत् ।।२।।
नवं शरावमानीय कपिलाघृतपूरितम् ।
कुम्भोपरि समारोप्य दीपं प्रज्वालयेत्ततः ।।३।।
शताष्टमन्त्रजापेन कुमारा वा कुमारिकाः ।
अतीतानागतञ्चैव वर्तमानं च यद्भवेत् ।।४।।
शुभाशुभानि सर्वाणि पश्यन्ति नात्र संशयः ।
सम्यग्ध्यात्वा गणेशानं गते यामे जपेन्निशि ।।५।।
शुभाशुभानि कर्माणि कथयन्ति न संशयः ।

कन्यकार्थी शुचिर्भूत्वा मन्त्रराजं गणेशितुः ।।६।।
जप्त्वा दशसहस्राणि भानुरक्ता श्वभावजैः ।
पुष्पैर्दशांशहवनात् तां कन्यां लभते ध्रुवम् ।।७।।

श्री ईश्वर ने कहा– हे देवि! अब संक्षिप्त रूप से कुमारी-आवेशन की विधि कहता हूँ, श्रवण करो। सभी प्रकार से रक्षित एकान्त स्थान को गोबर से पोतकर आचार्य द्वारा कहे गये नियमानुसार स्नान करे एवं संयम से रहे। नये कुम्भ को शुद्ध जल से भरकर स्थापित करे तथा कुम्भ के ऊपर नये शराव (सरई) में कपिला गाय के घी से दीपक प्रज्ज्वलित कर स्थापित करे तथा एक सौ आठ बार मन्त्र का जप करे। यदि जप के समय कुमार अथवा कुमारी दोनों में से एक अथवा दोनों ही स्वयं पूजास्थान में आकर उपस्थित हों तो यथाविधि उनका पूजन करे। उस पूजन के प्रसाद से बीते हुये अथवा आने वाले एवं वर्तमान शुभाशुभ स्वयं दिखायी पड़ेंगे; इसमें संदेह नहीं है। इसके उपरान्त गणेश जी का ध्यान कर एक प्रहर रात्रि बीतने पर जपकर्म में प्रवृत्त हो। ऐसा करने से प्रसन्न हो गणेश जी स्वयं प्रत्यक्ष आकर समस्त शुभाशुभ जैसा होना होगा; कहेंगे। कन्या के इच्छुक पुरुष को चाहिये कि वह पवित्र होकर गणेशमन्त्र का जप करे। मन्त्रजप के पश्चात् सूर्यमुखी पुष्प से दशांश हवन करे तो निश्चित ही कन्या की प्राप्ति होती है ।।१-७।।

काम्यकर्माणि

वक्ष्यामि काम्यकर्माणि साधकानां हिताय वै ।
शास्त्रोक्तेनैव मन्त्रेण संक्षेपान्न तु विस्तरात् ।।८।।

साधकों के हित के लिये काम्य कर्म का वर्णन करता हूँ। शास्त्रोक्त मन्त्र से ही संक्षेपपूर्वक कर्म करे; विस्तारपूर्वक न करे।।८।।

दिव्यज्ञानादिलाभः

स्वहृत्पद्मे गणेशानं कुन्देन्दुधवलप्रभम् ।
शुक्लालङ्कारसम्पन्नं भावयेद्यो निरन्तरम् ।।९।।
भारती तस्य वक्त्राब्जे शास्त्रज्ञा बहुसुन्दरी ।
नित्यं प्रकाशते सत्यं दिव्यज्ञानप्रदायिनी ।।१०।।

जो मनुष्य निरन्तर अपने हृदयकमल में कुन्देन्दु की भाँति धवल कान्ति वाले एवं श्वेत आभूषणों से विभूषित श्री गणेश जी का ध्यान करता है, उसकी जिह्वा में सुन्दर रूप धारण करने वाली शास्त्रज्ञा, सत्य एवं दिव्य ज्ञान प्रदान करने

वाली भगवती भारती (सरस्वती) का वास होता है॥९-१०॥

वशीकरणम्

न विनश्येद् गणेशानं सिन्दूरसदृशप्रभम् ।
पाशांकुशधरं ध्यात्वा यो जपेन्मन्त्रवित्तमः ।
अनङ्गवशसम्पन्ना तमभ्येति वराङ्गना ।।११।।

पाश एवं अंकुश धारण करने वाले सिन्दूर के समान कान्ति वाले गणेशजी का जो साधक ध्यान कर पूजन एवं मन्त्रजप करते हैं, उन साधकों के निकट अवश्य ही कामविमोहित वरांगना स्वयं सेवा हेतु आती है॥११॥

प्रकारान्तरम्

पाशांकुशवराभीतिं हिमकुन्देन्दुमल्लिभम् ।
दिग्वस्त्रं चन्द्रवर्णाभं स्फुरन्माणिक्यमण्डलम् ।
यः स्मरेत्तस्य वशगा ह्यवश्याऽपि वराङ्गना ।।१२।।

पाश, अंकुश, वर एवं अभय धारण करने वाले, हिमकुन्देन्दु की भाँति प्रभा वाले, दिग्वस्त्र धारण करने वाले, चन्द्रमा के समान वर्ण वाले, माणिक्यमण्डल की आभा वाले सदाशिव का जो साधक ध्यान करता है, सुन्दर मनोहारिणी वरांगना उसके वश में हो जाती है॥१२॥

मुखस्तम्भनम्

विवादेषु गणेशानं ज्वलदग्निसमप्रभम् ।
प्रतिवादिमुखे ध्यायन्प्रजपेन्मनसा मनुम् ।।१३।।
तन्मुखं स्तम्भयेदाशु वादी दीनोऽपि नान्यथा ।।१४।।

मुख-स्तम्भन– विवाद के समय वादी के सम्मुख जलती हुई अग्नि के समान तेजवाले गणेशजी का ध्यान कर जो व्यक्ति मन्त्र का जप करता है, उससे वादी का मुख स्तम्भित हो जाता है तथा वादी दीन की भाँति व्यवहार करने लगता है; इसमें अन्यथा कुछ भी नहीं है॥१३-१४॥

सर्वरोगहरणम्

अंगुष्ठमानं हृत्पद्मे शुद्धस्फटिकसन्निभम् ।
चिन्तयित्वा गणेशानं चिदम्बरसुधारसम् ।।१५।।
अभिषिच्य सुरश्रेष्ठ सततं धरणीतले ।

सर्वरोगविनिर्मुक्तश्चिरकालं स जीवति ।।१६।।

शुद्ध स्फटिक के समान उज्ज्वल, चेतनस्वरूप, अमृतरस से पूर्ण अंगुष्ठमात्र देहधारी श्री गणेशजी का जो साधक स्व-हृदयकमल में ध्यान कर निरन्तर पृथिवीलोक में अभिषेक करते हैं, वे सभी प्रकार के रोगों से मुक्त होकर चिरकाल तक जीवित रहते हैं॥१५-१६॥

विषहरणम्

शुक्लवर्णं गणेशानं दशबाहूं मदोत्कटम् ।
शुक्लाम्बरधरं सौम्यं चिच्छशांकामृतप्लुतम् ।।१७।।
भावयेद्धृदयाम्भोजे नित्यं निर्मलमानसः ।
मन्त्री गरुडवत् सद्यस्त्रिविधं हरते विषम् ।।१८।।

शुक्ल वर्ण, दश भुजाधारी, मदोत्कट, शुक्ल (श्वेत) वस्त्र धारण करने वाले, सौम्य, चन्द्र-अमृत से प्लुत गणेश जी का जो साधक शुद्ध चित्त से अपने हृदयकमल में ध्यान करते हैं, वे तीनों प्रकार के विषहरण करने में गरुड़ की भाँति समर्थ हो जाते हैं ॥१७-१८॥

नानाविधकार्याणि

धनार्थी मधुना नित्यं वशार्थी पायसैर्हुनेत् ।
घृतेन लक्ष्मीसम्प्राप्त्यै हुनेत् शर्करया तथा ।।१९।।
आयुषे चार्थसम्पत्तौ दध्ना च जुहुयात्तथा ।
अन्नेन चान्नसम्पत्त्यै द्रव्याप्त्यै तिलतण्डुलैः ।।२०।।
लवणैरप्यनावृष्ट्यै वृष्टि कामस्तु बिल्वकैः ।
सौभाग्यार्थी तथा लाजैः कुसुमैश्चापि सोदनैः ।।२१।।

धनार्थी मधु से, वश्यार्थी खीर से, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु घृत-शर्करा से, आयु व अर्थ-सम्पत्ति हेतु दही से एवं अन्नप्राप्ति के लिये अन्न से हवन करना चाहिये। द्रव्य-प्राप्ति के लिये तिल एवं तण्डुल से हवन करे। अनावृष्टि हेतु लवण (नमक) से, वृष्टि हेतु बेल से एवं सौभाग्यवृद्धि हेतु लाजा अथवा पके चावल (भात) मिश्रित फूलों की आहुति देनी चाहिये ॥१९-२१॥

विविधवशीकरणानि

वशिने जुहुयात् पद्मै राजानं वशमानयेत् ।

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधसमिधो हुनेत् ।।२२।।
विप्रक्षत्रियविट्शूद्राः सद्यो वश्या भवन्ति वै ।।२३।।

वशीकरण में कमलदल से हवनं करे। इससे राजा भी वशीभूत होता है। अश्वत्थ, उदुम्बर (गूलर) प्लक्ष,न्यग्रोध की समिधा से हवन करने से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र सभी वशीभूत हो जाते हैं।।२२-२३।।

स्त्रीवशीकरणम्

स्त्रीणां प्रतिकृतिं कृत्वा पिष्टेन प्रतिवासरम् ।
साज्याहुतित्रयन्तस्य वशमायान्ति नान्यथा ।।२४।।

प्रतिदिन पिष्टी से स्त्री के आकार की प्रतिमा बनाकर घी की तीन आहुतियाँ प्रदान करे तो अवश्य ही स्त्री का वशीकरण होता है।।२४।।

प्रकारान्तरम्

मन्त्रराजं जपित्वा तु यथाविधि महोदरम् ।
दशांशे जुहुयान्मन्त्री राजिकालवणेन च ।।२५।।
तद्भस्म वामहस्तेन गृहीत्वा ताडयेत् स्त्रियम् ।
समागच्छति सा नारी मदनानलविह्वला ।।२६।।

साधक यथाविधि श्री गणेशजी के मन्त्र का जप कर राई तथा नमक से दशांश हवन करे। तत्पश्चात् हवन के भस्म को बाँयें हाथ में लेकर इच्छित नारी के ऊपर डाल दे। इससे निश्चित ही वह स्त्री कामातुर होकर साधक के निकट आ जायेगी ।।२५-२६।।

रिपुस्तम्भनम्

तद्वच्च प्रजपेदेनं पीतपुष्पैश्च मन्त्रवित् ।
स्तम्भयेद्रिपुसैन्यं च सामात्यबलवाहनम् ।।२७।।
प्रतिवादी भवेन्मूको मन्त्रस्यास्य प्रभावतः ।
स्तम्भयेत् पञ्चद्रव्याणि नात्र कार्या विचारणा ।।२८।।

रिपु (शत्रु) स्तम्भन– पूर्व की भाँति जप कर साधक पीतपुष्प से हवन करे। इस प्रयोग से साधक के शत्रु का मन्त्री सहित सैन्य बल का स्तम्भन होता है। प्रतिवादी का मुख बोलने में असमर्थ हो जाता है। इस मन्त्र का ऐसा प्रभाव है कि इसके द्वारा पञ्चद्रव्यों का भी स्तम्भन हो जाता है। इसमें अन्य विचार की आवश्यकता नहीं है ।।२७-२८।।

शत्रूच्चाटनम्

विभीतकसमिद्भिस्तु नियतं जुहुयात्तथा ।
सम्यगुच्चाटयेच्छत्रून् स्वस्थानात्तु विशेषतः ।।२९।।
मेरुमण्डलतुल्यो वा स देवोद्विग्नमानसः ।
ग्रामयुद्धे पुरे वापि इमं स्तुत्वा तु होमयेत् ।।३०।।
उच्चाटयति वेगेन मानुषेषु च का कथा ।।३१।।

शत्रु के उच्चाटन हेतु बहेड़े की समिधाओं से हवन करे तो अवश्य ही शत्रु का उच्चाटन होता है। अधिक कहने से क्या लाभ; एक बार मेरु पर्वत जैसे स्थिर चित्तपुरुष का भी उच्चाटन किया जा सकता है। ग्राम अथवा पुरयुद्ध में मन्त्र का जप कर दशांश हवन करे। इस प्रयोग से जड़ पदार्थ का भी उच्चाटन किया जा सकता है; फिर मनुष्य-मात्र का तो कहना ही क्या है?॥२९-३१॥

मारणम्

मानुषास्थि समानीय सम्यगष्टांगुलीमितम् ।
मृतकेशैस्तु संवेष्ट्य सहस्राष्टाभिमन्त्रितम् ।।३२।।
कुलिकोदयवेलायां शत्रुद्वारे खनेद्भुवि ।
सप्ताहान्मरणं तस्य भविष्यति न संशयः ।।३३।।

मनुष्य के आठ अंगुल प्रमाण की अस्थि की कील को मृतक के सिर के बालों से लपेटकर एक हजार आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कुलिक योग के उदयकाल में शत्रु के द्वार पर भूमि खोदकर दबा दे। इससे व्यक्ति का मारण एक सप्ताह में हो जाता है ॥३२-३३॥

गणेशयन्त्रम्

अतः परं यन्त्रराजं शृणु देवि! गणेशितुः ।
सुसमे भूतले शुद्धे गजाद्यैः सुपरिष्कृते ।।३४।।
कामक्रोधविनिर्मुक्तः पूर्ववन्न्याससंयुतः ।
संपूज्य देवदेवेशं गणेशं शङ्करात्मजम् ।।३५।।
भूर्जे क्षौमे तस्योपरि यन्त्रराजं समुद्धरेत् ।
कस्तूरीरोचनायन्त्रकाश्मीरं चन्दनं रसम् ।।३६।।
गोशकृद्रससंयुक्तैर्मातङ्गमदमिश्रितैः ।

सर्वैश्च सुसमैरेभिः प्राणमापूर्य संलिखेत् ।।३७।।
लेखन्या हेमशूच्या वा जातिकाष्ठेन दूर्वया ।
षट्त्रिंशत्कोणमष्टारं द्वादशारं ततः परम् ।।३८।।
कवर्गादीनि गायत्र्या वर्णान्यपि लिखेद्बहिः ।
महाभूमण्डलं कुर्याद्गजाष्टकविभूषितम् ।।३९।।
तद्बाह्यं वारुणं कूर्ममण्डलञ्च नतं शुभम् ।
कर्णिकायां लिखेन्मन्त्री दक्षौ प्रणववेष्टितौ ।।४०।।
अङ्गानि चाष्टकोणेषु लक्ष्मीमनुदलं लिखेत् ।
द्वादशारे लिखेच्छक्तिं विना नपुंसकस्वरम् ।।४१।।
स्वरपत्रं कलापत्रे ततश्चाष्टदलाम्बुजे ।
कादिमन्ताक्षरञ्चापि सर्वं पूर्वादितो लिखेत् ।।४२।।
पुनः पार्श्वककोणेषु वादि सान्तं समालिखेत् ।
एतन्मन्त्रं समाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित् ।।४३।।
अणिमाद्यष्टमन्त्रेण चाष्टबाहुं प्रपूजयेत् ।।४४।।

हे देवि! अब गणेशयन्त्र का श्रवण करो। गजादिकों से विधिवत् परिष्कृत ुद्ध समान भाग पृथिवीतल में काम-क्रोधादि से पूर्णतया मुक्त होकर पूर्व की भाँति ास करके शिवपुत्र देवदेवेश भगवान् गणेश जी का पूजन करे। भूर्जपत्र अथवा शम के वस्त्र पर कस्तूरी, गोरोचन, केशर, रक्तचन्दन, मातंग-मद इत्यादि ुगन्धित द्रव्यों से स्वर्ण, रजत, जातिकाष्ठ अथवा दूर्वा की लेखनी से यन्त्र को ांकित करे। यन्त्र छत्तीस कोण, अष्टार तथा द्वादशार हो। बाहर के भाग में गायत्री कवर्गादि वर्णों को लिखे। महाभूमण्डल की रचना करके उसे गजाष्टक से ाभूषित करे। उस महाभूमण्डल के बाह्य भाग में नत वरुणदेव के कूर्ममण्डल को नखे। कमलदल की कर्णिका में हकार तथा क्षकार— इन दो वर्णों को लिखें। ष्टकोण में अंग तथा लक्ष्मीमन्त्र दलों में लिखे। द्वादशार कमल में बीज नपुंसक वर के विना लिखे। कलापत्र में स्वरपत्र लिखे। अष्टदल कमल में ककारादि तथा कारादि वर्णों को क्रमानुसार लिखे। पुनः पार्श्व कोण में वकार से आरम्भ कर कार तक के वर्णें को लिखे। इस प्रकार के यन्त्र को किसी को न दे। अणिमादि ाठ मन्त्रों से अष्ट बाहु का पूजन करे ॥३४-४४॥

अं अणिमायै नमः स्वाहा। लं लक्ष्म्यै नमः। व्यं व्याप्त्यै। प्रं प्राकाम्यायै। मं महिमायै। ईं ईशित्वायै। वं वशित्वायै। कं कामावशायित्वायै नमः स्वाहा।।

उपरोक्त मन्त्र अणिमादि मन्त्र हैं।

एवं सम्पूज्य विधिवन्मन्त्री मुनिगणान्यजेत् ।
भोजयित्वा विधानेन नानामिष्टफलादिभिः ।।४५।।
दिव्यगन्धयुतैः पुष्पैर्दिव्यगन्धप्रलेपनैः ।
मूषिकं पूजयामास नानामिष्टफलादिभिः ।।४६।।

ॐ समूषिकाय गणाधिपवाहनाय धर्मराजाय स्वाहा।

इत्यनेनैव मन्त्रेण मूषिकं पूजयेत्ततः ।।४७।।

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे शिवगौरी-
संवादे एकादशः पटलः ।।११।।

साधक इस प्रकार से पूजन कर मुनिगणों का पूजन करे एवं विधिवत् विभिन्न प्रकार के मिष्टान्नों एवं फलों द्वारा भोजन कराये। पुनः दिव्य गन्ध, पुष्प एवं दिव्य लेपन आदि से गणेशजी के वाहन मूषक का पूजन कर मिष्टान्न एवं फलादि से उन्हें तृप्त करे। **ॐ समूषिकाय गणाधिपवाहनाय धर्मराजाय स्वाहा** मन्त्र से मूषकराज का पूजन करे। **एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्** यह गणेश का गायत्री मन्त्र है।।४५-४७।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में देवी-ईश्वरसंवादात्मक
ग्यारहवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।११।।

+++

अथ द्वादशः पटलः

वशीकरणम्

पलार्द्धस्वर्णेन रजतेन वा साध्यस्य प्रतिमां कृत्वा सार्धहस्तं गर्तं कृत्वा हरितालहरिद्राचूर्णकं पलार्द्धं तत्र निःक्षिप्य रक्तासने तत्रोपविश्य चतुर्दिक्षु पताकां निवेश्य तिलपूर्णघटमधः कृत्वा संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पूर्वास्य प्रवालमालया दशसाहस्रजपेन प्रयोगार्हो भवेत्।

वशीकरण– सर्वप्रथम आधे पल की सोने या चाँदी की साध्य की तिमा बनाकर भूमि में एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसमें चूर्ण की हुई हरिताल था हल्दी का चूर्ण बनाये। साधक लाल रंग के आसन के ऊपर आसीन होकर ारो दिशाओं में पताका (ध्वजा) लगाकर तिल से पूर्ण घट की प्राणप्रतिष्ठा कर से स्थापित करे। मूंगा की माला से पूर्व दिशा की ओर मुख करके जप करने पर ह प्रतिमा प्रयोग के योग्य हो जाती है।

मन्त्र:

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायाबीजं द्वितीयकम् ।
कात्वं त्वल्लाकिनीयुक्तं वामकर्णेन्दुभूषितम् ।।१।।
ततो मन्त्रपदं ब्रूयाच्चामुण्डे तदनन्तरम् ।
साध्यनाम ततो न्यस्य वशमानय तत्परम् ।।२।।
वह्निजायावधिर्मन्त्रं जयेद्दशसहस्रकम् ।

अथान्यत्– चामुण्डे मोहय मोहय अमुकं वशमानय स्वाहा। प्रातः स्नात्वा हविष्याशी जितेन्द्रियः शुचिर्भूत्वा प्रातः कालमारभ्य मध्यन्दिनावधिजपसमाप्ते- र्दशांशादिक्रमेण होमादींश्च कारयेत्।

जातीपुष्पैर्होमेन वशयेन्नात्र संशयः ।।३।।
कामतुल्यश्च नारीणां रिपूणां शमनोपमः ।
यावज्जीवनपर्यन्तं स्मरणं च प्रजायते ।।४।।

सर्वप्रथम प्रणव का उच्चारण करे तथा द्वितीय बार मायाबीज (ह्रीं) का उच्चारण करे। तीसरी बार **कात्वं त्वल्लाकिनी** तथा **इन्दुभूषित वामकर्ण** एवं मन्त्र पद का उच्चारण करे। तदुपरान्त **चामुण्डे**, इसके उपरान्त साध्य नाम, तत्पश्चात् **वशमानय स्वाहा** का उच्चारण करे। इस प्रकार इस मन्त्र का दश हजार जप करे। अथवा **चामुण्डे मोहय मोहय अमुकं वशमानय स्वाहा** मन्त्र का प्रात: स्नान कर, हविष्यान्न ग्रहण कर जितेन्द्रिय एवं पवित्र होकर प्रात:काल से प्रारम्भ कर मध्याह्न तक जप करके दशांश हवन करे। जातिपुष्प से होम करने पर साध्य अवश्य ही वश में हो जाता है, इसमें संशय नहीं है। इससे साधक स्त्रियों के लिये कामदेवसदृश तथा शत्रुओं के लिये यम-सदृश जीवनपर्यन्त प्रतीत होगा।।१-४।।

अन्यच्च

श्वेतापराजितामूलं पेषयेद्रोचनायुतम् ।

शतेन मन्त्रितं कृत्वा तिलकं कारयेत्ततः ।।५।।

वशयेन्नात्र सन्देहः।

श्वेत अपराजिता की जड़ को गोरोचन के साथ पीस कर उपरोक्त मन्त्र से उसे सौ बार अभिमन्त्रित कर तिलक करने पर अवश्य ही वशीकरण होता है इसमें सन्देह नहीं है।।५।।

राजवशीकरणम्

रक्तपुष्पेण चामुण्डापूजा ध्यानम्–

दंष्ट्राकोटिविशङ्कटा सुवदना सान्द्रा कृकारे स्थिता
खट्वाङ्गासिनिगूढ़दक्षिणकरा वामेन पाशांकुशा ।
श्यामा पिङ्गलमूर्द्धजा भयकरी शार्दूलचर्मावृता
चामुण्डा शववाहिनी जपविधौ ध्येया सदा साधकैः।।६।।

जप्त्व किंशुककुसुमैर्हुत्वा फलप्राप्तिः। आद्यन्ते महती पूजा पञ्चदिनप्रयोगेण राजानं वशमानयेत्।

राजवशीकरण– रक्तपुष्प से चामुण्डा का पूजन करे। ध्यान दंष्ट्राकोटिविशंकटा, सुन्दर मुखवाली, दक्षिण हस्त में खड्ग धारण करने वाली वाम हस्त में पाश एवं अंकुश धारण करने वाली, श्यामा, पिंगल अर्थात् भूरे या पीले केशों वाली, भयंकरी, शार्दूल चर्म से आवृत्त शववाहिनी श्री चामुण्डा का ध्यान जपकर्म में साधकों को सदा करना चाहिये। जप के पश्चात् टेसू (किंशुक) के फूलों से हवन करने पर फल की प्राप्ति होती है। आदि और अन्त में वृहत पूजन करने पर पाँच दिन में राजा भी वशीभूत हो जाता है।।६।।

प्रकारान्तरेण वशीकरणम्

मृगशीर्षे तु संग्राह्यं सुरक्तकरवीरकम् ।
नवांगुलं कीलकं तत् सप्तवाराभिमन्त्रितम् ।।७।।
यस्य नाम्ना खनेद्भूमौ स वश्यो भवति ध्रुवम् ।

मन्त्रः

ॐ हुँ हुँ स्वाहा।

तत्तत्स्थाने यथासंख्यामनुक्ते त्वयुतं जपेत् ।।८।।

इति क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजे गौरीश्वर-
संवादे द्वादशः पटलः।।१२।।

वशीकरण की अन्य विधि– मृगशिरा नक्षत्र में लाल कनेर का काष्ट लेकर नौ अंगुल की एक कील बनाकर उसे **ॐ हुँ हुँ** मंत्र से सात बार अभिमन्त्रित कर साध्य व्यक्ति का नाम उच्चारण कर पृथ्वी में दबा दे। जिस प्रयोग में जितना कहा गया है, उतना ही जप करे। जहाँ कुछ नहीं कहा गया है, वहाँ दस हजार बार मन्त्र का जप करे ॥७-८॥

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकर संवादात्मक
बारहवाँ पटल पूर्ण हुआ ॥१२॥

+++

अथ त्रयोदशः पटलः

विद्वेषणम्

गृहीत्वा शल्लकीकण्टं निखनेद्भूविदारतः।
कलहो जायते नित्यं शत्रोर्गेहे न संशयः॥१॥

मन्त्रः

ॐ नमो नारायणाय अमुकामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा।

साहिल के कांटे को **ॐ नमो नारायणाय अमुकामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा** मन्त्र से अभिमन्त्रित कर भूमि में दबा दे। इससे द्वेष उत्पन्न हो जाता है तथा शत्रुओं में नित्य कलह होने लगता है। अमुक अमुकेन के स्थान पर जिसका जिससे विद्वेषण कराना उनके नामों का उच्चारण करना चाहिये॥१॥

अन्यच्च

परस्परं रिपोर्वैरं मित्रेण सह निश्चितम्।
महिषाश्वपुरीषाभ्यां गोमूत्रेण समालिखेत्॥२॥
ययोर्नाम तयोः शीघ्रं विद्वेषश्च परस्परम्॥३॥

अन्य विधि– महिष तथा अश्व के मल को गोमूत्र में मिश्रित कर उससे परस्पर घनिष्ठ मित्रों का नाम लिखने पर शीघ्र ही उन मित्रों में विद्वेष उत्पन्न हो जाता है ॥२-३॥

अन्यच्च

रक्तेन महिषाश्वेन श्मशानवस्त्रके लिखेत्।

ययोर्नाम तयोः शीघ्रं विद्वेषश्च परस्परम् ।।४।।
षट्कोणचक्रमध्ये तु रिपोर्नामसमन्वितम् ।
मन्त्रं ततः प्रवक्ष्यामि महाभैरवसंज्ञकम् ।।५।।

अन्य विधि– लालरंग के भैंसे तथा घोड़े के मल को गोमूत्र में मिश्रित कर श्मशान के वस्त्र के ऊपर षट्कोण चक्र खींचकर चक्र के भीतर दोनों का नाम (जिससे जिसका विद्वेष कराना हो) लिखे। अब महाभैरवसंज्ञक मन्त्र को कहता हूँ ।।४-५।।

महाभैरवमन्त्रः

ॐ नमो भगवते श्मशानकालिके अमुकं विद्वेषय विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ ॐ फट् स्वाहा।

अनेन मन्त्रराजेन होमयेद्यत्नतः सुधीः ।
वह्निकुण्डे श्मशानाग्निं दीपयेत् खादिरैन्धसा ।।६।।
कटुतैलान्वितैः पत्रैर्निम्बस्य परिशोधितैः ।
होमयेदयुतं धीमान्साकं तिलयवाक्षतैः ।।७।।

ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकं विद्वेषय विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ ॐ फट् स्वाहा इस मन्त्र के द्वारा अग्निकुण्ड में श्मशान की अग्नि को खैर की समिधाओं से प्रज्ज्वलित कर शुद्ध किये हुये नीम के पत्ते को सरसों तेल, तिल, जौ, अक्षत से मिश्रित कर दश हजार हवन करे।।६-७।।

भावयन् कालिकां देवीं मन्त्रशीलक्षमप्रभाम् ।
व्योमनीलां महाचण्डां सुरासुरविमर्दिनीम् ।।८।।
त्रिलोचनां महारावां सर्वाभरणभूषिताम् ।
कपालकर्तृकाहस्तां चन्द्रसूर्योपरिस्थिताम् ।।९।।
शरजालधराञ्चञ्चत् प्रेतभैरववेष्टिताम् ।
वसन्तीं पितृगहने सर्वसिद्धिप्रदायिनीम् ।।१०।।
होमयेद्विविधैः पुष्पैर्वलिछागोपहारकैः ।
पूजयित्वा महेशानीं भक्तियुक्तेन चेतसा ।।११।।
एतद्भस्म समादाय धारयेदभिमन्त्रितम् ।
भस्मना तेन मनुना विद्वेषो जायते नृणाम् ।।१२।।

मन्त्रसाधक कालिका देवी का इस प्रकार ध्यान करे– आकाशसदृश नील वर्णवाली, महाचण्डा, सुर एवं असुरों का विमर्दन करने वाली, त्रिलोचना, भयानक शब्द करने वली, सभी आभूषणों से अलंकृत, हाथ में कपाल एवं कर्तरी धारण की हुई, चन्द्र-सूर्य के ऊपर स्थित, शरजाल धारण करने वाली, प्रेतों एवं भैरवों से वेष्टित, पितृगृह में निवास करने वाली, समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाली कालिका देवी की पुष्प, बलि, छाग एवं उपहारों से हवन कर भक्तियुक्त चित्त से उनकी पूजा करे। पश्चात् भस्म को अभिमन्त्रित कर धारण करे। इस भस्म से विद्वेषण होता है॥८-१२॥

मन्त्रः

ॐ द्रीं विद्वेषिणि अमुकामुकयोः परस्परयोर्विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

यह विद्वेषण मन्त्र है।

अथोच्चाटनम्

सौराारयोर्दिने ग्राह्यं नरास्थि चतुरङ्गुलम् ।
निशावसाने संलिख्य प्रधानभवने क्षिपेत् ।
सप्ताहाऽभ्यन्तरे शत्रोराशु चोच्चाटनम्भवेत् ।।१३।।

द्रूं अमुकस्योच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा। द्रूं अमुकं हन हन स्वाहा।

शनिवार अथवा मंगलवार को चार अंगुल की मनुष्य की हड्डी के ऊपर मूल में दिया गया मन्त्र (द्रूं अमुक.............स्वाहा) लिख कर रात्रि के अन्त में शत्रु के प्रधान भवन में फेंक दे। इससे एक सप्ताह के भीतर शत्रु का उच्चाटन हो जाता है ॥१३॥

स्तम्भनम्

अमुकस्य मनः स्तम्भय स्तम्भय द्रुं फट्।।

उपरोक्त मन्त्र स्तम्भनमन्त्र है।

शान्तिः

शान्तिः सर्वाभिचारस्य पञ्चगव्येन जायते ।
काम्यप्रयोगे सर्वत्र नियमोऽयुतसंख्यकः ।।१४।।

समस्त अभिचारकर्मों की शान्ति पञ्चगव्यसेवन से होती है। समस्त काम्य कर्मों में दस हजार जप करने का नियम है॥१४॥

मारणम्

महाकृत्याप्रयोगः

अतः परं महेशानि! मारणं श्रृणु पार्वति ।
येन विज्ञातमात्रेण सुसाध्यं भुवनत्रये ।।१५।।
रुद्रजाया महायोगिन्यतो गौरीपदं वदेत् ।
भुवनभयंकरीति पदं वर्मास्त्रमुच्चरेन्मनुम् ।।१६।।
अथवा प्रथमं न्यासमथातो ब्रह्मणः पदम् ।
यद्दीर्घयुक्तबीजेन चाङ्गमन्त्रेण योजना ।।१७।।
हृदयं च ततोऽङ्गेन धर्मास्त्रेण शिरःक्रमात् ।
शिखाकवचनेत्रास्त्रमेवं न्यासक्रमः स्मृतः ।।१८।।
अङ्गिराश्च ऋषिर्देवि गायत्रीच्छन्द ईरितम् ।
सिंहवक्त्रा च भूतानां भयङ्करि ततः परम् ।
महाकृत्या देवता च इत्युक्त्या न्यासमाचरेत् ।।१९।।

हे महेशानि! अब मैं मारणप्रयोग को कहता हूँ, श्रवण करो। इसके ज्ञानमात्र से तीनों भुवनों में सभी वस्तुयें सुसाध्य हो जाती हैं। रुद्रजाया महायोगिनी गौरी भुवनभयंकरि तथा वर्मास्त्र का उच्चारण करके न्यासादि कर्म मूल में लिखे अनुसार करे। हृदयादि न्यास भी करे । इसके ऋषि अंगिरा तथा छन्द गायत्री हैं। इसके पश्चात् सिंहवक्त्रा, भूत, भयंकरि; तत्पश्चात् महाकृत्या देवता का उच्चारण कर न्यास करे॥१५-१९॥

ध्यानम्

सिंहाननां कृष्णमुखीं लम्बगात्रपयोधराम् ।
दंष्ट्राकरालवदनां त्रिनेत्रां सर्वप्रोज्ज्वलाम् ।।२०।।
कृष्णकाञ्चीसमायुक्तां विधूमाग्निसमप्रभाम् ।
त्रिशूलचक्रमुशलखट्वाङ्गकरपङ्कजाम् ।।२१।।
लेलिहानमहज्जिह्वां विद्युत्पुञ्जसुभीषणाम् ।
ध्यात्वा कृत्यां विधानेन पूजयेन्मन्त्रवित्तमः ।।२२।।
ध्यात्वा कृत्यामर्च्चयेद्वै रक्तैः पुष्पैश्च वश्यके ।
कृष्णैर्मारणकृत्येषु मांसरक्तासवैः स्तुताम् ।।२३।।

सिंह के समान मुखवाली, कृष्णमुखी, लम्बगात्रपयोधर, तीखे दाँतों वाली, करालवदना, तीन नेत्र वाली, उज्ज्वल वर्ण वाली, कृष्णकांची से युक्त, प्रज्ज्वलित अग्नि के सदृश कान्ति वाली, त्रिशूल, चक्र, मुशल, खट्वांग को अपने करकमलों में धारण करने वाली, जिह्वा से होंठों को चाटती हुई, विद्युत् पुञ्ज के समान भीषण तेजवाली कृत्या देवी का विधिवत् ध्यान व पूजन करे। वशीकरण में कृत्या देवी का पूजन लाल पुष्पों से करे। मारण कर्म में कृष्ण पुष्प, मांस एवं रक्तासव से पूजन कर स्तुति करे॥२०-२३॥

कृत्याञ्च मदनां कुमार्यश्वच्छादिनीं तथा ।
भीषणां श्रीमतीं चैव प्रतिष्ठाञ्च ततः परम् ॥२४॥
विद्यामभ्यर्चयेदष्टपत्रेषु हि सुलोचनाम् ।
पूर्वे तु शांकरीं नाम शुक्लवर्णां वरान्विताम् ॥२५॥
द्विभुजां सौम्यवदनां पाशांकुशधरां शिवाम् ।
दक्षिणे भीषिकां नाम लम्बजिह्वां सुधामुखीम् ॥२६॥
कृष्णवर्णां रक्तमुखीं रक्तमालानुलेपनाम् ।
चतुर्भुजां सिंहनादां महाघोषां कपालिनीम् ॥२७॥
खड्गहस्तां शिरोमालां सर्वाभरणभूषिताम् ।
पश्चिमे वारुणीं नाम स्वर्णवर्णां हसन्मुखीम् ॥२८॥
सुरुद्रमालिकां शुभ्रदंष्ट्रामभयदां सदा ।
उत्तरे भीमिकां नाम चतुर्हस्तां भयङ्करीम् ॥२९॥

मदना, कुमार्यश्वच्छादिनी, भीषणा, श्रीमती— ऐसी कृत्या देवी की प्रतिष्ठा कर अष्ट कमलदल में विद्यारूपी सुलोचना श्रीकृत्या देवी का पूजन करे। पूर्व में शांकरी, शुक्लवर्णा, वरान्विता, द्विभुजा, सौम्यवदना, पाशांकुशधरा, शिव— इन नामों से पूजन करे। दक्षिण भाग में भीषिका, लम्बजिह्वा, सुधामुखी, कृष्णवर्णा, रक्तमुखी, रक्तमाल्यानुलेपना, चतुर्भुजा, सिंहनादा, महाघोषा, कपालिनी, खड्गहस्ता, शिरोमाला, सर्वाभरणभूषिता— इन नामों से पूजन करे। पश्चिम भाग में वारुणी, स्वर्णवर्णा, हसन्मुखी, सुरुद्रमालिका, शुभ्रदंष्ट्रा, अभयदा नामों से पूजन करे। उत्तर भाग में भीमिका, चतुर्हस्ता तथा भयंकरी नामों से पूजन करे॥२४-२९॥

पूजयित्वा जपेन्मन्त्रं नित्यमष्टोत्तरं शतम् ।
अवाप्य विनियोगस्तु कर्तव्यो मन्त्रिणा सदा ॥३०॥

कालं विदित्वा प्रतिमां मधूच्छिष्टेन कारयेत् ।
द्वादशांगुलकं शत्रोर्नखलोमसमन्वितम् ।।३१।।
हृदये नामधेयञ्च फट्कारञ्च सममर्मके ।
अस्य प्राणान् प्रतिष्ठाप्य मरिचैर्लेपयेत्ततः ।।३२।।
मृतब्राह्मणचाण्डालकेशाभ्यां पादयोः पृथक् ।
बद्ध्वा करे करमये तोरणे चाऽप्यधोमुखम् ।।३३।।
तस्याधो मेखलायुक्तं त्रिकोणं तत्र कुण्डकम् ।
तत्र शारं विधायाग्निं परिस्तीर्य शरैस्तृणैः ।।३४।।
विभीतकं परीधाय कल्पयेद्यस्य मारणम् ।
जुहुयान्निम्बतैलाक्तैः काकोलूकस्य पुच्छकैः ।।३५।।
दारयैनं शोषयैनं मारयेत्यभिधाय च ।
अष्टोत्तरशतेनैव मनुना विधिना ततः ।।३६।।
होमान्ते विधिवत् कृत्वा बाह्ये अग्नेश्च सन्निधौ ।
यो मे द्वेष्टि जनः कश्चिद्दूरस्थो वान्तिकेऽपि च ।।३७।।
पिब कृत्येऽमुकं तस्य हुमित्युक्त्वा निवेदयेत् ।
संरक्ष्याग्निं विधानेन नवरात्रं समाचरेत् ।।३८।।
हुनेद्यावत्तावदस्य भवेदेव रिपोर्मृतिः ।
अर्कक्षीरे च मरिचं पिष्ट्वा सिद्धार्थमेव च ।।३९।।
जलैः संलोड्य मन्त्रेण रिपुं ध्यात्वा निरुद्धदृक् ।
कृष्णाम्बरोत्तरीयाग्रपादेनाक्रम्य तद्रिपुम् ।।४०।।
वज्रशूलमिति ध्यात्वा तस्योपरि तु निक्षिपेत् ।
नवरात्रात् परे शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः ।।४१।।

कृत्या देवी के पूजन के पश्चात् प्रतिदिन एक सौ आठ बार मन्त्र का ज करे, जप से विनियोग करे। पुरश्चरण काल को ज्ञात कर मोम से प्रतिमा क निर्माण करे। बारह अंगुल की शत्रु की नख-लोमसहित प्रतिमा बनाये। प्रतिमा वे हृदय में शत्रु के मर्म में 'फट्' लिखे। शत्रु के प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठा करवे सर्वाङ्ग में मिर्च का लेप करे। मृत ब्राह्मण एवं मृत चाण्डाल के केशों से प्रतिम के हाथ-पैर बाँध कर उल्टे मुख तोरण में लटका दे एवं उस प्रतिमा के नीं

मेखलायुक्त त्रिकोण कुण्ड स्थापित करे। उस कुण्ड में अग्नि स्थापित कर तृण एवं शर से अग्नि को आच्छादित कर, बहेड़े की माला धारण कर, कौआ एवं उल्लू— इन दोनों की पूँछ को नीम के पत्ते एवं सरसों तेल में मिलाकर हवन करे। हवन के समय **दारय, शोषण, मारय** इन तीन शब्दों का उच्चारण करता रहे। विधिपूर्वक एक सौ आठ बार मन्त्र द्वारा हवन करे। पुन: अग्नि के सान्निध्य में इस प्रकार कहे— हे कृत्ये! दूर देश में रहने वाला अथवा समीप में रहने वाला जो भी कोई मेरा शत्रु हो, उसके रक्त का पान करो। इस प्रकार कह कर मन्त्र के अन्त में **'हुँ'** बीज मिश्रित करके आहुति प्रदान करे। विधिपूर्वक अग्नि की रक्षा कर नवरात्रि तक अथवा जब तक शत्रु का मारण न हो, तब तक नियमपूर्वक हवन करता रहे। आक (मदार) के दूध में मिर्च पीसकर एवं मन्त्रोच्चारण करके जल मिलाकर शत्रु का ध्यान करे तथा काले वस्त्रों से वेष्टित उस शत्रुप्रतिमा को पैर के अंगूठे से स्पर्श कर एवं वज्रशूल का ध्यान कर उस मिर्चमिश्रित जल को प्रतिमा पर छिड़क दे। इससे नवरात्रि के पश्चात् अवश्य ही शत्रु का मारण होता है; इसमें संशय नहीं है।।३०-४१।।

वटुकभैरवप्रयोगः

अतः परं महेशानि! शृणुष्व कर्मसिद्धिदम् ।
वटुकं विमलाऽङ्गाख्यं पूजयेत् षट्सु कर्मसु ।।४२।।

आचम्य स्वस्तिवाचनसूक्तं पठित्वा

अभ्यर्च्य च शिरःपद्मे श्रीगुरुं करुणामयम् ।।४३।।

हे महेशानि! अब कर्मसिद्धिदायक वटुकभैरव का श्रवण करो। जिनके विमल अङ्ग हैं, उन श्री वटुकभैरव का पूजन समस्त षट्कर्मों में करना चाहिये। आचमन एवं स्वस्तिवाचन सूक्त का पाठ कर स्वयं के सहस्रार कमल में श्रीगुरुदेव का पूजन करे।।४२-४३।।

सङ्कल्पः

अद्येत्याद्यमुकगोत्रान्तनामग्रहविशिष्टोपशमनपूर्वकारोग्यायुर्वृद्धिकामो गणेशदिपूजापूर्वकवटुकपार्थिवशिवपूजनमहं करिष्ये।

गुरु-पूजन के पश्चात् यह संकल्प करे।

शान्तिकादौ

रतिं च पूजयेदादौ क्षेत्रपालं ततः पुनः।

रुद्रं च पूजयेद्देवि ध्यानं शृणु महामते!।।४४।।

शान्ति आदि कर्म में सर्वप्रथम रति का पूजन करे; तदुपरान्त क्षेत्रपाल का पूजन करे। हे देवि! रुद्र का भी पूजन करे। हे महामते! अब ध्यान को कहता हूँ; श्रवण करो।।४४।।

प्रणवाद्यं ध्यानम्

शूलहस्तं महारौद्रं सर्वविघ्ननिषूदनम् ।
पूर्णचन्द्रसमाभासं रुद्रं वृषभवाहनम् ।
एवं ध्यात्वा महाकालीं पूजयेद्रुद्रदैवतम् ।।४५।।

प्रणवाद्यं रुद्राय नमः इतिभक्तियोगतः शततोलकपरिमितलिङ्गमानीय कांस्यपात्रे लिङ्गं संस्थाप्य।

सामान्यार्घ्यं ततः कृत्वा भूतशुद्धिं महेश्वरि ।
प्राणायाममङ्गन्यासं पीठन्यासं समाचरेत् ।।४६।।

हाथ में त्रिशूल धारण किये हुये महारौद्रस्वरूप, सर्वविघ्नविनाशक पूर्ण चन्द्र के समान आभा वाले, वृषभवाहन श्रीरुद्र का हम ध्यान करते हैं। इस प्रकार ध्यान करके भगवती महाकाली एवं रुद्रदेव का पूजन करे। प्रणवाद्य श्रीरुद्र को नमस्कार है। भक्तिपूर्वक सौ तोले के परिमाण का शिवलिङ्ग लाकर उसे कांस्य पात्र में स्थापित करे। सामान्य अर्घ्य प्रदान करे। हे महेश्वरि! भूतशुद्धि, प्राणायाम, अंगन्यास एवं पीठन्यास भी करे।।४५-४६।।

ततः ऋष्यादिन्यासः। ततो देहन्यासः। यथा मूर्ध्नि ॐ भैरवाय नमः। एवं ललाटे भीमदर्शनाय नमः। नेत्रयोः भूताश्रयाय नमः। मुखे तीक्ष्णदर्शनाय नमः। कर्णयोः क्षेत्रपाय नमः। हृदि क्षेत्रपालाय नमः। नाभिदेशे क्षेत्राख्याय नमः। कट्यां सर्वाघनाशनाय नमः। ऊर्वोस्त्रिनेत्राय नमः। जंघयोः रक्तपाणिकाय नमः। पादयोः देवदेवेशाय नमः। सर्वाङ्गे वटुकाय नमः।।

तत्पश्चात् ऋष्यादि न्यास करे। तदुपरान्त देहन्यास करे। जैसे— **मूर्ध्नि भैरवाय नमः** मन्त्र से मस्तक का स्पर्श करे। इसी प्रकार मूल में उल्लिखित तत्तत् मन्त्रों से ललाटादि सर्वाङ्ग का स्पर्श करे।

करान्गन्यासः

ॐ ह्रीं वाँ अंगुष्ठभ्यां नमः इत्यादि। ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः इत्यादि।

ततो मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यायेत्। ॐ वन्दे बालमित्यादि संपूज्य–

द्वाविंशदक्षरञ्चैवं जपेद्रुद्रसहस्रकम् ।
अभिषेकं तर्पणञ्च यथाविधि समाचरेत् ।।४७।।
एषा शान्तिर्महाशान्तिः कथिता तव श्रद्धया ।।४८।।

तत्पश्चात् करांगन्यास करे। **ॐ ह्रीं वां अगुष्ठाभ्यां नमः** इस मन्त्र से दोनों हाथों के अगूठों का स्पर्श करे। **ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः** मन्त्र से हृदय का स्पर्श करे। तत्पश्चात् मूल मंत्र से व्यापक करन्यास कर ध्यान करे। ॐ वन्दे बालमित्यादि ध्यानमन्त्र से ध्यान करे। बाइस अक्षर के मन्त्र का ग्यारह हजार जप करे। अभिषेक एवं तर्पण यथाविधि करे। हे देवि! यह शान्ति एवं महाशान्ति तुम्हारी श्रद्धा से मैने कहा है।।४७-४८।।

वशीकरणम्

पूर्ववत् संकल्प्य राजसध्यानेन ॐ उद्यद्भास्करादि ध्यात्वा।

वशीकरण– पूर्व की भाँति संकल्प करके ॐ उद्यद्भास्करादि मन्त्र से राजस ध्यान करे।

स्तम्भनम्

अतः परं महादेवि! पूजनं क्रूरकर्मणि ।।४९।।

पूर्ववत् संकल्प्य विद्वेषणोच्चाटनादिषु च क्रूरकर्मसु ध्यानम्। यथा– ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तमित्यादि ध्यात्वा सम्पूज्य शिवसहस्रसंख्याकमुक्तं शेषे अमुकं वशमानय स्वाहा इति मन्त्रजपकर्माहं करिष्ये।

हे महादेवि! अब मैं क्रूर कर्म हेतु पूजन-विधान को कहता हूँ। पूर्व की भाँति संकल्प करके कार्य करे। विद्वेषण, उच्चाटन आदि क्रूर कर्मों में **ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तम्** श्लोक द्वारा ध्यान करके पूजन करे तथा ग्यारह हजार जप करे।।४९।।

यन्त्रे पूजाक्रमः

पुनर्ध्यात्वा यन्त्रे पुष्पं निधाय आवाहनादिकं कुर्यात्। यथा तत्र क्रमः:– मूलादि सद्योजातमन्त्रेणावाहनम्। यथा मूलं ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः। भवेऽभवेऽनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः। पिनाकधृगिहागच्छ इहागच्छ। पुनर्मूलमुच्चार्य ॐ वामदेवाय नमः एवं ज्येष्ठाय रुद्राय कालाय कलविकरणाय बलाय बलविकरणाय बलप्रमथनाय सर्वभूतदमनाय नमो नमः। उन्मनाय नमः इह तिष्ठ इह तिष्ठ मूलं इह सन्निधेहि।

यन्त्रपूजाक्रम– पुनः ध्यान कर यन्त्र में पुष्पादि स्थापित कर आवाहनां कार्य करे। **आवाहन–** ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नम भवेऽभवेनातिभवेभवस्य मां भवोद्भवाय नमः। पिनाकधृग् इहागच्छ इहागच्छ तत्पश्चात् मूल मन्त्र का उच्चारण कर निम्न मन्त्रों से आवाहन करे—

ॐ वामदेवाय नमः। ॐ ज्येष्ठाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ काला नमः। ॐ कलविकरणाय नमः। ॐ बलाय नमः। ॐ बलविकरणा नमः। ॐ बलप्रमथनाय नमः। ॐ सर्वभूतदमनाय नमो नमः। ॐ उन्मना नमः। इह तिष्ठ इह तिष्ठ मूलं इह सन्निधेहि।

उपरोक्त प्रकार से आवाहन कर पूजन करे।

अघोरेण सन्निरोधनम्

पुनर्मूलं ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्योऽघोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ नमोऽस्तु ते रुद्ररूपेभ्यः। इह सन्निरुद्धस्व।

अघोरमन्त्र से सन्निरोधन करे। अघोर मन्त्र मूल में (ॐअघोरे......रुद्ररूपेभ्य लिखा है।

तत्पुरुषेण योनिमुद्राप्रदर्शनम्

पुनर्मूलम्। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदया इति योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।

तत्पुरुषेण इस मन्त्र के द्वारा योनिमुद्रा दिखाये। तत्पश्चात् मूलमन्त्र व जप करे एवं **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्** इ शिवगायत्री के द्वारा योनिमुद्रा का प्रदर्शन करे।

ईशानेन वन्दनामिति। पुनर्मूलम् । ओं ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूता ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवो मेऽस्तु सदाशिव ॐ। शिवं वन्दयामि नमः। तत प्राणप्रतिष्ठा। आँ ह्रीं क्रों हंसः वटुकाय नमः पशुपते शूलपाणेः प्राणा इ प्राणाः जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि। चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहागत्य सुर चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। हुँ इत्यवगुण्ठ्य। वमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत छोटिकाभिर्दिग्बन्धनं कृत्वा षडङ्गानि सम्पूज्य देवं पूजयेत् ।

ईशान मन्त्र से वन्दना करे। पुनः मूलमन्त्र— **ॐ ईशान सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्मधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवः ॐ शिवं वन्दयामि नमः।** इन मन्त्रों के द्वारा शिवजी की वन्दना करे। तत्पश्चा

प्राणप्रतिष्ठा करे। **आँ ह्रीं क्रों हंसः वटुकाय नमः पशुपते शूलपाणेः प्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा** मन्त्र के द्वारा प्राणप्रतिष्ठा करे। **हुं** बीज का अवगुण्ठन कर **वं** बीज के द्वारा धेनुमुद्रा दिखाये एवं अमृतीकरण करे। ताली द्वारा दिग्बन्धन एवं षडंगपूजन कर श्री महादेव का पूजन करे।

मूलमुच्चार्य एतत् पाद्यम् । ॐ महादेवाय सोममूर्तये बटुकत्मने पशुपतये शिवाय नमः। एवं क्रमेणार्घ्याचमनीयादिकं दद्यात् । स्नाने तु विशेषः। यथा— अद्येत्यादि अमुकस्याऽशेषाशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहारिष्टोपशमनारोग्यायु-र्वृद्धिकामनया शततोलकपरिमितदुग्धेन वटुकात्मकपशुपतेर्लिङ्गं स्नापयामि। ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि इत्यादिना स्नापयेत् । ततो जलेन स्नापयित्वा मूलम्। एवं गन्धः। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः। पुष्पे तु अद्येत्यादि उक्तवत् कामनया बटुकात्मकपशुपतये शिवायाष्टोत्तशतद्रोणपुष्पाण्यहं सम्प्रददे। मूलमुच्चार्य ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः। इति मन्त्रेण एकं एकं कृत्वा दद्यात्। एवं बिल्वपत्रम् । मधुपर्कं धूपदीपे तु गन्धवत् । नैवेद्यम्। अद्येत्यादि-स्नानीयवत् कामनया एतत् सोपकरणशततोलकपरिमितातपतण्डुलनैवेद्यं बटुकात्मकपशुपतये शिवाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः। शततोलकपरिमितसंविदाचूर्णं पानीयं ताम्बूलं च पूर्ववत् संकल्प्य दद्यात्।

मूलमन्त्र का उच्चारण कर **ॐ महादेवाय सोममूर्तये बटुकात्मने पशुपतये शिवाय नमः** इस मन्त्र के द्वारा शिवजी को पाद्य प्रदान करे। इसी क्रम से अर्घ्य-आचमन आदि करे। स्नान कुछ विशेष है। सर्वप्रथम संकल्प करे- अद्येत्यादि अमुकस्याशेषाऽशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहारिष्टोपशमनारोग्यायुर्वृद्धिकामनया शततोलकपरिमितदुग्धेन बटुकात्मकपशुपतेर्लिङ्गं स्नापयामि। **ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि** इस मन्त्र के द्वारा शिवजी को जल से स्नान कराये तथा मूल मन्त्र का जप करे। **महादेवाय सोममूर्तये नमः** मन्त्र से गन्ध प्रदान करे। पुष्प भी संकल्प करके चढ़ाये। संकल्प मूल में लिखा है। तत्पश्चात् मूलमन्त्र का उच्चारण करे। **ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः** इस मन्त्र से एक-एक पुष्प शिवप्रतिमा के ऊपर चढ़ाये। इसी भाँति बिल्वपत्र, मधुपर्क, धूप-दीप, गन्ध-नैवेद्य मूल में लिखे संकल्प के द्वारा अर्पण करे तथा ताम्बूल एवं पूंगीफल भी संकल्प द्वारा अर्पण करे।

वशीकरणमन्त्रे मूलमुच्चार्य ॐ भवाय जलमूर्तये वटुकात्मने शिवाय नमः। एवंक्रमेण पूजयेत्। एवमर्घ्याचमनीयं दद्यात्। स्नाने तु अद्येत्यादि

अमुकस्यामुकवशीकरणार्थ शततोलकपरिमितघृतेन मधुताना व बटुकात्मक पाशुपतशिवलिङ्गं स्नापयामि मूलमुच्चार्य। एवं गन्धः ॐ भवाय जलमूर्तये पुष्पे तु अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थम् अष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पं बटुकात्म पशुपतिशिवायाऽहं सम्प्रददे। मूलमुच्चार्य एतत् द्रोणपुष्पं ॐ भवाय जलमूर्त नमः इति प्रत्येकम्। एवं बिल्वपत्रम्। धूपदीपे तु ॐ भवाय जलमूर्तये नमः नैवेद्यं तु अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थं शततोलकपरिमितसोपकरणनैवे ॐ वटुकात्मकपशुपतिशिवायाऽहं सम्प्रददे। मूलमुच्चार्य एतत् सोपकरणशत तोलकपरिमितनैवेद्यं संविदाचूर्णञ्च ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। ततः पानार्थोदक आचमनीयं ताम्बूलं च दद्यात्।

वशीकरण मन्त्र– मूलमन्त्र का उच्चारण करे। **ॐ भवाय जलमूर्त बटुकात्मने शिवाय नमः** इस क्रम के अनुसार पूजन करे तथा अर्घ्य आचम प्रदान करे। स्नान का संकल्प मूल में लिखा है। मूलमन्त्र का उच्चारण कर **ॐ भवाय जलमूर्तये नमः** इस मन्त्र के द्वारा गन्ध प्रदान करे। पुष्प संकल्प द्वा प्रदान करे। मूलोक्त मूल मन्त्र का उच्चारण कर **ॐ भवाय जलमूर्तये नमः** इ मन्त्र के द्वारा अलग-अलग द्रोणपुष्प चढ़ाये एवं बिल्वपत्र चढ़ाये। **ॐ भवा जलमूर्तये नमः** मन्त्र से धूप-दीप प्रदान करे। तत्पश्चात् संकल्प द्वारा नैवेद्य प्रदा करे। मूलमंत्र का उच्चारण कर **ॐ भवाय जलमूर्तये नमः** इस मन्त्र के द्वा नैवेद्य, जल, ताम्बूल एवं पूगीफल आदि प्रदान करे।

ततः अष्टावरणं पूजयेत्। ततोऽष्टमूर्तिं पूजयेत्। ततो मूलेन पुष्पाञ्जलित्र दत्त्वा संकल्प्य शिवसहस्रसंख्याकं तन्मन्त्रं जपेत् शान्तिकादौ क्रूरकर्मण्यपि ततो गुह्यादिना जपं समाप्य स्तोत्रादिकं पठेत् ।

तदुपरान्त आठ आवरण पूजन करके अष्टमूर्ति का पूजन करे। पुनः मू मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान कर ग्यारह हजार शिवमन्त्र का जप करे। शान्ति आ कर्म में भी ग्यारह हजार शिवमन्त्र का जप करे। तत्पश्चात् गुह्यादि मन्त्र जप क समाप्त कर स्तोत्रादि का पाठ करे।

ततो बलिदानम्। यथा– मूलमुच्चार्य बटुकभैरवाय एष बलिर्नमः। भैरवपरिवारगणैः सह मम शत्रून् सरुधिरं पिव पिव इमं बलिं गृह्णगृह स्वाहा।

ॐ शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने ।

भक्षय स्वगणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितम् ।।५०।।

ततो विहितद्रव्यैः अष्टोत्तरशतं सहस्रं वा होमयेत् ।

तत्पश्चात् बलिदान-विधि कहते हैं। मूलमन्त्र का उच्चारण कर **बटुकभैरवाय** **[ए]ष बलिर्नमः** इस मन्त्र से वलि प्रदान करे। **भैरवपरिवारगणैः सह मम शत्रून्** **[श]रुधिरं पिब पिब इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा** इस मन्त्र का बलि देते समय [उ]च्चारण करे। **ॐ शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने। भक्षय स्वगणैः** **[स]ार्द्धं सारमेयसमन्वितम्।** यह समस्त मन्त्र बलिप्रदान के समय उच्चारण के [प]श्चात् पूर्वोक्त कर्मानुसार द्रव्यों के द्वारा एक सौ आठ अथवा एक हजार आठ [आ]हुतियाँ प्रदान करे।।५०।।

वशीकरणे तु घृताक्तराजिकाभिरष्टोत्तरसहस्रहोमः। शान्त्यर्थं दूर्वादिकम्। **[क्]रूरकर्मणि बिल्वपत्रम्। उच्चाटने तु ॐ ह्रीं हुं शिवाय स्वाहा। इति विशेषः।** **[द]क्षिणां बटुकात्मकपशुपतये शिवाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। श्वेतसर्षपं लवणमिति।**

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे उमामाहेश्वर-
संवादे त्रयोदशः पटलः।।१३।।

वशीकरण कर्म में घी से मिश्रित राई से एक हजार आठ बार होम करे। [श]ान्ति कर्म के लिये दूर्वा से तथा क्रूर कर्म में बिल्वपत्र से हवन करे। उच्चाटन [प्र]योग में ॐ ह्रीं हुं शिवाय स्वाहा इस मन्त्र द्वारा हवन करे। मंत्र द्वारा दक्षिण[ा प्र]दान करे तथा सफेद सरसों एवं लवण (नमक) से हवन करे।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकर
संवादात्मक तेरहवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१३।।

+++

अथ चतुर्दशः पटलः

षट्कर्मणां कवचं शत्रुमर्दनम्

श्रीदेव्युवाच

श्रुतं वटुकमाहात्म्यं पूर्णविस्मयकारकम् ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वै षट्कर्मणाम् ।।१।।

शत्रुसंहारक षट्कर्म कवच– श्री देवी जी ने कहा— हे प्रभु! विस्मयकारक

बटुकमाहात्म्य का मैंने श्रवण किया। अब मेरी इच्छा षट्कर्म कवच श्रवण कर की है। कृपा करिये आप उसे कहिये॥१॥

श्रीश्वर उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
श्रवणात् पठनाद्वापि शत्रुनाशाय तत्क्षणात् ।।२।।

श्री ईश्वर ने कहा– हे देवि! श्रवण करो; तुम्हारी प्रसन्नता हेतु षट्कर्मकवच का वर्णन करता हूँ। इस कवच का श्रवण करने अथवा पाठ कर से शत्रु का नाश होता है॥२॥

श्रीदेव्युवाच

त्रैलोक्यमोहनार्थं तु कवचं मे प्रकाशय ।
त्रैलोक्यशत्रुं संहन्तु नाशितं यत्क्षमं भवेत् ।।३।।
एवमुक्तो महादेवः क्रुद्धो भूत्वा जगत्पतिः ।
देवीं प्रबोधयामास वाक्येनामृतवर्षिणा ।।४।।

श्रीदेवी जी ने कहा– हे प्रभु! त्रैलोक्यमोहन हेतु कवच का वर्णन क जिस कवच के पाठमात्र से तीनों लोक के शत्रु नष्ट हो जाते हैं। देवी पार्वती के वच सुनकर भगवान् शिव क्रोधित होकर उन्हें अमृतवर्षिणी वाणी से समझाने लगे॥३-४

श्रीमहादेव उवाच

परानिष्टे महादेवि! कुतस्ते जायते मतिः ।।५।।

श्री महादेव ने कहा– हे महादेवि! दूसरों के प्रति आपके मन में अनि की भावना किस प्रकार उत्पन्न हो गयी?॥५॥

श्रीदेव्युवाच

जिघांसन्तं जिघांसीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत् ।
ये यथा मां प्रपद्यन्ते श्रुतिरस्ति पुरातनी ।।६।।
यदि ते वर्तते देव दया हि कथ्यतां मयि ।
शत्रूणां प्राणनाशार्थमुच्चाटनवशीकृतौ ।।७।।
तेषां हि बलनाशार्थं सर्वदा प्रयता नराः ।।८।।

श्री देवीजी ने कहा– हे प्रभु! श्रुति का ऐसा वचन है कि जो मार योग्य हो, उसे अवश्य ही मारना चाहिये। उसे मारने से ब्रह्महत्यादि का दोष न

लगता। हे भगवन्! यदि आपकी मेरे ऊपर कृपा है तो शत्रुप्राणनाशक— उच्चाटन तथा वशीकरण आदि कर्मों को मुझसे कहिये; क्योंकि मनुष्य शत्रु के बलनाशहेतु अनेक उपाय किया करते हैं॥६-८॥

ईश्वर उवाच

श्रृणु देवि! महाभागे! कालाग्निप्राणवल्लभे ।
यस्य धारणमात्रेण शत्रूणां नाशनं भवेत् ।।९।।
धृत्वा तु पादमूलेन स्पृष्ट्वा दास इवाकरोत् ।
शरणागतमात्रन्तु नाशितुं नैव शक्यते ।।१०।।
श्रृणु देवि! महाभागे सावधानावधारय ।
शत्रूणां प्राणनाशार्थं कुपितः काल एव सः ।।११।।

श्री शिवजी ने कहा– हे देवि! हे महाभागे! हे कालाग्निप्राणवल्लभे! श्रवण करो। जिसके धारण करने मात्र से शत्रु का नाश हो जाता है, उस कवच का श्रवण करो। पैर के मूल में इस कवच को धारण करके शत्रु का स्पर्श करने पर शत्रु दास की भाँति सदैव आज्ञा पालन करता रहता है। उस शरणागत की नाश करने की आवश्यकता नहीं है। हे देवि! हे महाभागे! सावधान होकर श्रवण करो। शत्रु के नाश हेतु यह कवच कुपित काल के समान है॥९-११॥

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ।
कोटिसूर्यप्रभा काली मम शत्रून् विनाशय ।
नाशयित्वा क्षणं देवि अन्यशत्रून् विनाशय ।।१२।।

क्रीं क्रीं क्रीं उग्रप्रभे विकटदंष्ट्रे परपक्षं मोहय मोहय पच पच मथ मथ दह दह हन हन मारय मारय ये मां हिंसितुमुद्यता योगिनीचक्रैस्तान् वारय वारय छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि करालिनि गृह्णगृह्ण ओं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्फूर स्फूर पूर पूर पून पून चूल्व चूल्व धक धक धम धम मारय मारय सर्वजगद्वशमानय ओं नमः स्वाहा।

यह भद्रकाली कवच है। शत्रुनाश के लिये इसी का पाठ करना चाहिये॥१२॥

इति ते कवचं देवि! भद्रकाल्या प्रचोदितम् ।
भूर्जे विलिखितश्चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ।।१३।।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि ।

त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात्त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात् ।।१४।।
पुत्रवान्धनवान्धीमान् नानाविद्यानिधिर्भवेत् ।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः ।।१५।।
शत्रवो नाशमायान्ति रजतेन प्रधारितम् ।
मासमात्रेण शत्रूणां महविपदकारणम् ।।१६।।
यं यं शत्रुं स्मरन्मर्त्यः कवचं पठति ध्रुवम् ।
तं तं नाशयते सद्यस्तथ्यं ते तद्वदाम्यहम् ।।१७।।
धारणे भजते शत्रुः कण्ठशोषं सदा भवेत् ।
हृत्कम्पो जायते तावद्यावत्तस्य कृपा न चेत् ।।१८।।

हे देवि! इस प्रकार भद्रकाली कवच को तुमसे कहा। यदि इस कवच व भोजपत्र पर लिखकर स्वर्ण से वेष्टित कर शिखा, दाहिनी भुजा एवं कण्ठ धारण किया जाय तो साधक तीनों लोकों को मोहित कर सकता है तथा अप क्रोध से क्षण भर में ही तीनों लोकों का नाश भी कर सकता है। साथ ही पुत्रा पुत्र को, धनार्थी धन को एवं विद्यार्थी अनेक प्रकार की विद्याओं को प्राप्त क सकता है। इस कवच को उक्त विधि से लिखकर चांदी के ताबीज में पूर्वोक्त अं पर धारण किया जाय तो उस साधक के शरीर के स्पर्श मात्र से ही ब्रह्मास्त्रादि शस् शत्रु का नाश कर देते हैं। इसके अनुष्ठान के एक महीने पूर्व ही शत्रु महाविप से ग्रस्त हो जाता है। साधक जिस-जिस शत्रु का स्मरण कर इस कवच का पा करता है, उस-उस व्यक्ति का नाश अवश्य ही हो जाता है। शत्रु का ध्यान क यदि इस कवच को स्वयं के गले में धारण किया जाय तो शत्रु का कण्ठ सूख लगता है तथा शरीर कांपने लगता है और जब तक देवी भद्रकाली की कृपा न हो तब तक वह कांपता ही रहता है।।१३-१८।।

मोहनकवचम्

ईश्वर उवाच

त्रिकालं गोपितं देवि! कलिकाले प्रकाशितम् ।
न वक्तव्यं न द्रष्टव्यं तव स्नेहात् प्रकाश्यते ।।१९।।
काली दिगम्बरी देवि! जगन्मोहनकारिणी ।
तच्छृणुष्व महादेवि! त्रैलोक्यमोहनन्त्विदम् ।।२०।।

मोहन कवच– हे देवि! यह कवच तीनों कालों (सत्य, त्रेता, द्वापर) में गोपनीय रहा है और अब कलियुग में प्रकट हो रहा है। मैंने अब तक इसे न तो किसी से कहा है और न ही किसी को दिया है; तुम्हारे स्नेह से ही इसे प्रकाशित कर रहा हूँ। हे देवि! विश्व को मोहित करने वाली दिगम्बरा महाकाली के इस कवच को श्रवण करो। यह कवच त्रिभुवन को मोहित करने वाला है॥१९-२०॥

अस्य महाकालभैरव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्मशानकालिका देवता सर्वमोहने विनियोगः।

ऐं क्रीं क्रूं क्रः स्वाहा विवादे पातु मां सदा ।
क्लीं दक्षिणकालिकादेवतायै सभामध्ये जयप्रदा ॥२१॥
क्रीं क्रीं श्यामांगिन्यै शत्रुं मारय मारय ।
ह्रीं क्रीं क्रीं क्लीं त्रैलोक्यं वशमानय ॥२२॥
ह्रीं श्रीं क्री मां रक्ष रक्ष विवादे राजगोचरे ।
द्वाविंशत्यक्षरी ब्रह्म सर्वत्र रक्ष मां सदा ॥२३॥
कवचे वर्जिते यत्र तत्र मां पातु कीलका ।
सर्वत्र रक्ष मां देवि श्यामा तूग्रस्वरूपिणी ॥२४॥
एतेषां परमं मोहं भवद्भाग्ये प्रकाशितम् ।
सदा यस्तु पठेद्वापि त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥२५॥
इदं कवचमज्ञात्वा पूजयेद्घोररूपिणीम् ।
सर्वदा स महाव्याधिपीड़ितो नात्र संशयः ॥२६॥
अल्पायुः स भवेद्रोगी कथितं तव नारद ।
धारणं कवचस्यास्य भूर्जपत्रे विशेषतः ॥२७॥
सयन्त्रं कवचं धृत्वा इच्छासिद्धिः प्रजायते ।
शुक्लाष्टम्यां लिखेन्मन्त्रं धारयेत् स्वर्णपत्रके ॥२८॥
कवचस्यास्य माहात्म्यं नाहं वक्तुं महामुने ।
शिखायां धारयेद्योगी फलार्थी दक्षिणे भुजे ॥२९॥
इदं कल्पद्रुमं देवि तव स्नेहात् प्रकाश्यते ।
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं महामुने ॥३०॥

इस कवच के ऋषि महाकालभैरव, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्मशानकालिका

तथा विनियोग सर्वमोहन है। **ऐं क्रीं क्रूं क्रः स्वाहा विवादे पातु मां सदा क्लीं दक्षिणकालिका देवतायै सभामध्ये जयप्रदा क्रीं क्रीं श्यामांगिन्यै शत्रुं मारय मारय ह्रीं क्रीं क्लीं त्रैलोक्यं वशमानय ह्रीं श्रीं क्रीं मां रक्ष रक्ष विवादे राजगोचरे द्वाविंशत्यक्षरी ब्रह्म सर्वत्र रक्ष मां सदा।** कालिका देवी मेरी रक्षा करें। उग्रस्वरूपिणी श्यामा सर्वत्र मेरी रक्षा करें। हे देवि! यह कवच तुम्हारे लिये ही प्रकाशित किया है। जो व्यक्ति इसका सदा पाठ करता है, उसके वश में तीनों लोक रहते हैं। इस कवच के ज्ञान के विना जो व्यक्ति घोररूपिणी कालिका का पूजन करेगा; हे नारद!वह सदा महाव्याधिग्रस्त, पीड़ित, अल्पायु एवं रोगी होगा। इस कवच को भूर्जपत्र (भोजपत्र) पर अंकित कर धारण करने से इच्छासिद्धि होती है। इसे शुक्लपक्ष की अष्टमी को भोजपत्र पर अंकित कर स्वर्णपात्र में वेष्टित कर धारण करना चाहिये। हे महामुने! इस कवच के माहात्म्य को मैं भी कहने में समर्थ नहीं हूँ। योगी को इसे शिखा में तथा फलार्थी को दाहिनी भुजा में धारण करना चाहिये। हे देवि! तुम्हारे स्नेह के कारण ही मैंने इसे प्रकाशित किया है। हे महामुने! इसे समस्त प्रयत्नों से भी गोपनीय रखना चाहिये।।२१-३०।।

श्रीविष्णुरुवाच

इत्येवं कवचं नित्यं महालक्ष्मि! प्रपठ्यताम् ।
अवश्यं वशमायाति त्रैलोक्यं सचराचरम् ।।३१।।
शिवेन कथितं पूर्वं नारदे कलहास्पदे ।
तत्पाठान्नारदेनापि मोहितं सचराचरम् ।।३२।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे चतुर्दशः पटलः।।१४।।

श्री विष्णु भगवान् ने कहा– हे महालक्ष्मि! इस कवच का नित्य पाठ करने से सम्पूर्ण चराचर जगत् तथा त्रिलोक वश में हो जाता है। शत्रुवर्ग से विह्वल नारद जी के प्रति भगवान् शिव ने पूर्व काल में इसका वर्णन किया था; जिसके पाठ से नारद जी ने चराचर जगत् को मोहित कर लिया था।।३१-३२।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकर संवादात्मक
चौदहवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१४।।

+++

अथ पञ्चदशः पटलः

सर्वरक्षाकरं कवचम्

श्रीदेव्युवाच

भगवन्देवदेवेश सर्वाऽऽम्नायप्रपूजितः ।
सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ।।१।।
प्रासादाख्यस्य मन्त्रस्य कवचं मे प्रकाशय ।
सर्वरक्षाकरं देवं यदि स्नेहोऽस्ति सम्प्रति ।।२।।

श्री देवी जी ने कहा– हे भगवन्! हे देवदेवेश! सर्वाम्नायप्रपूजित! हे देव। आपने सब कुछ वर्णन किया; किन्तु सभी की रक्षा करने वाले कवच को नहीं प्रकाशित किया। यदि आपकी मेरे प्रति स्नेह है तो सर्वरक्षाकर प्रासादाख्य मन्त्र के कवच का वर्णन कीजिये।।१-२।।

श्रीभगवानुवाच

प्रासादमन्त्रकवचस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सदाशिवो देवता, साधकाभीष्टसिद्धये विनियोगः प्रकीर्तितः।

शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः ।
षडक्षरस्वरूपो मे वदनं च महेश्वरः ।।३।।
पाञ्चाक्षरात्मा भगवान् भुजौ मे परिरक्षतु ।
मृत्युञ्जयस्त्रिबीजात्मा आयू रक्षतु मे सदा ।।४।।
वटमूलसमासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः ।
सदा मां सर्वतः पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृक् ।।५।।
द्वाविंशार्णात्मको रुद्रः कुक्षौ मे परिरक्षतु ।
त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा ।।६।।
चिन्तामणिर्बीजरूपे सर्वनारीश्वरो हरः ।
सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः ।।७।।
एकाक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वरः ।
मार्तण्डभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु ।।८।।
ओमित्याख्यो महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरान्तकः ।
सदा मां रणभूमौ तु रक्षतु त्रिदशाधिपः ।।९।।

ऊर्द्ध्वमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा ।
दक्षिणस्यां तत्पुरुषो अव्यान्मे गिरिनायकः ।।१०।।
अघोराख्यो महादेवः पूर्वस्यां परिरक्षतु ।
वामदेवः पश्चिमस्यां सदा मे परिरक्षतु ।
उत्तरस्यां सदा पातु सद्योजातः स्वरूपधृक् ।।११।।

श्रीविष्णु भगवान् ने कहा– इस प्रासाद मन्त्र-कवच के वामदेव ऋषि, पंक्ति छन्द एवं सदाशिव देवता है। साधक की अभीष्ट-सिद्धि हेतु इसका विनियोग किया जाता है। प्रासादाख्य सदाशिव मेरे शिरोभाग की रक्षा करें, षडक्षरस्वरूप भगवान् महेश्वर मेरे मुख की रक्षा करें। पंचाक्षरात्मा भगवान् शिव मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें। त्रिबीजात्मा मृत्युञ्जय सदा मेरी आयु की रक्षा करें। वटवृक्ष के मूल में स्थित अव्यय दक्षिणामूर्ति छत्तीस वर्णरूप धारण करने वाले सदाशिव समस्त स्थानों में मेरी रक्षा करें। द्वाविंश वर्णात्मक रुद्रदेव मेरी दोनों कुक्षियों की रक्षा करें। त्रिवर्णात्मक नीलकण्ठ सदा मेरे कण्ठ की रक्षा करें। चिन्तामणि समस्त नाड़ियों की एवं, बीजस्वरूप ईश्वर हर सदा मेरे गुह्यदेश की रक्षा करें। सर्वसम्पत्प्रदाता एकाक्षर स्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वर मार्तण्डभैरव नित्य मेरे पैरों की रक्षा करें। ॐ इस नाम से पुकारे जाने वाले महाबीजस्वरूप त्रिपुरान्तक त्रिदशाधिप सदा संग्रामभूमि में मेरी रक्षा करें। ईशान ऊर्ध्व भाग में सदा मेरी रक्षा करें। गिरिनायक तत्पुरुष दक्षिण दिशा में और अघोर नामक महादेव पूर्व दिशा में सदा मेरी रक्षा करें। वामदेव पश्चिम दिशा में सदा मेरी रक्षा करें तथा सद्योजात स्वरूपधारी उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें।।३-११।।

इत्थ रक्षाकरं देवि! कवचं देवदुर्लभम् ।
प्रातःकाले पठेद्यस्तु सोऽभीष्टफलमाप्नुयात् ।।१२।।
पूजाकाले पठेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ।
देवा मनुष्या गन्धर्वा वश्यास्तस्य न संशयः ।।१३।।
कवचं यस्तु शिरसि धारयेद्यदि मानवः।
करस्थास्तस्य देवेशि अणिमाद्यष्टसिद्धयः ।।१४।।
स्वर्णपत्रे त्विमां विद्यां शुक्लपट्टेन वेष्टिताम् ।
राजतोदरसंविष्टां कृत्वा च धारयेत्सुधीः ।।१५।।
संप्राप्य महतीं लक्ष्मीमन्त्रं च शिवरूपधृक् ।

यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।।१६।।
शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ।
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात् सत्यमेतन्मनोरमे ।।१७।।
तव स्नेहान्महादेवि! कथितं कवचं शुभम् ।
न देयं कस्यचिद्भद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् ।।१८।।
योऽर्चयेद् गन्धपुष्पाद्यैः कवचं मन्मुखोदितम् ।
तेनार्चिता महादेवि! सर्वे देवा न संशयः ।।१९।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे पञ्चदशः पटलः।।१५।।

हे देवि! यह रक्षाकर कवच देवताओं को भी दुर्लभ है। प्रातःकाल जो साधक इसका पाठ करता है उसको अभीष्ट फल प्राप्त होता है। जो साधक पूजाकाल में इसे दक्षिण भुजा में धारण कर इसका पाठ करता है; देव, गन्धर्व एवं मनुष्य भी उसके वश में रहते हैं। इसमें कोई संशय नहीं है। हे देवि! जो मनुष्य इस कवच को शिर में धारण करते हैं, उनके हाथ में अणिमादि अष्टसिद्धियाँ रहती हैं। इस कवच को स्वर्णपत्र से वेष्टित कर (ताबीज बनाकर) श्वेत वस्त्र से वेष्टित करे अथवा चांदी के ताबीज में बन्द कर सफेद रेशम के सूत्र में पिरोकर भुजा या कण्ठ में धारण करे तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा शिवसायुज्य प्राप्त होता है। इसे हर किसी को नहीं प्रदान करना चाहिये और न ही सबके सामने प्रकाशित करना चाहिये। जो शिष्य श्रद्धा एवं भक्ति रखता हो उसके ही समक्ष इसे प्रकाशित करना चाहिये, अन्यथा सिद्धि की हानि होती है। हे मनोरमे! यह कवच तुम्हारे स्नेहवश ही मैंने कहा है। हे देवि! अपने हित हेतु यह कवच सर्वसाधारण को नहीं देना चाहिये। जो साधक मेरे मुख से निकले इस कवच का गन्ध-पुष्पादि से पूजन करता है, वह समस्त देवताओं का पूजन कर लेता है।।१२-१९।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकरसंवादात्मक
पन्द्रहवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१५।।

+++

अथ षोडशः पटलः

त्र्यम्बकमृत्युञ्जयमन्त्रः

श्रीदेव्युवाच

इदानीं श्रोतुमिच्छामि पूर्वमुक्तं च त्र्यम्बकम् ।
प्रभेदे कथितं देव शान्तिं मृतसञ्जीवनीम् ।।१।।

श्री देवी जी ने कहा– हे देव! अब पूर्व में कहे गये त्र्यम्बक-प्रयोग का मुझसे वर्णन कीजिये। साथ ही उसके प्रभेदरूप में पठित मृतसञ्जीवनी विद्या का भी वर्णन कीजिये।।१।।

ईश्वर उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
मातृणां तिसृणामम्ब गर्भजातो यतो हरः ।।२।।
अतस्त्र्यम्बक इत्युक्तं मम नाम महेश्वरि ।
वशिष्ठोऽस्य ऋषिः प्रोक्तश्छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतः ।।३।।
देवताऽस्य समुद्दिश्यस्त्र्यम्बकः पार्वतीपतिः ।
विभक्तैर्मन्त्रवर्णैश्च षडङ्गानां च कल्पनाम् ।।४।।
ततश्च वह्निबीजेन समन्ताज्जलधारया ।
प्राचीरं चिन्तनं कुर्यात्ततः सङ्कल्पमाचरेत् ।।५।।
पुनः संकल्प्य देवेशि! भूतशुद्ध्यादिकं च यत् ।
ततः पश्चात् करन्यासं कुर्याच्च मम सुन्दरि ।।६।।

श्री ईश्वर ने कहा– हे देवि! जो तुम पूछती हो, वह कहता हूँ; श्रवण करो। मैं तीन मातृकाओं के गर्भ से उत्पन्न हूँ; इसी कारण हे महेश्वरि! मेरा नाम त्र्यम्बक है। इसके ऋषि वशिष्ठ, छन्द अनुष्टुप् एवं देवता पार्वतीपति त्र्यम्बक हैं। विभक्त मंत्रवर्णों से षडंग आदि की कल्पना करनी चाहिये। तत्पश्चात् वह्निबीज (रं) से जलधारा देनी चाहिये। प्राचीरचिन्तन करके संकल्प का आचरण करना चाहिये। हे देवेशि! हे सुन्दरी! पुनः संकल्प करके भूतशुद्धि करने के पश्चात् करन्यास करना चाहिये।।२-६।।

त्र्यम्बकं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। यजामहे तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा। सगन्धिं पुष्टिवर्धनं मध्यामाभ्यां वौषट्। ऊर्वारुकमिक बन्धनादनामिकाभ्यां हुम्। मृत्योर्मुक्षीय

कनिष्ठाभ्यां वौषट्। मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिषु।

उपरोक्त करन्यास के पश्चात् हृदयादि न्यास कन्ना चाहिये।

ततो द्वाविंशन्मन्त्रवर्णान्न्यसेत् पूर्वपश्चिमयाम्योत्तरेषु वक्त्रेषु४। उरोगलोद्ध्र्वास्ये३। पुनर्नाभिहृत्पृष्ठकुक्षिषु४। लिंगपायूरुमूलान्ते ६। जानुयुग्मे २। गुल्फयोर्युग्मे २। स्तनयोः २। पार्श्वयोः २। पादयोः२। पाण्योः२। नासिकयोः २। शीर्षे १। मन्त्रवर्णान्न्यसेत्क्रमात् पुनस्ततः पादाद्येकादशस्थानेषु न्यसेत् । शिरो १भ्रूयुगला १ क्षिषु १ वक्त्रे १ गण्डयुगे १ भुजयोः २ हृदये १ जठरे १ पुनः गुह्यो १ रु १ जानु१ पादेषु १ न्यासमेवं समाचरेत्।

तदुपरान्त ३२ मन्त्रवर्णों द्वारा ३२ अंगों का न्यास करे। पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर मुख में; वक्षःस्थल, गलप्रदेश व ऊर्ध्व मुख में न्यास करे। तत्पश्चात् नाभि, हृदय, पीठ (पृष्ठ) एवं कुक्षियों में न्यास करे। लिङ्ग, गुदप्रदेश, जंघामूल में न्यास करे। जानुयुग्म में, दोनों गुल्फों में, दोनों स्तम्भों में, दोनों बगलों में, दोनों पैरों में एवं दोनों हाथों में न्यास करे। दोनों नासिकाछिद्रों में, शिर में तथा ग्यारह पैर आदि स्थानों में न्यास करे। शिर में, दोनों भौहों में, दोनों नेत्रों में, मुख में, दोनों कनपटी में, दोनों भुजाओं में, हृदय में एवं उदर में न्यास करे। तत्पश्चात् गुह्य, उरु, जानु एवं पैरों में न्यास करे।

तत उक्तध्यानेन ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य विशषार्घ्यं संस्थाप्य शैवोक्तपूजावाहनादिकं पञ्चपुष्पाञ्जलीन्दत्त्वा वरुणं पूजयेत् । त्र्यम्बकं हृदयाय नमः। इत्यादि षडङ्गानि पूजयेत्। ततोऽष्टपत्रेषु ॐअर्काय नमः। एवमिन्दवे, वसुधायै, जलाय, वह्नये, वायवे, व्योम्ने, यजमानाय, तद्बाह्ये पूर्वादितः ॐ रामाय नमः, ॐ राकायै नमः, ॐ प्रभायै नमः। ॐ ज्योत्स्नायै नमः । ॐ पूर्णायै नमः । ॐ उषसे नमः। ॐ पूषायै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ विश्वायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ सितायै नमः। ॐ कृत्यै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। ॐ सरायै नमः। ॐ सन्ध्यायै नमः। ॐ दिवायै नमः। ॐ निशायै नमः। तद्बाह्ये ॐ आर्यायै नमः। ॐ आर्द्रायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ मत्यै नमः। ततो धूपादिविसर्जनान्तं कर्म समापयेत् ।

तदनन्तर पूर्वकथित ध्यान के द्वारा मानसिक पूजन कर, विशेषार्घ्य स्थापित कर शैवोक्त पूजन एवं आवाहनादि करके पाँच पुष्पांजलि प्रदान करके

वरुणदेव का पूजन करे। **त्र्यम्बकं हृदयाय नमः** इत्यादि से षडंगपूजन करे। तत्पश्चात् अष्ट कमलदल के मध्य में इस प्रकार पूजन करे- ॐअर्काय नमः। इन्दवे नमः। वसुधायै नमः। जलाय नमः। वह्नये नमः। वायवे नमः। व्योम्ने नमः। यजमानाय नमः। कमलदल के बाह्य भाग में पूर्वादि क्रम से पूजन करे। ॐ रामाय नमः। ॐ राकायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ ज्योत्स्नायै नमः। ॐ पूर्णायै नमः। ॐ उषसे नमः। ॐ पूषायै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ विश्वायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ सितायै नमः। ॐ कृत्यै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। ॐ सरायै नम। ॐ सन्ध्यायै नमः। ॐ दिवायै नमः। ॐ निशायै नमः। उसके बाहरी भाग में ॐ आर्यायै नमः। ॐ आर्द्रायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ मर्त्यै नमः। तदुपरान्त धूप आदि द्वारा विसर्जनकर्म करे।

प्रयोगस्तु शनैश्चरे कुजे वा अश्वत्थमूलं स्पृष्ट्वा सहस्रं जपेत्।

पुरश्चरणविधानेन सर्वं कुर्यान्महेश्वरि ।
साक्षान्मृत्योर्विमुच्येत किमन्याः क्षुद्रिकाः क्रियाः ।।७।।
प्रत्यहं जुहुयान्मन्त्री चतुःस्थण्डिलविधानतः ।
द्विसहस्रं दूर्वावटजवाभि करवीरकैः ।।८।।
बिल्वपत्रं पलाशश्च तथा कृष्णापराजिता ।
वटवृक्षस्य समिधं जुहुयादयुतावधिः ।।९।।
धनधान्यसमृद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं महेश्वरि! ।।१०।।

यह प्रयोग शनिवार अथवा मंगलवार के दिन करना चाहिये तथा अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष को स्पर्श कर मन्त्र का एक हजार जप करना चाहिये। हे महेश्वरि! पुरश्चरण-विधान में समस्त कर्म करना चाहिये। इस प्रयोग के करने से साक्षात् मृत्यु से भी मुक्ति प्राप्त होती है; अन्य क्षुद्र क्रियाओं का तो कहना ही क्या है। साधक को चाहिये कि प्रतिदिन चतुःस्थण्डिल में विधानपूर्वक हवन करे। दो हजार दूर्वा (दूब), वट, जवा, कनेरपुष्प, बिल्वपत्र, पलाश तथा कृष्णापराजिता एवं वटवृक्ष की समिधा— इन सब वस्तुओं से दश हजार हवन करने पर साधक के धन-धान्य की वृद्धि होती है। यह निःसन्देह सत्य है।।७-१०।

मृतसञ्जीविनी विद्या

अतः परं देवि! शृणु मृतसञ्जीविनीं तथा ।

आदौ प्रासादबीजं तदनु मृतिहरं तारकं व्याहृतिं च ।
प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति च सततं संपुटं चानुलोमम् ।।११।।

त्र्यम्बकमिति मृत्युञ्जयमन्त्रस्य जपात्सर्वसिद्धिर्भवति।

एतन्मन्त्रं जपेदाशु व्याधिमुक्तो भवेद्ध्रुवम् ।।१२।।

हे देवि! अब मृतसंजीवनी विद्या का श्रवण करो। सर्वप्रथम सर्वप्रासाद बीज (हौं) का उच्चारण करे; तत्पश्चात् मृतिहर बीज,तारक तथा व्याहृति का उच्चारण कर जो साधक निरन्तर सम्पुट तथा अनुलोम से त्र्यम्बक मन्त्र का जप करते हैं, उनको मृत्युञ्जय त्र्यम्बक म्न्त्र के प्रसाद से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। इस मन्त्र के जप से निश्चित रूप से साधक व्याधिमुक्त हो जाता है।।११-१२।।

प्रासाद बीज— **हौं**, मृतिहरबीज— **ॐ जूं सः**, तारकम्— **ॐ**, व्याहृति— **भूर्भुवः स्वः**।

ध्यानं शृणु महादेवि–

स्वच्छं स्वच्छारविन्दं स्थितमुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुम्भौ
पाण्योर्हेलाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्यपूर्णौ ।
द्वाभ्यां तौ च स्रवन्तौ शिरसि शशिकला चामृतैःप्लावयन्ती
देहं देवो दधानो विदिशतु विशदा कल्पजालां श्रियं नः ।।१३।।
एवं ध्यात्वा त्र्यम्बकाय महारुद्राय नमः ।
महाघोरं यदि तदा पूजयेत्परमेश्वरम् ।।१४।।

ततः सुरसुन्दरीत्यादि योगिनीसाधनम्। ततो भूतिनीसाधनम्।

हे महादेवि! अब ध्यान का श्रवण करो। दोनों हाथों में स्वच्छ कमलदल धारण करने वाले; दो हाथों में पूर्ण कुम्भ धारण करने वाले; दो हाथों में हेलाक्ष धारण करने वाले; दो हाथों में पूर्ण एवं स्रावी घट धारण करने वाले; शिरोभाग में अमृतस्राविणी शशि (चन्द्रमा) को धारण करने वाले श्री सदाशिव कल्पजाल तक हम लोगों को श्री प्रदान करें।

इस प्रकार त्र्यम्बक महारुद्र का ध्यान करके मन्त्र-जप का प्रयोग करते हुये परमेश्वर सदाशिव का ध्यान करे। तदुपरान्त सुरसुन्दरी आदि साधना करने के पश्चात् भूतिनी-साधना करनी चाहिये।।१३-१४।।

भूतिनीसाधनम्

श्रीदेव्युवाच

योगिनीसाधनं ज्ञातं भूतिनीसाधनोत्तमम् ।
तद्वदस्व महादेव! कृपास्ति यदि मां प्रति ।।१५।।

श्री देवी जी ने कहा– हे महादेव! योगिनी-साधन का ज्ञान मुझे हो चुक अब यदि आपकी मेरे प्रति कृपा है तो भूतिनी-साधन का भी वर्णन कीजिये।।१५

विशेष– इस ग्रन्थ में योगिनी-साधन नहीं दिया गया है; इससे प्रती होता है कि ग्रन्थ का कुछ भाग अवश्य ही खण्डित है।

श्रीश्वर उवाच

आद्या विभूषिणी देवी पराकुण्डलधारिणी ।
हारिणी सिंहिनी चैव हंसिनी च ततो नटी ।।१६।।
कामेश्वरी तथा प्रोक्ता रतिदेवी ततः प्रिया ।
इत्यष्टौ नायिकाः प्रोक्ताः साधकानां सुखावहाः ।।१७।।

श्री ईश्वर ने कहा– हे प्रिये! आठ नायिकायें साधक वर्ग के लि सुखप्रदायक हैं। यह हैं— आद्या विभूषिणी, पराकुण्डलधारिणी, हारिणी, सिंहिनी हंसिनी, नटी, कामेश्वरी एवं रति देवी।।१६-१७।।

आद्याविभूषिणीसाधनम्

यथामन्त्रं महेशानि आद्या विभूषिणी तथा।

मंत्रः

हूँ फट् फट् ह्रीं भूतिनीं हूं हूं हूं ।
क्रोधास्त्रद्वयं मायान्ते भूतिनीं च त्रिकूर्चतः ।।१८।।

अथवा– शृणु देवेशि ॐ ह्रीं ह्रीं फट् फट् विभूषिणी हूं हूं हूं। तार लज्जाद्वयास्त्रद्वयं विभूषिणीक्रोधद्वयम्।

हे महेशानि! जिन मन्त्रों से आद्या विभूषिणी का साधन करना चाहिये वे हैं— हूं फट् फट् ह्रीं भूतिनीं हूं हूं हूं। क्रोध द्वय (हूं हूं), अस्त्र द्वय— (फट् फट्) मायान्त (ह्रीं) में भूतिनी बीज, त्रिकूर्च मिश्रित करे। अथवा हे देवेशि! मन्त्र इस प्रकार भी है— ॐ ह्रीं ह्रीं फट् फट् विभूषिणी हूं हूं हूं। तार (ॐ) लज्जाद्वयास्त्रद्वय (ह्रीं ह्रीं फट् फट्) विभूषिणी क्रोधद्वय (हुं हुं) मिश्रित करे।।१८।।

ध्यानम्

दक्षे कर्त्तरिकां परेऽसिलतिकां हस्ताब्जके बिभ्रतीं
ह्युत्तुङ्गस्तनशोभिवक्षसि चलैर्हारादिभिः शोभिता ।
दन्तान्तर्गतमांसशोणितवसासिक्तास्ति यस्यास्तनुः
कालश्यामलवर्णिकाम्रेगभुजंगैर्वेष्टिता रक्षतु ।।१९।।

दक्षिण हाथ में कर्त्तरी (कैंची) तथा दूसरे हाथ में तलवार धारण करने वाली, ऊंचे कुम्भ के समान स्तन वाली, वक्षस्थल में आभूषण धारण करने वाली, दांतों के अग्रभाग से दुष्टों के मांस, रक्त एवं वसा (चर्बी) को चबाकर पीने से जिसका शरीर भीग गया है, ऐसी काल के समान श्यामल वर्ण वाली तथा आम्र के आश्रित व भुजंगों से वेष्टित देवी हमारी रक्षा करे॥१९॥

स्थानं वृक्षतले तत्र यामिन्यां दिवसत्रयम् ।
जपेदष्टसहस्रं तु ध्यायेदेकाग्रमानसः ।।२०।।
जपान्ते च महापूजा पुनर्धूपं निवेदयेत् ।
चन्दनोदकमिश्रेण दत्त्वार्घ्यं तुष्यति ध्रुवम् ।।२१।।
माता वा भगिनी भार्या हृष्टा भवति कामिता ।
करामलकतां कृत्वा माता भूत्वा जगत्त्रयम् ।।२२।।
शताष्टपरिवारस्य ददात्यञ्जनभूषणम् ।
भगिनी चेन्महाभागा सहस्रयोजनादपि ।।२३।।
ददाति स्त्रियमानीय दिव्यं रसं रसायनम् ।
भार्या चेत्पृष्ठमारोप्य स्वर्गं प्रयाति नित्यशः ।।२४।।
दीनाराणां सहस्रन्तु रसं चैव रसायनम् ।
सर्वाशां पूरयत्येव सदा देवी विभूषिणी ।।२५।।

तीन रात्रि तक (अश्वत्थ) वृक्ष के नीचे ध्यान कर एकाग्र मन से आद्या विभूषिणी के मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप के अन्त में महापूजा करे तथा फिर धूप का निवेदन करे अर्थात् प्रदान करे। चन्दनमिश्रित अर्घ्य प्रदान करने से भूतिनी सन्तुष्ट होती है। अपनी इच्छानुसार माता, भगिनी या भार्यारूपों का ध्यान कर उसका पूजन करे। इससे देवी प्रसन्न होकर अभीष्ट वर प्रदान करती है। यदि देवी की माता के रूप साधना की जाती है तो दिव्य दृष्टि मिलती है। वह साधक के एक सौ आठ

परिवारों का पालन करती है तथा दिव्य अंजन प्रदान करती है। भगिनी (बहन) होने पर सहस्त्र योजन दूर स्थित दिव्य स्त्री लाकर देती है तथा रस, रसायन आदि प्रदान करती है। भार्या (पत्नी, प्रिया) होने पर साधक को अपनी पीठ पर चढ़ाकर नित्य ही स्वर्ग को ले जाती है, सहस्त्रों स्वर्णमुद्रायें एवं रस, रसायन प्रदान करती है। इस प्रकार देवी साधक की समस्त कामनायें पूर्ण करती है॥२०-२५॥

पराकुण्डलिनीसाधनम्

पराकुण्डलिनीध्यानं शृणु देवि! महेश्वरि! ।
कर्णे कुण्डलधारिणी शशिमुखी, लीलावती सस्मिता
शैलश्रोणिविलम्बिकाञ्चिवितता व्यामुग्धलोकत्रया ।
मुक्ताहारमरीचिकान्तिविलसत्प्रोत्तुङ्गकुम्भस्तनी
पायात्कुण्डलधारिणी त्रिजगतामानन्दसन्दोहभूः ।।२६।।

हे देवि! हे महेश्वरि! अब पराकुण्डलिनी का ध्यान श्रवण करो। कुण्डलों से विभूषित कानों वाली, चन्द्रमा के समान मुखवाली , त्रिलोक को मुग्ध करने वाली, मोतियों के हार की कान्ति से विभूषित, उन्नत कुम्भ के समान स्तनों वाली तीनों लोकों को आनन्द प्रदान करने वाली देवी कुण्डलधारिणी हमारी रक्षा करें॥२६॥

विशेष– इस ग्रन्थ में इसका मन्त्र नहीं दिया गया है। फेत्कारिणी तन्त्र के अनुसार इसका मन्त्र इस प्रकार होगा- ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं फट् फट् कुण्डलधारिणी हूं हूं हूं फट्।

श्मशाने पूजयेदेतामयुतं जपमाचरेत् ।
आयाति तत्क्षणाद्देवी ततः कुण्डलधारिणी ।।२७।।
साधकेनापि रक्तार्घ्यं देयं तुष्टा वदत्यपि।
किं कर्त्तव्यं मया वत्स मातरुक्त्वेति साधकः ।।२८।।
पञ्चाशतञ्च दीनारान्देहि त्रैलोक्यदायिनि ।

श्मशान में इसका पूजन करे तथा दश हजार जप करे। देवी कुण्डलधारिणी उस समय प्रसन्न होकर साधक के सामने प्रकट हो जाती है। साधक भी उसे रक्त का अर्घ्य देकर सन्तुष्ट करे। इससे देवी प्रसन्न होकर कहती है- हे वत्स! मेरा क्या कार्य है? तब साधक कहे-हे माता! तू त्रैलोक्यदायिनी हो; अतः पचास स्वर्ण मुद्रायें मुझे प्रदान करो॥२७-२८॥

सिन्दूरहारिणीसाधनम्

अतः परन्तु चार्वङ्गि! सिन्दूरहारिणीमनुः ।।२९।।
क्रोधद्वयेन्दुसंयुक्तः सिन्दूरहारिणीपदम् ।
कूर्चबीजत्रयं चास्त्रं सम्प्रोक्तं विविधं तथा ।।३०।।

हे चार्वङ्गि! अब सिन्दूरहारिणी का मन्त्र कहते हैं—

इन्दु (ऐं) से संयुक्त क्रोधद्वय (हुं हुं)। सिन्दूरहारिणी पद का उच्चारण करके कूर्चबीजत्रय (हूं हूं हूं) फट् का उच्चारण करने पर सिन्दूरहारिणी मन्त्र का उद्धार होता है।।२९-३०।।

ध्यानम्

सिन्दूराकृतिहारिणी चलदलव्यालोलशाखास्वरा
सोत्कण्ठीकृतगात्रयष्टिशुभगा शुभ्रांशुचन्द्रस्मिता ।
अन्तःसन्ततदन्तकान्तिमलिना त्रैलोक्यशोभाकरी
पायादुन्नतबाहुयुग्मलतिका सिन्दूरहारिण्यसौ ।।३१।।

सिन्दूर के समान आकृति वाली,पीपल के पत्ते की भाँति कम्पायमान स्वर, उत्कण्ठित देह से सुशोभित, सुन्दर उज्ज्वल हास्ययुक्त मलिन दन्तकान्ति वाली, त्रिलोक को शोभित करने वाली एवं दीर्घ बाहुयुक्त सिन्दूरहारिणी देवी हमारी रक्षा करे।।३१।।

शून्ये देवालये गत्वा निर्जने निशि साधकः।
तत्त्वसंख्यादिनं यावज्जपस्तत्त्वसहस्रकः ।।३२।।
तदन्ते महतीं पूजां वस्त्रालङ्कारभूषणैः।
कुर्यात्साधकवर्यस्तु भार्या भवति कामिता ।।३३।।
वरं वरय शीघ्रं त्वं प्रोक्ता सिन्दूरहारिणी ।
रक्षति द्वादशदिनं देवि सिन्दूरहारिणी ।।३४।।

साधक निर्जन तथा जनशून्य देवालय में रात्रि में जाकर २५ दिन तक २५ हजार जप करे; तदुपरान्त वस्त्र एवं अलंकारों से देवी की महापूजा करे। इस प्रकार करने पर देवी प्रसन्न होकर साधक की भार्या बन जाती है और साधक से कहती है कि हे साधक! वर मांग। साधक उससे अपनी भार्या होने को कहे। तत्पश्चात् देवी साधक की बारह दिनों तक उसकी रक्षा करती है।।३२-३४।।

सिंहिनीसाधनम्

अतः परं देवि! श्रृणु सिंहिन्याश्च महामनुम् ।
मायाद्वयं क्रोधद्वयं सिंहिनीति पदन्ततः ।।३५।।
पुनः क्रोधं तदन्ते च सिंहिनी च महामनुः ।
ह्रीं ह्रीं फट् फट् सिंहिनी हूं हूं फट् ।।३६।।
शैलाग्रे निर्जने वापि सिंहिन्याः पूजनं तथा ।।३७।।

हे देवि ! अब सिंहिनीमन्त्र का श्रवण करो। दो मायाबीज (ह्रीं ह्रीं), दो क्रोधबीज (फट् फट्), सिंहनी पद, तदुपरान्त क्रोधबीज (हूं हूं फट्)— इनके द्वारा सिंहनी का मन्त्र बनता है। सिंहनी का पूजन पर्वतशिखर पर या निर्जन स्थान में करना चाहिये।।३५-३७।।

ध्यानम्

शैलाग्रक्रमदुर्गमन्तु अटवीदुर्गास्तु दैत्याहते
केशाग्रस्थसमस्तविष्णुचरणं प्रभ्रष्टसंसिंहिनी ।
यावन्तो बलदण्डवारणबलात् प्रक्षु क्वसिद्धाङ्गना
शेषं पातु समस्तमन्तककुलव्याकल्पमाना कला ।।३८।।

उपरोक्त ध्यान सिंहिनी का है। इस ध्यानमन्त्र को पूजन के समय अवश्य ही उच्चारित करना चाहिये।।३८।।

'फेत्कारिणी तन्त्र' में इसका ध्यान इस प्रकार मिलता है—

शैलाग्र-द्रुम-दुर्ग-दन्तुरदरी-दुर्गान्ति-दैत्यस्थिता
केशत्रस्त-समस्त-विश्वचरणा प्रभ्रष्ट-चन्द्रासनी ।
यावत्तारविदन्त-धारण-वन-प्रक्षुब्ध-सिद्धाङ्गना
सेयं पातु समस्तमस्तककुलव्यालम्बिमालाकुला ।।

गत्वैकलिङ्गं यामिन्यां प्रजपेदयुतं मनुम् ।
ततो हृष्टातिवरदा सिंहिनी चेति पूजिता ।।३९।।
किं करोमि वदत्येव भार्या भवति कामिता।
दिनावसाने यामिन्यां सिंहिन्यायाति राति च ।
वस्त्रयुग्मं रसमयं साधकाय दिने दिने ।।४०।।

रात्रि के समय एकलिङ्ग अर्थात् शिवमन्दिर में जाकर दश हजार मन्त्र का

जप करे। मन्त्र के जप व पूजन से वरदायिनी सिंहिनी देवी प्रसन्न होकर साधक से कहेगी— हे साधक! मैं तेरे लिये क्या करूँ, आज्ञा कर। साधक इच्छानुसार (भगिनी, माता, भार्या बनने का) वर मांगे। सिंहिनी देवी साधक को प्रतिदिन वस्त्र एवं रसमय पदार्थ प्रदान करती है॥३९-४०॥

हंसिनीसाधनम्

अतः परं शृणु चार्वङ्गि हंसिनीसाधनक्रमम् ।

ॐ हूं हूं हूं फट् हंसिनी।

प्रणवश्च त्रिकूर्चास्त्रहंसिनीकथितो मनुः ।।४१।।

हे चार्वङ्गि! अब हंसिनीसाधन की विधि का श्रवण करो। ॐ हूं हूं हूं फट् हंसिनी— यह हंसिनीसाधना हेतु मन्त्र है॥४१॥

ध्यानम्

शुभ्रा शुभ्रसरोजतुल्यनयना सायुग्मबाणान्विता
शुश्रूषा कुलमुग्धसाध्यवनिता संसेविता सादरम् ।
किञ्चित्तिर्यगपाङ्गलोलवलितव्यामुग्धस्मेरानना
दिव्या काञ्चनरत्नहारललिता श्रीहंसिनी पातु नः।।४२।।

श्वेत एवं कृष्ण कमलदल के समान नेत्रवाली, दो शर से युक्त, सेवा में तत्पर, मुग्ध, साध्य वनिता से आदरपूर्वक सेवित, कुछ एक अपाङ्ग भाग को तिरछा कर मधुर हास्य करने वाली, मनोहर स्वर्णमाला को धारण करने वाली हंसिनी देवि हमारी रक्षा करे॥४२॥

वज्रपाणिर्गृहं गत्वा प्रतिमां शोभनां लिखेत् ।
अवधानेन सम्पूज्य जपेदयुतसंख्यकम् ।।४३।।
यावदर्धनिशा देवी हंसिन्यायाति निश्चितम् ।
चन्दनार्घ्यप्रदानेन दृष्टा भवति हंसिनी ।।४४।।
किं मया ते प्रकर्त्तव्यं शीघ्रं तद्वद साधक!।
वस्त्रालङ्कारभोज्यानि दिव्यार्थं सम्प्रयच्छति ।।४५।।
अवशेषव्ययाभावान्न ददाति प्रकुप्यति ।।४६।।

वज्रपाणि (बौद्ध) के गृह (मन्दिर) में प्रवेश करके हंसिनी देवी की प्रतिमा लिखे तथा सतर्कतापूर्वक मन्त्र का दश हजार जप करे। हे देवि! आधी

रात के समय हंसिनी देवी साधक के सम्मुख आकर उपस्थित होगी। उस समय साधक चन्दनादि द्रव्यों द्वारा देवी का आनन्दपूर्वक पूजन करे तथा अर्घ्य प्रदान करे। प्रकट होने पर देवी साधक से कहती है— हे साधक! इस समय मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ? आज्ञा कर। इस प्रकार कहकर देवी साधक को वस्त्र, आभूषण, भोज्य पदार्थ आदि प्रदान करती है। साधक इन सभी पदार्थों को पूर्णत: व्यय कर दे; अपने पास कुछ भी न रक्खे; अन्यथा देवी क्रुद्ध हो जाती है॥४३-४६॥

नटीसाधनम्

इतः परं महामाये शृणु मे नटीसाधनम् ।
ॐ हूँ हूँ फट् फट् नटी हूँ हूँ हूँ ॥४७॥
तारं कूर्चक्रोधास्त्रद्वयतो नटीति पदमुद्धरेत् ।
कूर्चत्रयन्तु मन्त्रोऽयं कथितो नर्तकीमनुः ॥४८॥

हे महामाये! अब नटीसाधन के क्रम को मुझसे श्रवण करो। ॐ हूं हूं फट् फट् नटी हूं हूं हूं— यह नटी का मनु अर्थात् मन्त्र है। इसे नर्तकी मन्त्र भी कहते हैं॥४७-४८॥

ध्यानम्

फुल्लेन्दीवरसुन्दरोदरमुखी प्रोत्तुङ्गकुम्भस्तनी
द्योतन्ती मृगमीनयुग्मनयना सानन्दमन्दस्मिता ।
क्षीराम्भोनिधिसम्भवा विलसिता भक्तारिसंनाशिनी
वीणागीतविशालिनी भगवती व्याहारवाक्चातुरी॥४९॥

खिले हुये कमलदल के समान मुख एवं उदर वाली, अत्यन्त ऊंचे कलश के समान स्तन वाली, मृग एवं मीन के समान नेत्र वाली, आनन्दपूर्वक मन्द-मन्द हास्य करने वाली, क्षीरसागर से उत्पन्न, भक्तों के शत्रुओं का नाश करने वाली, वीणा के द्वारा मनोहर गान करने वाली, मृदुभाषिणी भगवती नटी का हम ध्यान करते हैं॥४९॥

नीचपाशं गमं गत्वा सप्ताहजपपूजने ।
नटी सुसिद्धा भवति धूपं दद्यान्मुहुर्मुहः ॥५०॥
चन्दनेनार्घ्यं देयन्तु नैवेद्यञ्च मनोहरम् ।
सदा कामभोगदात्री भार्या भवति नर्तकी ॥५१॥
सुवर्णफलमेकन्तु व्ययं त्यक्त्वानुगच्छति ।

दिने दिने नटी देवी स्थायिनी भवति ध्रुवम् ।।५२।।

नीचे के स्थान में जाकर एक सप्ताह तक जप व पूजन करे। बार-बार धूप देने से नटी प्रसन्न होती है तथा साधक को तत्क्षण सिद्धि की प्राप्ति होती है। चन्दनमिश्रित अर्घ्य एवं मनोहर नैवेद्य प्रदान करने पर नटी नर्तकी स्त्री की भाँति प्रसन्न होती है तथा साधक को समस्त कामभोग प्रदान करती है। नटी देवी साधक को स्वर्ण आदि प्रदान करती हुई स्थिर रहती है। नटी द्वारा प्रदत्त धन को पूर्णतः व्यय कर देना चाहिये; लेशमात्र भी शेष नहीं रखना चाहिये।।५०-५२।।

चेटीसाधनम्

अतः परं महादेवि चेट्या आकर्षणं शृणु ।।५३।।

मन्त्रो यथा

तारं कूर्चद्वयान्ते च अस्त्रयुग्मं ततः परम् ।
चेटी क्रोधद्वयञ्चोक्तं चेटी मन्त्रोत्तमोत्तमः ।।५४।।

हे महादेवी! अब चेटी का आकर्षण श्रवण करो। तार (ॐ), कूर्चद्वय (हूं हूं), अस्त्रयुग्म (फट् फट्), चेटी, क्रोधद्वय (हूं हूं)— इस प्रकार चेटी का मन्त्र है— **ॐ हूं हूं फट् फट् चेटी हूं हूं**।।५३-५४।।

ध्यानम्

देव्येषाऽमृतभाषिणी शशिमुखी भ्रष्टोत्तरीयाधरा
बिभ्राणा कलशं सरोजममलं स्वर्णं च सीमन्तके ।
श्रीखण्डादिविलेपनामलवपुः सौरभ्यसम्भाविता
किञ्चिद्धर्मसमाहितापिकरवा पायात्प्रभा चेटिका ।।५५।।

अमृतभाषिणी, चन्द्रमुखी, भ्रष्ट उत्तरीय को धारण करने वाली, मनोहर अधरोष्ठ वाली, सुन्दर कलश धारण करने वाली, मांग (सीमान्त) में स्वर्ण धारण करने वाली, श्रीखण्ड (चन्दन) आदि के लेप से सुगन्धित शरीर वाली, कोकिला के समान सुन्दर मनोहर कण्ठ वाली यह चेटी देवी हमारी रक्षा करे।।५५।।

अत्रापि भीषणस्थाने नामोच्चारणमात्रतः ।
ध्रुवं चेटी समागत्य चेटीकर्म करोत्यपि ।।५६।।
अथवा स्वगृहद्वारे त्र्यहं रात्रौ जपं चरेत् ।
आगत्य नियतं देवी चेटीकर्म करोति च ।।५७।।

भीषण स्थान में नाम के उच्चारणमात्र से ही चेटी देवी निश्चित रूप से आती है एवं चेटीकर्म करती है अथवा स्वयं के घर पर तीन दिन एवं तीन रात्रि तक मन्त्र का जप करने से चेटी देवी आकर चेटी (दासी) का कर्म करती है।।५६-५७।।

कामेश्वरीसाधनम्

कामेश्वरीप्रयोगः

तारं कूर्चास्त्रयुग्मं कामेश्वरी भूतिनी ततः ।
परं ङेन्तं क्रोधत्रयं कामेश्वर्या मनुः स्मृतः ।।५८।।

तार (ॐ), कूर्च (हूं), अस्त्रयुग्म (फट् फट्), कामेश्वरी भूतिन्यै हूं हूं हूं। इस प्रकार कामेश्वरी का मन्त्र है— **ॐ हूं फट् फट् कामेश्वरी भूतिन्यै हूं हूं हूं** ।।५८।।

ध्यानम्

ॐ तालस्कन्धसमागता मधुरता कामन्तु पुष्पान्विता
गायत्री मधुराधरा स्मितमुखी वीणायुता गायती ।
रक्ताम्भोजविलोचना मधुमदैर्युक्ता समन्तादियं
पायात् पुष्पधनुर्धरा मधुमुखी कामेश्वरी भूतिनी ।।५९।।

तालवृक्ष में निवास करने वाली, मधुपान में आसक्त, पुष्पों से युक्त, साधक की रक्षा करने वाली, मधुर अधरों वाली, स्मितमुखी, वीणा बजाकर गायन करने वाली, रक्तकमल के समान नेत्र वाली, मधुमद से युक्त, पुष्पधनुष धारण करने वाली, मधुमुखी कामेश्वरी भूतिनी हमारी रक्षा करे।।५९।।

तत्र स्थानं समागत्य कृत्वा मांसस्य भक्षणम् ।
मांसादिना बलिं दत्त्वा सहस्रं जपमाचरेत् ।।६०।।
मनुमर्कं सहस्रन्तु जपित्वा सिद्धिमाप्नुयात् ।
जपन्निशीथमायाति रक्तेनार्घ्यं निवेदयेत् ।।६१।।
कामेश्वरी भवेत्तुष्टा भार्या भवति कामिता ।
सर्वाशां पूरयत्येव राज्यं यच्छति निश्चितम् ।।६२।।

उस (मातृ) स्थान पर जाकर मांस का भक्षण करे तथा मांसादि की बलि प्रदान कर मन्त्र का एक हजार जप करे। इस प्रकार बारह हजार जप करने पर सिद्धि प्राप्त होती है। रात्रि में जप करते समय रक्त से अर्घ्य प्रदान करे। ऐसा करने पर कामेश्वरी देवी सन्तुष्ट होती है तथा साधक की भार्या बनकर उसकी समस्त

आशायें पूर्ण कर उसे राज्य तक प्रदान करती है; यह निश्चित है॥६०-६२॥

कुमारीसाधनम्

हूं हूं फट् फट् देव्यै हूं हूं हूं ।

क्रोधद्वयास्त्रयुग्मं च देवीति पदमुद्धरेत्
ङेऽन्तं क्रोधत्रयं गुप्तं कुमारीमन्त्रमुत्तमम् ।।६३।।

हूं हूं फट् फट् देव्यै हूं हूं हूं– यह कुमारीमन्त्र है। क्रोधद्वय (हूं हूं), अस्त्रयुग्म (फट् फट्) एवं 'देव्यै' यह पद, पुनः क्रोधत्रय (हूं हूं हूं) से कुमारी देवी का मन्त्र बनता है॥६३॥

ध्यानम्

दिव्यकार्मुकहेमाभा कुमारी दिव्यरूपिणी ।
सर्वालङ्कारसंयुक्ता भार्या भवति साधिता ।।६४।।

दिव्य धनुष को धारण करने वाली, स्वर्ण के समान कान्ति वाली, दिव्य रूप वाली, समस्त अलङ्कारों से विभूषित कुमारी देवी भार्यारूप में सिद्ध होती है॥६४॥

रात्रौ देवगृहं गत्वा तत्र शय्यां प्रकल्पयेत् ।
सितवस्त्रं चन्दनं च ज्योतिःपुष्पं प्रदापयेत् ।।६५।।
धूपं तु गुग्गुलं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेन्मनुम् ।
जपान्ते नित्यमायाति चुम्बआलिङ्गनादिभिः ।।६६।।
कामिता जायते भार्या सत्यं देवी कुमारिका ।
ददात्यष्टौ च दीनारान्दिव्यवस्त्रयुगं तथा ।।६७।।
कामिकं भोजनं दिव्यं परिवारस्य दास्यति ।
अन्याश्रमगृहाद्द्रव्यमानीयाशु प्रयच्छति ।।६८।।
नित्यं सहस्रं जप्त्वा तु सा चायाति कुमारिका ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं श्रृणु मे प्राणवल्लभे ।।६९।।

रात्रि में किसी देवमन्दिर में जाकर वहाँ शय्या का निर्माण करे। श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन एवं सुगन्धित श्वेत पुष्प अर्पित करे। गुग्गुल का धूप प्रदान कर आठ हजार मन्त्र का जप करे। जप के अन्त में कुमारी देवी आती है तथा साधक का चुम्बन एवं आलिंगन करके उसकी भार्या बनकर उसे आठ स्वर्णमुद्रायें प्रदान करती है; साथ ही दिव्य वस्त्र के साथ-साथ इच्छित एवं दिव्य भोजन देती है तथा

अपनी सहयोगिनियों सहित साधक की सेवा करती है। देवी जितना भी धन प्रदान करे, उन सबको व्यय कर देना चाहिये। कुछ भी शेष नहीं रखना चाहिये। हे प्राणवल्लभे। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, जो भी पुरुष कुमारी देवी के मन्त्र का एक हजार जप करता है, उसके समीप कुमारी देवी आती है तथा अन्य का भी धन लाकर साधक को दे जाती है॥६५-६९॥

मुहुर्मुहुर्जपन्मन्त्रं क्रोधस्य मन्त्रमुत्तमम् ।
क्रोधाधिपं व्योमवक्त्रं वज्रपाणिं सुरान्तकम् ।।७०।।
एतन्मन्त्रमविज्ञाय यो जपेत्सिद्धिकांक्षया ।
तस्य स्यान्निष्फलं कर्म अन्ते नरकमाप्नुयात् ।
कलिकल्पतरोर्वल्ली भूतिनी सिद्धिरुच्यते ।।७१।।

क्रोधमन्त्र का बार बार जप करना अतिश्रेष्ठ है। इस मन्त्र को जो लोग विना जाने ही जप करते हैं, उन्हें कभी भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती और अन्त में वे नरकगामी होते हैं। कलियुग में भूतिनीसाधन को कल्पवृक्ष के समान कहा गया है।॥७०-७१॥

सुन्दरीसाधनम्

साधनक्रमः

अतः श्रृणु परं देवि सुन्दरीसिद्धिसाधनम् ।
सुन्दर्यादिप्रभेदेन प्रत्येकं पूजयेच्छिवे ।।७२।।
प्रातरुत्थाय सुस्नाते नित्यकर्म समाचरेत् ।
ततः प्रासादमारुह्य पूजास्थानं सुशोभनम् ।।७३।।
बिल्वमूले श्मशाने वा प्रान्तरे च चतुष्पथे ।
तत्रस्थः साधयेद्योगी योगिन्यादि च भूतिनीम् ।।७४।।

हे देवि! अब सुन्दरी सिद्धि साधन का श्रवण करो। हे शिवे! सुन्दरी आदि का भेदानुसार पूजन करे। साधक प्रातःकाल शय्या से उठकर स्नानादि कर्म करने के उपरान्त घर के पूजास्थल में, बेलवृक्ष के मूल में, श्मशान में, वनप्रान्तर में या चतुष्पथ (चौराहे) में भूतिनी का साधन करे॥७२-७४॥

अजिनासनगः शुद्धस्तिलकं मूर्ध्नि कारयेत् ।
ततो विधिवदाचम्य सूर्यार्घ्यं प्रददेत्ततः ।।७५।।

स्वस्तिवाचनिकं कृत्वा शान्तिपाठं पुनः पुनः ।
गणेशं बटुकञ्चैव पूजयेद्यन्त्रकोपरि ।।७६।।
ततश्चोदङ्मुखो भूत्वा संकल्पं तत्र कारयेत् ।
गणेशं क्रोधभैरवं च पूजयेत्परमेश्वरि ।।७७।।
मूलमन्त्रेण प्राणायामं षडङ्गन्यासमाचरेत् ।
पूर्ववच्च पुनर्ध्यात्वा मानसैः पूजयेत्ततः ।।७८।।
कृत्वार्घ्यं स्थापनं तत्र पद्ममष्टदलं लिखेत् ।
तन्मध्ये च विनिर्माय चन्दनेन विलेपनम् ।।७९।।
लज्जाबीजं लिखेत्तत्र पुनर्ध्यात्वा प्रपूजयेत् ।
निशायां पूजयेद्वीरं दिवसे पूजयेत्पशुम् ।।८०।।
मूलमन्त्रं महादेव मासं व्याप्य जपेत् सुधीः ।
अर्द्धरात्रे ततः पूजां बलिं कृत्वा विधानतः ।
निर्भयः सञ्जपेन्मन्त्रं हृद्गतं च निवेदयेत् ।।८१।।

मृगचर्म के आसन पर आसीन होकर स्वयं के माथे पर तिलक करे तथा विधिपूर्वक आचमन करके सूर्य भगवान् को अर्घ्य प्रदान करे एवं स्वस्तिवाचन के साथ शान्तिपाठ करे। यन्त्र के ऊपर भगवान् गणेश एवं बटुक भैरव का पूजन करे। तदुपरान्त उत्तर की ओर मुख कर संकल्प करे। हे परमेश्वरि! गणेश एवं भैरव का पूजन कर मूलमन्त्र से प्राणायाम एवं षडंगन्यास करे, तत्पश्चात् देवी का मानसिक ध्यान करे। अर्घ्य का स्थापन कर एवं अष्टकमलदल लिखकर उसमें चन्दन का लेप करे। इस दल के मध्य में लज्जाबीज (ह्रीं) लिखकर ध्यान कर पूजन करे। रात्रि में वीरभाव से एवं दिन में पशुभाव से पूजन करे। हे महादेवि! साधक एक मास तक देवी की साधना एवं पूजा करे। विधिपूर्वक बलि देकर अर्द्धरात्रि में पूजन करे एवं निर्भय होकर मन्त्र का जप करे।।७५-८१।।

यक्षसाधनम्

अतः परं महादेवि! यक्षसाधनमुत्तमम् ।

हे महादेवि! अब श्रेष्ठ यक्षसाधन का श्रवण करो।

यक्षमन्त्रः

गगनो ग्रहणश्चैव युक्तचन्द्रार्द्धशेखरः ।।८२।।

एकाक्षरमहामन्त्रो साधकैर्जप्यते यदि ।
संख्ययाष्टसहस्राश्च सर्वसिद्धिप्रदायकः ।।८३।।

'हं' इस एकाक्षर यक्षमन्त्र का आठ हजार जप करने से साधक को सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।।८२-८३।।

श्रीदेव्युवाच

भीमवक्त्रादियक्षाणां महामन्त्राः श्रुता मया ।
चन्द्रशेखर तद्ध्यानं संक्षेपेण वद प्रभो ।।८४।।

श्री देवी जी ने कहा- हे चन्द्रशेखर! भीमवक्त्रादि यक्षों का नाम मैंने सुना। अब उनका ध्यान संक्षेप में कहने की कृपा करें।।८४।।

यक्षाणां ध्यानानि

भीमवक्त्रध्यानम्

प्रत्यालीढपदं कृष्णं खर्वकर्बुरमूर्धजम् ।
द्विभुजं दक्षिणे कर्त्रीं वामे खर्परधारिणीम् ।
व्याघ्रचर्माम्बरधरं त्रिनेत्रां भीषणाननाम् ।।८५।।

प्रत्यालीढ़ पद, कृष्ण वर्ण, खर्व-कर्बूरमूर्धज (केश), दो भुजायें, दाहिनी भुजा में कर्तरी, वाम भुजा में खर्पर को धारण करने वाले, व्याघ्रचर्म को धारण करने वाले एवं त्रिनेत्रधारी भीमवक्त्र का हम ध्यान करते हैं।।८५।।

महावक्त्रध्यानम्

ध्यायेद्देवं महावक्त्रमग्निवर्णं त्रिनेत्रकम् ।
द्विभुजं दक्षिणे खड्गं खेटकं वामहस्तकम् ।।८६।।
कृष्णकेशन्तु कुटिलं विकृतास्यं भयानकम् ।
साधकाय प्रयच्छन्तमभयं वरमेव च ।।८७।।

अग्नि के समान वर्ण वाले, त्रिनेत्रधारी, दो भुजायें धारण करने वाले, दाहिनी भुजा में खड्ग एवं बायीं में खेटक को धारण करने वाले, काले केश वाले, कुटिल एवं चौड़े मुख वाले, भयानक, साधक के लिये अभय व वर प्रदान करने वाले महावक्त्र यक्ष का हम ध्यान करते हैं।।८६-८७।।

सिंहवक्त्रध्यानम्

ध्यायेद्देवं सिंहवक्त्रं जटाभारसमन्वितम् ।

विकृतास्यं द्विजिह्वं च चतुर्नेत्रं द्विकर्णकम् ।।८८।।
द्विभुजं च गदापाणिं वामे चाऽभयसंयुतम् ।।८९।।

जटाभार से समन्वित, सिंह के समान मुख वाले, दो जिह्वा वाले, हाथ में गदा धारण करने वाले, चार नेत्र वाले, वाम हाथ से अभय प्रदान करने वाले सिंहवक्त्र का हम ध्यान करते हैं।।८८-८९।।

हयाननध्यानम्

श्वेतो हयाननः सर्वो द्विभुजोऽतिभयानकः ।
दक्षे डमरुकं धत्ते वामे चैव त्रिशूलकम् ।।९०।।

श्वेत वर्ण, अश्व के समान मुख वाले, छोटे शरीर वाले, भयानक स्वरूप वाले, दाहिने हाथ में डमरु एवं बायें हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले हयानन यक्ष हमारी रक्षा करें।।९०।।

महावीरध्यानम्

ध्यायेद्देवं महावीरं द्विकर्णन्तु त्रिनेत्रकम् ।
द्विभुजं हास्यवदनं वराऽभयविधारकम् ।।९१।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे गौरीश्वर-
संवादेषोडशः पटलः।।१६।।

दो कान वाले, तीन नेत्र वाले, दो भुजा एवं स्मित मुख वाले, वर एवं अभय प्रदान करने वाले महावीर यक्ष का हम ध्यान करते हैं।।९१।।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकरसंवादात्मक
सोलहवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१६।

+++

अथ सप्तदशः पटलः

मृत्युञ्जयविधानम्

श्रीदेव्युवाच

प्राणनाथ कृपासिन्धो ब्रूहि शास्त्रविशारद।
मृत्युञ्जयस्य पूजायाः किं फलं किं विधानकम्।।१।।

श्री देवी जी ने कहा– हे प्राणनाथ! हे कृपासिन्धु! हे शास्त्रविशारद! मृत्युञ्जय के पूजा की विधि क्या है? उसका फल क्या है? इन सबका आप मुझसे वर्णन करें॥१॥

श्रीशिव उवाच

वक्तुं नाहं क्षमो गौरि त्वयि स्नेहात्प्रकाशितम् ।
मृत्युञ्जयविधानं तु न वक्तव्यं बहिर्मुखे ।।२।।
मुखे तु देवि! वक्तव्यं यत्नतः प्राणवल्लभे ।
मृत्युञ्जयो महादेवः साक्षान्मृत्युहरः परः ।।३।।
विधानं तस्य संक्षेपाद्वक्तव्यं शृणु सुन्दरी ।
देवेशि रोगशान्त्यर्थं तस्य पूजाविधिर्यथा ।।४।।
मृत्युञ्जयं समापूज्य लिङ्गं त्रिभुवनेश्वरम् ।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।।५।।
यस्तु सम्पूजयेद्भक्त्या लिङ्गं मृत्युञ्जयाभिधम् ।
यमोऽपि प्रणमेद्भक्त्या किं करिष्यति पामरः ।।६।।

श्री शिव ने कहा– हे गौरि! यद्यपि मुझे इस प्रयोग को प्रकट करने की इच्छा नहीं है; फिर भी तुम्हारे स्नेहवश इसे कहता हूँ। मृत्युञ्जय विधान अन्य किसी भी पुरुष या साधक के प्रति प्रकट नहीं करना चाहिये। हे देवि! हे प्राणवल्लभे! श्रद्धावान व निष्ठवान साधक के प्रति ही इसे प्रकट करना चाहिये। मृत्युञ्जय महादेव साक्षात् मृत्यु का हरण करने वाले हैं। हे सुन्दरि! मृत्युञ्जय शिव का विधान संक्षेप में वर्णन करता हूँ, श्रवण करो। हे देवेशि! रोग की शान्ति हेतु त्रिभुवनेश्वर मृत्युञ्जय शिवलिङ्ग का पूजन करने से रोगी रोग से छूट जाता है, बन्दी बन्धन से मुक्त हो जाता है। जो व्यक्ति या साधक मृत्युञ्जय शिवलिङ्ग का पूजन करते हैं उनको यमराज भी भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं; पामर मनुष्यों की तो बात ही क्या है?॥२-६॥

तस्य पूजाविधिं वक्ष्ये शृणु मत्प्राणवल्लभे ।
जातिभेदैर्मृत्तिकां तु गृहीत्वाऽशीतितोलकाम् ।।७।।
निर्माय पार्थिवं लिङ्गं कान्त्याधारे निवेशयेत् ।
पौराणिकेन मन्त्रेण कुर्याच्च पठनं बुधः ।।८।।
स्नापयेत् पञ्चगव्येन प्रत्येकस्याष्टतोलकम् ।

स्वस्वमन्त्रैश्च प्रत्येकद्रव्येण स्नापयेत् सुधीः ।।९।।
रोगक्षयेच्छया विद्वान्नामगोत्रादिपूर्वकम् ।
उपविश्यासने विप्रो धृत्वा धौतं च वाससम् ।।१०।।
रुद्राक्षमालां कण्ठे वै धृत्वा भस्मत्रिपुण्ड्रकम् ।
उपचाराः षोडशं तु देया भक्त्या प्रयत्नतः ।।११।।
सुवर्णस्यासनं देयं तथैवाभरणानि च ।
वस्त्रयुग्मं प्रदद्यात्तु परिधेयं यथा भवेत् ।।१२।।

हे प्राणवल्लभे! अब पूजाविधि का श्रवण करो। जातिभेद से अस्सी तोले की मिट्टी का पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर उसे कांच के पात्र में स्थापित कर बुद्धिमान साधक पौराणिक मन्त्रों के द्वारा उसका पूजन करे। प्रत्येक को आठ तोले के पञ्चगव्य से स्नान कराये। अपने-अपने मन्त्र के द्वारा पृथक-पृथक् द्रव्य से स्नान कराये। रोगनाश की इच्छा हेतु नाम व गोत्र का उच्चारण कर स्नान कराये। विप्र आसन पर आसीन होकर एवं धुले हुये वस्त्र धारण कर गले में रुद्राक्ष की माला धारण कर भस्म का त्रिपुण्ड्र लगाकर भक्तिपूर्वक षोडशोपचार विधि से पूजन करके स्वर्णनिर्मित आसन प्रदान करे एवं वस्त्रादि तथा आभूषण भी प्रदान करे।।७-१२।।

शिवयन्त्रम्

षट्कोणमण्डलं कृत्वा तदन्ते साध्यनामकम् ।

प्रासादबीजं हौं संलिख्य यतः षट्कोणेषु प्रणवसहितपञ्चाक्षरवर्णान-षडङ्गमन्त्रांश्च विलिख्य तद्बहिः पञ्चदलानि विरच्य तद्दले ॐ ईशानाय नमः। ॐ तत्पुरुषाय नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ सद्योजाताय नमः। ॐ वामदेवाय नमः। इति पञ्चमन्त्रान् प्रागादिक्रमेण लिखेत्। तद्बहिरष्टदलानि रचयित्वा तद्दलेषु मातृकावर्णान् लिखेत्। तद्बहिर्वृत्तं त्र्यम्बकेण वेष्टयेत् । एतद्यन्त्रं जपहोमादिना सम्पूज्य धारयेत्। आयुरारोग्यैश्वर्यादिसिद्धिर्भवति।

सर्वप्रथम षट्कोण बनाकर उसके मध्य में साध्य व्यक्ति का नाम लिखे तथा प्रासादबीज 'हौं' लिखकर षट्कोणों में प्रणवयुक्त पंचाक्षर मन्त्रवर्णों को लिखे तथा षडङ्गमन्त्रों को भी लिखे। उसके बाह्य भाग में पञ्चदल निर्मित कर उसमें ॐ ईशानाय नमः, ॐ तत्पुरुषाय नमः, ॐ अघोराय नम, ॐ सद्योजाताय नमः, ॐ वामदेवाय नमः— इन पाँच मन्त्रों को प्रागादि क्रम से लिखे। उस यन्त्र

के बाहरी भाग में अष्टदल निर्मित कर उन दलों में मातृका वर्णों को लिखे। अष्टदल के बाहरी भाग को त्र्यम्बक मन्त्र से वेष्टित करे। इस यन्त्र को जप-होम आदि से पूजन करने के पश्चात् धारण करे तो आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य आदि की वृद्धि होती है।

मृत्युञ्जययन्त्रम्

अथवा शृणु देवेशि यन्त्रं सर्वसुसिद्धिदम् ।।१३।।
मध्ये साध्याक्षराढ्यं ध्रुवमभिविलिखेन्मध्यमं दिग्दलेषु
कोणेष्वन्तं मनोस्तत् क्षितिभुवनमयो दिक्षु चन्द्रं विदिक्षु ।
ढान्तं यन्त्रं तदुक्तं सकलभयहरं क्ष्वेडभूतापमृत्यु-
व्याधिव्यामोहदुःखप्रशमनमुदितं श्रीपदं कीर्तिदायि ।।१४।।

हे देवि! अब सर्वसिद्धिप्रदायक मृत्युञ्जय यन्त्र का श्रवण करो। इसके धारण करने से अकालमृत्यु, व्याधि, दुःख, मोह आदि का नाश होकर श्री एवं कीर्ति की प्राप्ति होती है। (यन्त्रनिर्माण की विधि मूल में लिखी है।)।।१३-१४।।

मधुपर्कं कांस्यपात्रे दद्याद्भोजनयुग्मकम् ।
बिल्वपत्रसहस्रन्तु ह्यभग्नं विनिवेदयेत् ।।१५।।
एवं संपूज्य लिङ्गैकं द्विसहस्रं मनुं जपेत् ।
समिद्भिस्तु गुडूच्यास्तु तत्र होमं समाचरेत् ।।१६।।
दक्षिणां ब्राह्मणे देवि सुवर्णं वस्त्रकं तथा ।
तदर्धं वा तदर्धं वा यथाविभवमानतः ।।१७।।
अंगहीना न कर्त्तव्या पूजा चाफलदा यतः ।
एकलिङ्गं समाराध्य फलं स्यादन्यके युगे ।।१८।।
तत्फलं लभते देवि कलौ संख्या चतुर्गुणा ।
आम्रपात्रे तु संस्थाप्य जलं चाशीतितोलकम् ।।१९।।
तज्जलेनैव देवेशि कुलैः सम्मार्ज्य रोगिणम् ।
क्षिपेद्दीपशिखायां च मन्त्रमुच्चार्य मानकम् ।।२०।।
एवं विधिविधानेन पूजयेन्मम लिङ्गकम् ।
यादृग्यादृग् भवेद्रोगो नाशमेति मयोदितम् ।।२१।।
साङ्गेन पूजयित्वा तु लभते वाञ्छितं फलम् ।

अङ्गव्यतिक्रमेणैव वृथा भवति वासना ।।२२।।
रोगी प्रमुच्यते सद्यो भोगीवोज्झितकञ्चुकः ।
यदि मद्वचने भक्तिस्तदा मुक्तो भवेद्ध्रुवम् ।।२३।।
अन्यथा यदि देवेशि सर्वं भवति निष्फलम् ।।२४।।

मधु एवं भोजन कांस्य के पात्र में प्रदान करे। टूटे-फूटे एवं छिद्र जिस बेलपत्र में न हों, उनको एक हजार की संख्या में प्रदान करे। इस प्रकार लिंग का पूजन कर दो हजार मन्त्र का जप करे। गिलोय के जड़ की समिधाओं से हवन करे। हे देवि! स्वर्ण एवं वस्त्र ब्राह्मणों को प्रदान करे तथा शुभ दक्षिणा, यथाशक्ति आधा अथवा आधे का आधा, जितना भी हो सके— भक्तिपूर्वक प्रदान करे। अंगहीन पूजादि कर्म न करे; क्योंकि इससे प्रयोग विफल हो जाता है। एकलिङ्ग का पूजन करने से अन्य युगों में भी फल प्राप्त होता है। हे देवि! कलियुग में तन्त्रशास्त्र के अनुसार चार गुना अधिक जपादि कर्म करे तो फल प्राप्त होता है। आम्र पात्र में अस्सी तोले जल भर कर हे देवि! रोगी का कुशाओं से मार्जन करे। इस विधि के अनुसार शिवलिंग का पूजन करने से समस्त रोग शीघ्र ही विनष्ट हो जाते हैं। सांगोपाङ्ग पूजन से वांछित फल की प्राप्ति होती है। अंग के व्यतिक्रमण से सारी वासना निरर्थक हो जाती है, रोगी रोग से एवं भोगी समस्त दोषों से मुक्त हो जाता है। हे देवि! जिन साधकों को मेरे वचनों पर भक्ति एवं विश्वास है, वे निश्चित रूप से मुक्त हो जाते हैं। अन्यथा समस्त ज्ञान एवं क्रियायें निष्फल हो जाती हैं।।१५-२४।।

यन्त्रपूजाविधानम्

अतः परं देवि!शृणु यन्त्रपूजाविधानकम् ।
कृतनित्यक्रियो देवि! स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ।
संकल्पं च ततः कुर्याद्विधिवाक्यानुसारतः ।।२५।।

अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्रीपूर्वकदेवशर्मा यन्त्राधिष्ठित। देवतायाः पूजार्थममुकमन्त्रसंस्कारमहं करिष्ये।

इति संकल्प्य महादेवि! गुरोरर्चनमाचरेत् ।
पञ्चगव्यं ततः कृत्वा शिवमन्त्रेण मन्त्रितम् ।।२६।।
तत्र चक्रं क्षिपेन्मन्त्री प्रणवेन समाकुलम् ।
तदुद्धृत्य ततश्चक्रं स्थापयेत्स्वर्णपात्रके ।।२७।।

पञ्चामृतेन दुग्धेन कस्तूरीकुङ्कुमेन च ।
पयोदधिघृतक्षौद्रशर्कराद्यौरनुक्रमात् ।।२८।।
तोयधूपान्तरैः कुर्यात् पञ्चामृतमनुत्तमम् ।
अष्टाभिः कलशैर्देवीमष्टाभिर्वारिपूरितैः ।।२९।।
कषायजलसम्पन्नैः कारयेत् स्नानमुत्तमम् ।
स्नानं समाप्य तां देवीं स्थापयेत् स्वर्णपीठके ।।३०।।

हे देवि! अब इसके उपरान्त यन्त्रपूजा का विधान श्रवण करो। हे देवि! स्वस्तिवाचन करके नित्यक्रियादि से निवृत्त होकर विधि के अनुसार संकल्प करे। इस प्रकार संकल्प करके हे महादेवि! गुरुपूजन करे, तदुपरान्त पञ्चगव्य का निर्माण कर उसे शिवमन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रणवयुक्त चक्र निर्मित करके उसे स्वर्णपात्र में स्थापित करे। पञ्चामृत, दुग्ध, कस्तूरी, कुङ्कुम, दूध, दधि (दही), घृत (घी), मधु (शहद), शर्करा इत्यादि से क्रम के अनुसार यन्त्र को स्नान कराये एवं धूप, दीप आदि प्रदान करे। आठ प्रकार के जलों से पूर्ण आठ कलशों में सभी औषधि आदि सुगन्धित पदार्थ मिश्रित कर उस जल से स्नान कराये एवं स्नान के पश्चात् देवता को स्वर्णपीठ पर स्थापित करे॥२५-३०॥

गायत्री यथा– यन्त्रराजाय विद्महे महामन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।

स्पृष्ट्वा यन्त्रं कुशाग्रेण गायत्र्या चाभिमन्त्रयेत् ।
अष्टोत्तरशतं देवि देवताभावसिद्धये ।।३१।।
आत्मशुद्धिं ततः कृत्वा षडङ्गैर्देवतां यजेत् ।
तत्रावाह्य महादेवि! जीवन्यासञ्च कारयेत् ।।३२।।

तत्पश्चात् **यंत्रराजाय विद्महे महामन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्**– इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण कर यन्त्र को कुश के अग्रभाग से अभिमन्त्रित करे हे देवि! देवताभाव की सिद्धि हेतु मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करे आत्मशुद्धि कर षडंग द्वारा देवता का पूजन करे। हे महादेवि! यन्त्र में देवता का आवाहन कर जीवन्यास अर्थात् प्राणप्रतिष्ठा करे॥३१-३२॥

प्राणप्रतिष्ठा

अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि, चैतन्यं देवता, प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः।

उपचारैः षोडशभिर्महामुद्रादिभिस्तथा ।
फलताम्बूलनैवेद्यैः शिवं तत्र समर्चयेत् ।।३३।।
पट्टसूत्रादिकं दद्याद्वस्त्रालङ्कारमेव च ।
अगुरुं चामरं घण्टां यथायोग्यं महेश्वरि ।।३४।।
सर्वमेतत्प्रयत्नेन दद्यादात्महिते रतः ।
ततो जपेत्सहस्रन्तु सकलेप्सितसिद्धये ।।३५।।
जपसमापनं कुर्यादष्टाङ्गेन नमस्कृतम् ।
अष्टोत्तरशतं हुत्वा सम्पाताज्यं विनिक्षिपेत् ।।३६।।
होमकर्मण्यशक्तश्चेद्द्विगुणं जपमाचरेत् ।
गुरवे दक्षिणां दद्यात्ततो देवीं विसर्जयेत् ।।३७।।

सर्वप्रथम मूल में लिखे अनुसार विनियोग करे। तदुपरान्त सोलह (षोडश) उपचार एवं महामुद्रादि द्वारा पूजन करे। फल, ताम्बूल एवं नैवेद्य शिवजी को समर्पित करे। पट्टसूत्र (रेशमी वस्त्र) तथा विभिन्न प्रकार के वस्त्र, आभूषण आदि से पूजन कर शिवजी को प्रसन्न कर आत्महित हेतु हे महेश्वरि! उन्हें अगुरु, चामर घण्टा आदि यथाशक्ति प्रदान करे। तत्पश्चात् सकलसिद्धि हेतु सहस्र बार मन्त्र का जप करे। जप समाप्त होने पर अष्टांग नमस्कार करे। एक सौ आठ बार हवन करके अग्नि में घृत प्रदान करे। होमकर्म में अशक्त होने पर मन्त्र का दुगुना जप करे और अन्त में गुरु को दक्षिणा प्रदान कर देवता का विसर्जन करे।।३३-३७।।

अस्य प्रयोगः

कृतनित्यक्रियः स्वस्तिवाचनपूर्वकं सङ्कल्पं कुर्यात्। अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्री अमुकदेवशर्मा अमुकदेवतापूजार्थममुकयन्त्रसंस्कारमहं करिष्ये। ततः पञ्चगव्यमानीय 'हौं' इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य प्रणवेन यन्त्रं तत्र क्षिपेत्। तत उत्थाप्य स्नापयेच्छीतलजलचन्दनगन्धकस्तूरी कुङ्कुमैः। स्नापयित्वा पञ्चगव्यमानीय 'हौं' इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य प्रणवेन शोधयित्वा स्नापयेत्। तत्र क्रमः। प्रथमं क्षीरेण स्नापयित्वा धूपं दद्यात्। एवं दध्ना घृतेन मधुना शर्करया च। ततोऽष्टाभिः कलशैः स्नापयेत्। कुङ्कुमगोरोचनया चन्दनमिश्रितैस्तोयैः स्नापयेत्। सर्वत्र स्नानं मूलमन्त्रेण ततो यन्त्रमुत्तोल्य कुशाग्रेण तत्स्पृष्ट्वा गायत्र्यष्टोत्तरशताभिमन्त्रितं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। अस्य प्राणप्रतिष्ठमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि चैतन्यं देवता प्राणप्रतिष्ठायां

विनियोगः। तद्यथा– आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः। अमुकदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः। जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन इत्यादि प्राणान् प्रतिष्ठाप्य तत्र प्रकृतिदेवतामावाह्य षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत्। तत्र पट्टसूत्रादिकं दत्त्वा अष्टोत्तरशतं सहस्रं वा जपित्वा शक्तश्चेद्बलिं दद्यात्। ततोऽष्टोत्तरशतं होमं कुर्यात्। होमाभावे द्विगुणो जपः कार्यः। ततो दक्षिणां दत्त्वा छिद्रावधारणं कुर्यात्।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे सप्तदशः पटलः।।१७।।

नित्य कर्म करके स्वस्तिवाचन कर संकल्प करे। तदुपरान्त पञ्चगव्य को **'हौं'** इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रणव के द्वारा यन्त्र का उसमें निक्षेप करे, तत्पश्चात् शीतल जल, चन्दन, गन्ध, कस्तूरी एवं कुङ्कुम के द्वारा स्नान कराये। तदुपरान्त **हौं** इस मन्त्र का उच्चारण कर प्रणव के द्वारा शोधन कर स्नान कराये। सर्वप्रथम दुग्ध से स्नान कराकर धूप प्रदान करे। पुनः इसी क्रम से दही, घी, मधु एवं शर्करा से स्नान करा कर आठ कलश के द्वारा स्नान कराये। कुंकुम, रोचन (गोरोचन) और चन्दनमिश्रित जल से स्नान कराये। सर्वप्रथम मूलमन्त्र से स्नान कराये, तदुपरान्त यन्त्र को उठाकर कुश के अग्रभाग से स्पर्श कर गायत्री मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित कर प्राणप्रतिष्ठा करे। प्राणप्रतिष्ठा का विनियोग मूल में लिखा है। आं ह्रीं, क्रौं, यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हौं हंसः, अमुकदेवतायाः प्राणा इह प्राणा, जीव इह स्थितः इत्यादि उच्चारण कर देवता का आवाहन कर पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार द्वारा पूजन करे तथा रेशमी वस्त्र आदि प्रदान कर एक सौ आठ बार अथवा एक हजार बार मन्त्र का जप करे। सामर्थ्य होने पर बलि प्रदान करे; तदुपरान्त एक सौ आठ बार हवन करे। होम के अभाव में दुगना जप करे। तत्पश्चात् दक्षिण प्रदान कर छिद्रावधारण करे।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकरसंवादात्मक
सत्रहवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१७।।

+++

अथाष्टादशः पटलः

तत्रादौ षट्कोणमण्डलं कृत्वा तदन्ते साध्यनामयुक्तं प्रासादबीजं विलिख्य षट्कोणेषु प्रणवसहितपञ्चाक्षरवर्णान् विलिख्य विवरेषु षडङ्गमन्त्रात् तद्बहिः पञ्चदलानि विरच्य तद्दलेषु ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ईशानाय नमः, ॐ तत्पुरुषाय नमः, ॐ अघोराय नमः ॐ सद्योजाताय नमः इति पञ्च मन्त्रान् प्रागादिक्रमेण लिखेत्। तद्बहिरष्टदलानि रचयित्वा तद्दलेषु मातृकावर्णान् लिखेत्। तद्बहिर्वृत्तं त्र्यम्बकेन वेष्टयेत्। तद्यन्त्रे जपहोमादिः कार्यः।

मृत्युञ्जयमन्त्रम्

मध्ये साध्याक्षराढ्यं ध्रुवमभिविलिखेन्मध्यमं दिग्दलेषु
कोणेष्वन्तं मनस्तक्षितिभुवनमथो दिक्षु चन्द्रं विदिक्षु ।
ढान्तं यन्त्रं तदुक्तं सकलभयहरं क्ष्वेडभूतापमृत्युः
व्याधिव्यामोहदुःखप्रशमनमुदितं श्रीप्रदं कीर्तिदायि ।।

रोगशान्त्यर्थं त्र्यम्बकमृतसञ्जीविनीविधानम्

स्वच्छं स्वच्छारविन्दस्थितमुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुम्भौ
द्वाभ्यामेणाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्यपूर्णौ ।
द्वाभ्यां द्वौ च स्रवन्तौ शिरसि शशिकलां चामृतैःप्लावयन्तं
देहं देवो दधानं विदिशतु विशदां कल्पजालैः श्रियं वः ।।
आदौ प्रासादबीजं तदनु मृतिहरं तारकं व्याहृतिञ्च
प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति च सततं संपुटं चानुलोमम् ।
गायत्र्याः पूर्वपादं तदनु च शिवदं त्र्यम्बकस्यादिमं तत्
प्रोच्चार्यं ध्यानपूर्वं जपति हि मननोऽत्वेति मृत्युं ध्रुवं सः ।।

प्रासादबीजं 'हौं' मृतिहरं त्र्यक्षरं मृत्युञ्जयमन्त्रं ॐ जूं सः। तारकम् । ॐ व्याहृत भूर्भुवः स्वः। तेन हौं जूँ सः। ॐ भूर्भुवः स्वः ततस्त्र्यम्बकमन्त्रः पूर्वमन्त्रेणानुलोमक्रमेण सम्पुटितः; अस्य जपात् सर्वसिद्धिर्भवति। पुनः गायत्र्या प्रथमपादं त्र्यम्बकस्य प्रथमपादमित्यादि च ध्यानं पूर्वमुक्तम्।

इति श्रीक्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादेऽष्टादशः पटलः।।१८।।

सर्वप्रथम प्रासाद बीज, तदनन्तर मृतिहर, तारक एवं व्याहृति का

उच्चारण कर जो मनुष्य निरन्तर सम्पुटित एवं अनुलोम मन्त्र का जप करते हैं उनको सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। गायत्री का पूर्वपद उच्चरित करना चाहिये। हौं यह प्रासादबीज है। मृत्युहर तीन अक्षर का **ॐ जूं सः**– यही त्र्यम्बक मन्त्र है। **ॐ** को तारक कहते हैं। **भूर्भुवः स्वः** को व्याहृति कहते हैं। **हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः**– इस अनुलोम क्रम के अनुसार सम्पुटित कर जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। तदुपरान्त गायत्री मन्त्र के प्रथम पाद एवं त्र्यम्बक मन्त्र के प्रथम पाद को सम्पुटित कर जप करे। ध्यान पूर्व में कहा जा चुका है।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकरसंवादात्मक
अट्ठारहवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१८।।

अथैकोनविंशः पटलः

श्रीदेव्युवाच

भगवन्! देवदेवेश! देवताभिः प्रपूजितः।
सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ।।१।।
मृत्युरक्षाकरं देव सर्वाशुभविनाशनम् ।
कथयस्वाद्य मे नाथ यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।।२।।

श्री देवी जी ने कहा- हे देवदेवेश! देवताओं से प्रपूजित! हे भगवन्! आपने मुझसे सब कुछ कहा; परन्तु मृत्युरक्षाकर समस्त अशुभ-नाशक कवच को नहीं कहा। अत: यदि आपका मेरे प्रति स्नेह है तो इसे भी मुझसे कहिये।।१-२।।

श्रीश्वर उवाच

अस्य मृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेव ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः मृत्युञ्जयो देवता साधकाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग।

शिरो मे सर्वदा पातु मृत्युञ्जयसदाशिवः ।
सत्र्यक्षरस्वरूपो मे वदनं च महेश्वरः ।।३।।
पञ्चाक्षरात्मा भगवान् भुजौ मे परिरक्षतु ।
मृत्युञ्जयस्त्रिबीजात्मा ह्यायू रक्षतु मे सदा ।।४।।
बिल्ववृक्षसमासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः ।

सदा मे सर्वतः पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृक् ।।५।।
द्वाविंशत्यक्षरो रुद्रः कुक्षौ मे परिरक्षतु ।
त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा ।।६।।
चिन्तामणिर्बीजपूरे ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः ।
सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः ।।७।।
सत्र्यक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वरः ।
मार्तण्डभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु ।।८।।
ॐ जूं सः महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरान्तकः ।
ऊद्ध्र्वमूर्द्धनि चेशानो मम रक्षतु सर्वदा ।।९।।
दक्षिणस्यां महादेवो रक्षेन्मे गिरिनायकः ।
अघोराख्यो महादेवः पूर्वस्यां परिरक्षतु ।।१०।।
वामदेवः पश्चिमस्यां सदा मे परिरक्षतु ।
उत्तरस्यां सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक् ।।११।।
इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् ।
प्रातर्मध्याह्नकाले तु यः पठेच्छिवसन्निधौ ।।१२।।
सोऽभीष्टफलमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः ।
कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ।।१३।।
सर्वसिद्धिकरं पुण्यं सर्वारिष्टविनाशनम् ।
योगिनीभूतवेतालाः प्रेतकूष्माण्डपन्नगाः ।।१४।।
न तस्य हिंसां कुर्वन्ति पुत्रवत्या लयन्ति ते ।
पठित्वाऽभ्यर्चयेद्देवि यथाविधिपुरःसरम् ।।१५।।
लक्षञ्च मूलमन्त्रस्य पुरश्चरणमुच्यते ।
तद्धारणे महादेवि! मृत्युरोगविनाशनम् ।।१६।।
एवं यः कुरुते मर्त्यः पुण्यां गतिमवाप्नुयात् ।
इति ज्ञातं महादेवि! तस्य वक्त्रे स्थितं सदा ।।१७।।
कवचस्य प्रसादेन मृत्युमुक्तो भवेन्नरः ।
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात्सत्यमेतन्मनोरमे ।।१८।।
तव स्नेहान्महादेवि कथितं कवचं शुभम् ।

न देयं कस्यचिद्भद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् ।।१९।।

इति श्रीक्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे एकोनविंशतितमः पटलः।।१९।।

श्री ईश्वर ने कहा– सर्वप्रथम मूल में पठित विनियोग करे। मृत्युञ्जय सदाशिव मेरे शिर की एवं, तीन अक्षरस्वरूप महेश्वर मेरे मुख की रक्षा करें। पञ्चवर्णात्मक भगवान् सदाशिव मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें। तीन बीजात्मा. मृत्युञ्जय मेरी आयु की रक्षा करें। बिल्ववृक्ष के नीचे वास करने वाले अव्यय सदाशिव, दक्षिणामूर्ति छत्तीस वर्ण रूप धारण करने वाले सभी स्थानों में मेरी रक्षा करें। बाइस रूपात्मक रुद्र मेरी कुक्षि की, त्रिवर्णात्मक नीलकण्ठ मेरे कण्ठ की, बीजपूर में चिन्तामणि के सदृश अर्द्धनारीश्वर भगवान् सदाशिव मेरे गुह्यभाग की एवं त्र्यक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वर मार्तण्डभैरव नित्य मेरे पैर की रक्षा करें। **ॐ जूं सः** इन महाबीजों के रूप को धारण करने वाले त्रिपुरान्तक मेरे ऊर्ध्व भाग की रक्षा करें। गिरिनायक महादेव दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें। अघोराक्ष्य महादेव पूर्व दिशा में रक्षा करें। वामदेव पश्चिम दिशा में रक्षा करें। सद्योजातस्वरूप उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें। हे देवि! देवदुर्लभ इस रक्षाकर कवच का जो व्यक्ति प्रात: और मध्याह्न काल में शिवसान्निध्य अर्थात् शिवमंदिर में पाठ करता है उसको इस कवच के प्रसाद से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। जो साधक इस कवच को दाहिनी भुजा पर धारण करता है, उसकी समस्त विपत्तियाँ नष्ट होकर श्री की प्राप्ति होती है। योगिनी, भूत, वेताल, प्रेत, कूष्माण्ड, पन्नग उसकी किसी भी प्रकार से हिंसा नहीं करते; अपितु उसका पुत्रवत् पालन करते हैं। हे देवि! इस कवच का यथाविधि पाठ कर पूजन करे। मूलमन्त्र का एक लाख जप पुरश्चरण कहलाता है। हे महादेवि! इसके धारण से मृत्यु एवं रोग नष्ट होते हैं। इस प्रकार करने से प्राणी पवित्र एवं उत्तम गति प्राप्त करता है। हे महादेवि! इस कवच के प्रसाद से मनुष्य मृत्युभय से मुक्त हो जाता है, अन्यथा हे मनोरमे! सिद्धि की हानि होती है। हे महादेवि! तुम्हारे स्नेहवश ही यह कवच मैंने तुमसे कहा है। हे भद्रे! अपनी समस्त कामनायें पूर्ण करने वाले इस कवच को अन्य किसी को नहीं देना चाहिये।।३-१९।

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकरसंवादात्मक
उन्नीसवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।१९।।

+++

अथ विंशतितमः पटलः

यन्त्रप्रकरणम्

वन्ध्यायन्त्रम्

अतः परं देवि! शृणु यन्त्रधारणमुत्तमम् ।
यन्त्रधारणमात्रेण सर्वाभीष्टफलं लभेत् ।।१।।
जन्मवन्ध्या च या नारी शुभपुत्रवती भवेत् ।
तदा गोरोचनाद्येन लिखेद्यन्त्रमनुत्तमम् ।।२।।
वृत्तद्वयं समालिख्य पद्मष्टदलं लिखेत् ।
प्रतिपद्मे लिखेन्मायाबीजं भूपुरकं ततः ।।३।।
भूर्जपत्रे लिखेद्यन्त्रं धारयेत्तु महेश्वरि ।
कुक्षौ धृत्वा महायन्त्रं शुभपुत्रवती भवेत् ।।४।।
प्रयोगान्तरमन्यत्र प्राणसङ्कटतो नहि ।
दक्षिणां गुरवे दत्त्वा गृह्णीयाद्यन्त्रमुत्तमम् ।।५।।

हे देवि! अब यन्त्रधारण का श्रेष्ठ विधान सुनो। यन्त्र के धारणमात्र से ही सभी अभीष्ट प्राप्त हो जाते हैं। जन्म से ही वन्ध्या नारी भी शुभपुत्रवती हो जाती है। गोरोचन आदि सुगन्धित पदार्थों से श्रेष्ठ यन्त्र की रचना करे। दो वृत्त अंकित कर अष्टदल कमल का निर्माण कर प्रति दल में मायाबीज (ह्रीं) लिखे तथा भूपुर की रचना करे। हे महेश्वरि! भोजपत्र के ऊपर लिखकर इस यन्त्र को धारण करने पर वन्ध्या स्त्री भी पुत्रवती होती है। गुरु को दक्षिणा प्रदान कर उनसे श्रेष्ठ यन्त्र को ग्रहण करना चाहिये।।१-५।।

वृत्तं चतुर्दलं पद्मं भूपुरेण समन्वितम् ।
वृत्तमध्ये लिखेद्देवि साधकाख्यां विशेषतः।।६।।
पुत्रवतीपदं पश्चात् भवत्विति पदं ततः ।
प्रणवैः पुटिता लज्जा त्रिधा पत्रेषु संलिखेत् ।।७।।
पूर्ववत्पूजयेद्देवि धारयेद्दक्षिणे भुजे ।
सत्यं सत्यं हि देवेशि वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।।८।।
दुर्भगा चेद्भवेन्नारी सुभगा मासतो भवेत् ।।९।।

वृत्त एवं चतुर्दल पद्म का निर्माण कर भूपुर अंकित करे। हे देवि! वृत्त

के मध्य में साधक के नाम को लिखे तथा 'पुत्रवती भवतु' इस पद को लिखे एवं प्रणव से सम्पुटित लज्जाबीज (ह्रीं) तीन दलों में लिखे। हे देवि! पूर्ववत् पूजन करके इसे दाहिनी भुजा में धारण करे। हे देवेशि! यह निश्चित रूप से सत्य है कि इसके धारण करने से दुर्भगा स्त्री भी एक महीने के भीतर ही सुभगा अर्थात् सौभाग्यवती हो जाती है॥६-९॥

रक्षायन्त्रम्

अतः परं प्रवक्ष्यामि महारक्षाकरं परम् ।
धारणाद्दानवपतिर्महारक्षाकरो भवेत् ॥१०॥
पञ्चदलं लिखेद्देवि 'ग्लौं' बीजेनैव लाञ्छितम् ।
गं पञ्चकं सर्वमध्ये लिखित्वा धारयेद्यदि ॥११॥
न तस्य पुत्रभीतिः स्यात्तत्र रक्षाकरो हरः ।
गोरोचनाकुङ्कुमाभ्यां भूर्जे संलिख्य धारयेत् ॥१२॥
तत्र पूजां महादेवि गणपतिस्तु समाचरेत् ।
पूजितं धारितञ्चैव सर्वोपद्रवनाशनम् ॥१३॥
वृत्तमष्टदलं पद्मं पुनः पद्मेषु संलिखेत् ।
गोरोचनाभिः संलिख्य धारयेत्परमेश्वरि ॥१४॥
उक्तरूपेण लिङ्गस्य पूजां कृत्वा महेश्वरि ।
धारयेद्यो भवेत्तस्य ह्यपमृत्युविनाशनम् ॥१५॥

अब महारक्षाकर यन्त्र कहता हूँ, जिसके धारण करने से दानवपति भी महारक्षाकर हो जाता है। हे देवि! पञ्चदल पद्म लिख कर उस पर **ग्लौं** बीज अंकित करे। समस्त कमलदलों के मध्य में **गं** बीज लिखकर पूजन करके धारण करने पर पुत्रभय कभी भी नहीं होता तथा स्वयं शंकरजी उसकी रक्षा करते हैं। भोजपत्र के ऊपर गोरोचन एवं कुङ्कुम से अंकित कर गणपति का पूजन कर यन्त्र धारण करे तो समस्त उपद्रव दूर हो जाते हैं। हे महेश्वरि! वृत्त, अष्टदल पद्म एवं पुनः पद्म गोरोचनादि से लिखकर धारण कर लिङ्गपूजा कर जो भी इसे धारण करता है, उसकी अपमृत्यु का विनाश हो जाता है॥१०-१५॥

पुत्रजननयन्त्रम्

बिन्दुवृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः ।
प्रतिपत्रेषु यंबीजं लिखेदथ पृथक्पृथक् ॥१६॥

पूर्ववत्पूजयेद्देवि धारणान्मृत्युनाशनम् ।
काकवन्ध्याजनस्यापि बहुपुत्रकरं परम् ।।१७।।
षट्कोणं विलिखेद् वृत्तं ततश्चाष्टदलं लिखेत् ।
षट्कोणेषु च षट् दीर्घान् विलिखेत्परमेश्वरि ।।१८।।
ऐं ह्लीं ॐ ऐं ह्लीं फट् स्वाहा लिखेदष्टदले ततः।.
सर्वमध्ये लिखेद्देवि ततः शृणु महेश्वरि ।।१९।।
प्रणवस्तु ततो माया साधकाख्यं तु ङेऽन्तकम् ।
सुपुत्रञ्च समालिख्य उत्पादय पदन्ततः ।।२०।।
विधाय चैवं विधिवद्धारयेद्यन्त्रमुत्तमम् ।
धारणात्सर्वसम्पत्तिर्भवेद्देवि न संशयः ।।२१।।

पूजनं पूर्वमुक्तम् । देवीं कालीमन्त्रेण पूजयेत् ।

बिन्दु एवं वृत्त अंकित करके अष्टदल पद्म लिखे तथा कमलदल के प्रत्येक पत्र पर **यं** बीज लिखे। हे देवि! पूर्ववत् अर्थात् पूर्व की भाँति पूजन कर इसे धारण करने से मृत्यु का नाश होता है। काकवन्ध्या नारी बहुपुत्रवती होती है। षट्कोण लिखकर वृत्त लिखे, तदुपरान्त अष्टदल कमल लिखे। हे परमेश्वरि! षट्कोण में प्रत्येक में बीजमन्त्र लिखे। **ऐं ह्लीं ॐ ऐं ह्लीं फट् स्वाहा** मन्त्र को अष्टदल में लिखे । हे महेश्वरि! जो सभी के मध्य में लिखा जायेगा, अब उसका श्रवण करो। यन्त्र के मध्य में प्रणव मायाबीज, साधक का नाम एवं सुपुत्रं उत्पादय लिख कर विधिवत् यन्त्र को धारण करे। इस यन्त्र के धारण करने से हे देवि! सभी प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त होती है; इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। इसका पूजन पहले ही कहा जा चुका है। देवी का पूजन काली मन्त्र से करना चाहिये।।१६-२१।।

वशीकरणम्

वशीकरणयन्त्रन्तु शृणु मत्प्राणवल्लभे!
यस्य धारणमात्रेण वशीकुर्यात् पुनः प्रिये ।।२२।।
चतुर्वृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः ।
ॐ शत्रुमुखं बन्धयेति प्रतिपद्मदलं लिखेत् ।।२३।।
यस्य नामाभिसंलिख्य बाहौ सन्धारयेच्छिवे ।
पूर्ववत्पूजयेद्देवीं जपेल्लक्षं विधानतः ।।२४।।

चामुण्डोक्तविधानेन पूजयेद्देवि साधकः ।
हुत्वा चैव विधानेन स वशी भवति ध्रुवम् ।।२५।।

हे प्राणवल्लभे! अब वशीकरण यन्त्र का श्रवण करो। जिसके धारणमात्र से ही वशीकरण हो जाता है। चार वृत्त लिखकर आठ कमलदल लिखे। **ॐ शत्रुमुखं बन्धय** इस मन्त्र को प्रति कमल दल में लिखे। हे देवि! जिस किसी व्यक्ति का भी नाम लिखकर भुजा में धारण तथा पूर्वोक्त पूजन एवं एक लाख जप करके चामुण्डा विधान के अनुसार पूजन कर हवन करने से निश्चित रूप से उस व्यक्ति का वशीकरण हो जाता है॥२२-२५॥

बन्धमुक्तियन्त्रम्

प्रथमन्तु लिखेद्वृत्तं तद्बहिस्तु स्वरांल्लिखेत् ।
बहिर्बुभूद्वयं लिख्य चतुर्दिक्षु च ह्रीं लिखेत् ।।२६।।
वृत्तयुग्माष्टपत्रञ्च लिखेद्गोरोचनादिना ।
ग्रीवायां कण्ठदेशे वा शिखायां वापि धारणात् ।।२७।।
बन्धमुक्तिर्भवेत्तस्य नवमे दिवसे तथा ।
पूर्वोक्तविधिना लक्षं दुर्गामन्त्रं जपेद्बुधः ।।२८।।

सर्वप्रथम वृत्त लिखे, तत्पश्चात् उस वृत्त के बाहरी भाग में स्वरों को लिखे। बाहरी भाग में दो **बुभू** लिखे एवं चारो दिशाओं में **ह्रीं** लिखे। दो वृत्त एवं अष्टदल गोरोचनादि से लिखे। इसे ग्रीवा, कण्ठ तथा शिखा में धारण करने से नवें दिन बन्धन से मुक्ति प्राप्त होती है। पूर्वोक्त विधान के अनुसार पूजन तथा दुर्गा का एक लाख मन्त्र जप करना चाहिये॥२६-२८॥

डाकिन्यादिभयविनाशनयन्त्रं जीववत्सायन्त्रञ्च

वृत्तयुग्मं लिखेत्तत्र महाबीजचतुष्टयम् ।
चतुष्कोणद्वयं बाह्ये लिखित्वा धारयेद्यदि ।।२९।।
नाशयेत्क्षणमात्रेण डाकिन्यादिभवं भयम् ।
मृतवत्सा यदि भवेन्नारी दुःखपरायणा ।
धारयेत् परमं यन्त्रं जीववत्सा ततो भवेत् ।।३०।।

वृत्तयुग्म लिखकर चारो कोणों में चार महाबीज अंकित कर धारण करे तो उसी क्षण डाकिनी आदि का भय दूर हो जाता है। यदि इसे मृतवत्सा धारण

करे तो वह भी जीविवत्सा हो जाती है॥२९-३०॥

दीर्घरेखाद्वयं दत्त्वा तद्गात्रेऽष्टदलं लिखेत् ।
ॐ ह्रीं देवदत्त ह्रीं रेखामध्ये लिखेच्छिवे ।।३१।।
रेखागात्रदले ॐ हूँ रेखाद्यन्तदले च ॐ ।
गोरोचनाकुंकुमेन तथैवालक्तकेन वा ।।३२।।
यस्य नाम तु संलिख्य स्थापयेत्परमेश्वरि ।
पञ्चामृतेषु देवेशि जीववत्सा भवेद्धि सा ।।३३।।
तत्सुतस्याकालमृत्युर्नान्यथा जायते प्रिये ।
उक्तरूपे तथा पूजां लक्षमन्त्रं जपेच्छिवे ।।३४।।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे विंशतितमः पटलः।।२०।।

दो दीर्घ रेखायें लिखकर उनमें अष्टदल कमल निर्मित कर रेखाओं के मध्य में **ॐ ह्रीं देवदत्त ह्रीं ॐ** इस मन्त्र को लिखे। रेखा के गात्रदल में **ॐ हूं**, रेखा के आद्य व अन्त दल में **ॐ** इन बीजों को लिखे। हे परमेश्वरी! गोरोचन, कुङ्कुम और लाख के द्वारा साध्यासाध्य का नाम लिखकर पञ्चामृत से स्नान कराये। हे देवेशि! इससे नारी अवश्य ही जीवितवत्सा होती है। हे प्रिय! इस यन्त्र को धारण करने वाली स्त्री का पुत्र कभी भी अकाल में कालकवलित नहीं होता। हे शिवे! पूर्वोक्त रूप से पूजन तथा मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये॥३१-३४॥

क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकरसंवादात्मक
बीसवाँ पटल पूर्ण हुआ ।।२०।।

+++

अथैकविंशतितमः पटलः

विजयानुपानम्

दुग्धयोगेन विजया महातेजस्करी स्मृता ।
क्षुद्बोधबलकारित्वाच्चक्षुर्दोषापहारिणी ॥१॥
जलयोगेन सा हन्ति ह्यजीर्णादिगदान्क्षणात् ।
घृतेन मेधाजननी वाग्देवी वशकारिणी ॥२॥
कफदोषानशेषांस्तु मधुना सह नाशयेत् ।
सैन्धवेन युता सा हि जठराग्निं विवर्द्धयेत् ॥३॥
सितया लवणेनापि गुडेन सह सेविता ।
अम्लपित्तं तथा शूलं विनाशयति तत्क्षणात् ॥४॥
फलपुष्टिप्रदा प्रोक्ता मधुरस्वरकारिणी ।
कैवल्यज्ञानदा चेत्थं सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥५॥

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे शिवगौरीसंवादे
एकविंशतितमः पटलः ॥२१॥

दुग्ध के साथ विजया (भांग) का सेवन महातेजस्करी कहा गया है; इससे तेज की वृद्धि होती है एवं नेत्र आदि का दोष दूर हो जाता है। यदि विजया का सेवन जल में पीस-छान कर किया जाय तो अजीर्ण दूर हो जाता है। घृत के योग से विजया का सेवन वाक् वृद्धि करता है एवं वाक्चातुर्य प्रदान करता है। मधुयोग से विजया का सेवन समस्त कफादि दोषों का नाश करता है। सेंधा नमक के साथ विजया का सेवन करने से जठराग्नि की वृद्धि होती है। श्वेत नमक तथा गुड़ के साथ सेवन करने से शूल एवं अम्ल पित्त का तत्काल विनाश होता है। इसके सेवन से बल एवं पुष्टि की प्राप्ति होती है। यह मधुर स्वरकारक, कैवल्य ज्ञानदायक एवं सर्वसिद्धि-प्रदायक है॥१-५॥

**क्रियोड्डीश महातन्त्रराज में गौरी-शंकरसंवादात्मक
इक्कीसवाँ पटल पूर्ण हुआ ॥२१॥**

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः॥

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

फोन : ३३३...

अपरञ्च पुस्तक-प्राप्तिस्थानम्

(सहयोगी संस्था)

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर (मैदागिन) के पास
पो. बा. नं. १००८, वाराणसी-२२१ ००१ (भारत)
E-mail : cssoffice@satyam.net.in

ISBN : 81-218-0095-1 Price Rs. 40.00

महत्त्वपूर्ण प्रकाशन